विक्रम पंचांग

विक्रमादित्य

“ उज्जयिनी के सार्वभौम सम्राट विक्रमादित्य अपने आकर्षक और प्रभावशाली व्यक्तित्व और स्वीकार्य कृतित्व के कारण सतत लोकप्रिय तथा भारतीय अस्मिता के उज्ज्वल प्रतीक रहे। वे शकारि तथा साहसांक थे। वे शक विजेता, सम्वत् प्रवर्तक, वीर, दानी, न्यायप्रिय, प्रजावत्सल, स्तत्व सम्पन्न थे। वे साहित्य, संस्कृति तथा विज्ञान के उत्प्रेरक रहे। उनकी सभा कालिदास, वराहमिहिर, वेतालभट्ट, अमरसिंह, घटखर्पर, धन्वन्तरि, वररुचि, शंकु, क्षपणक आदि नवरत्नों से उज्ज्वल थी। अपने गुणगौरव के कारण उनका नाम परवर्ती अनेक राजाओं की उपाधि बनता रहा। भारत के इतिहास में रामराज्य के बाद विक्रमादित्य के सुशासन का ही स्मरण किया जाता रहा। भारतीय सांस्कृतिक प्रभामंडल का वे आदर्श प्रतीक और लोकमान्य हैं। ”

विक्रम सम्वत्

सम्वत्सर, सम्वत् आदि वर्ष गणना के बोधक शब्द हैं। वर्ष गणना कालगणना का सुगम माध्यम है। गतिशील समय की गणना जनसुविधा के लिए की जाती है।

भर्तृहरि के अनुसार दिक् और काल अनन्त है, पूर्ण है। उस पूर्ण में से लोकसुविधा के लिए गणनाक्रम तैयार किये गये। सूर्योदय से सूर्योदय के एक अहोरात्र का एक दिन सुगम सुलभ उपाय है। विपल, पल, घटी, मुहूर्त, अहोरात्र, सप्ताह, पक्ष, मास, ऋतु, अयन (उत्तरायण-दक्षिणायन), वर्ष। फिर शताब्द, सहस्राब्द, युग, मन्वन्तर, कल्प इत्यादि कालगणना के माप हैं। उस अनन्तकाल में से अपेक्षित समय की गणना के माप के विभिन्न मानदंड अपनाये जाते रहे। वे वर्षगणना रूप में विख्यात हैं। इनका आधार स्थिर नक्षत्रों पर गतिशील ग्रहों की राशिगत गतिगणना है। चन्द्र, सूर्य, बृहस्पति आदि अनुसार गणना आज भी प्रचलित है। तद्नुसार चान्द्र वर्ष, बार्हस्पत्य वर्ष, सौर वर्ष आदि होते हैं। उनमें से सूर्य आधारित गणना बहुमान्य है। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा प्रायः 365 दिन 6 घंटे में करती है। अतः वह एक वर्ष की अवधि का समय है। भारतीय परंपरा में 360 दिन के अंशों में वह अवधि समाहित हो जाती है। चन्द्र गणना में 354 दिन का वर्ष होता है।

कालबोधक सम्वत् युग के नाम से, व्यक्ति के नाम से वंश के नाम से प्रचलित होते रहे। पुराणों तथा ज्योतिष परंपरा में कलियुग के आरंभ के सूचक कलिसम्वत् की गणना प्राप्त होती है। युधिष्ठिर सम्वत् नाम भी पाया जाता है। कलिसम्वत् 3044 में विक्रम सम्वत् का आरंभ हुआ। यह ईसा से 57 वर्ष पूर्व का समय है। विक्रमादित्य या विक्रम सम्वत् को शकारि, मालव अथवा साहसांक सम्वत् भी कहा जाता है।

विक्रम सम्वत् नाम उज्जयिनी के सुप्रसिद्ध लोकप्रिय राजा विक्रमादित्य के नाम से प्रसिद्ध है। दुर्जेय विदेशी शकों पर विक्रमादित्य ने अपूर्व विजय प्राप्त की थी। अतः उस विजय की स्मृति में जिस सम्वत् का आरंभ किया गया उसे ही विक्रम सम्वत् नाम से पुकारा जाता है। शकविजय के कारण विक्रमादित्य को शकारि भी कहते हैं। प्राचीन काल में इसे कृत या मालव सम्वत् भी कहते थे। सिक्कों तथा मुद्राओं पर उज्जयिनी के विक्रम राजा का एक नाम कृत भी अंकित है। शिलालेखों में कृत सम्वत् के उल्लेख पाये जाते हैं। एक शिलालेख में कृत सम्वत् को मालवगण स्थापना से भी जोड़ा गया है। गणनानुसार कृत सम्वत् या मालव सम्वत् विक्रम सम्वत् के अनुरूप है।

उज्जैन के निकट चकरावदा ग्राम में शिव जलाधारी पर विक्रम सम्वत् आठ अंकित है। अतः आरंभ से ही इस सम्वत् को विक्रम सम्वत् नाम से पुकारा जाता था और वैसा ही विक्रम सम्वत् नाम प्रयुक्त होने लगा था। उस नाम का प्रचुर प्रयोग प्राचीन पुस्तकों, शिलालेखों, सिक्कों पर होता रहा। शकारि सम्वत् या साहसांक सम्वत् भी विक्रम सम्वत् के बोधक हैं। केवल सम्वत् शब्द भी विक्रम सम्वत् का बोधक होता आ रहा है।

विक्रम सम्वत् का आरंभ उत्तर में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से और दक्षिण भारत में कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से गिना जाता है। विक्रम सम्वत् भारतीय पारंपरिक गणना में बहुमान्य है। भारत, नेपाल, मारीशस आदि देशों की जनता की दैनिक गतिविधि में यह सम्वत् सुप्रचलित है।

यह लोकमान्य सम्वत् भारत की विदेशी शकों पर अप्रतिम विजय का स्मरण होने से भारत के आत्मगौरव तथा भारतीय अस्मिता का बोधक प्रतीक है।

विक्रम पंचांग

परामर्श - उषा ठाकुर मंत्री संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, मध्यप्रदेश
डॉ. मोहन यादव, मंत्री उच्च शिक्षा, मध्यप्रदेश
सम्पादक - श्रीराम तिवारी
सहयोग - पं. चंदन श्यामनारायण व्यास
राजेश्वर त्रिवेदी
चित्रांकन - लक्ष्मीनारायण भावसार (भोपाल), मानस जेना (भुवनेश्वर), दीप्तिश घोष दस्तीदार (कोलकाता), जान डगलस (मुंबई), मनोज साकले (मुंबई), रामचन्द्र खरतमल (पुणे), निखिल खत्री (सीहोर), सुनील विश्वकर्मा (वाराणसी), हरिकांत दुबे (भोपाल), विनय सप्रे (भोपाल)

स्वत्वाधिकार - प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण - विक्रम सम्वत् 2079
ईस्वी 2022

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ
स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग
मध्यप्रदेश शासन का प्रकाशन

मूल्य - 50 रूपये

विक्रम पंचांग

विविध सम्वत्सर

देश में चर्चित, प्रचलित और अब विस्मृत हो चले विविध सम्वत्सर विक्रम सम्वत् की शुरुआत लगभग ईसा पूर्व 57 वर्ष पहले चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि से की गयी थी। ईस्वी सन् और विक्रम सम्वत् में 57 वर्षों का अंतर है। इस हिसाब से ईस्वी सन् 2022 में विक्रम सम्वत् 2079 चल रहा है। वैसे भारत में 36 तरह के प्राचीन कैलेंडर वर्ष की चर्चा की जाती रही है। हालाँकि, इनमें से अधिकांश अब प्रचलन से बाहर हैं। दुनियाभर में कई देशों के जो अपने कैलेंडर हैं उनमें नये वर्ष की शुरुआत जनवरी से अप्रैल के मध्य होती है। हमारे यहाँ फिलहाल विक्रम सम्वत्, ईस्वी सन्, हिजरी सन् आदि प्रचलित हैं।

विक्रम सम्वत् अत्यंत प्राचीन सम्वत् है। भारत के सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से सर्वाधिक लोकप्रिय लोकमान्य राष्ट्रीय सम्वत् विक्रम सम्वत् ही है।

1. सप्तर्षि सम्वत्
सात तारों की गति के साथ इसका सम्बन्ध माना जाता है।

2. कृष्ण सम्वत् (3179 वि.पू., 3236 ई.पू.)

3. कलियुग सम्वत् (3045 वि.पू., 3102 ई.पू.)
इसका प्रयोग धार्मिक तिथियों के लिए इस्तेमाल वर्षों पूर्व किया गया था।

4. युधिष्ठिर सम्वत् (2391 वि.पू., 2448 ई.पू.)

5. बुद्ध निर्वाण सम्वत् (430 वि.पू., 487 ई.पू.)
गौतम बुद्ध के निर्वाण वर्ष से इस सम्वत् का आरंभ हुआ था।

6.वीर निर्वाण सम्वत् (370 वि.पू., 527 ई.पू.)
अंतिम जैन तीर्थंकर महावीर के निर्वाण वर्ष विक्रम सम्वत् में 470 एवं ई.पू. 527 से इसका आरंभ माना जाता है।

7. मौर्य सम्वत् (263 वि.पू., 320 ई.पू.)
चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी। इसके साथ ही उसने मौर्य सम्वत् को आरंभ किया था।

8.सेल्यूसिडियन सम्वत् (255 वि.पू., 312 ई.पू.)
सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस ने जब पश्चिमी एशिया का साम्राज्य प्राप्त किया तब अपने नाम का सम्वत् चलाया था।

9. लौकिक सम्वत् (32 विक्रम सम्वत्, 25 ई.पू.)

10. विक्रम सम्वत् (57 ई.पू.)
इसकी शुरुआत उज्जैन के लोकप्रिय सम्राट विक्रमादित्य ने शकों पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में की थी। इसको मालव सम्वत् भी कहते हैं। मालवराज विक्रमादित्य ने शकों को परास्त कर अपने नाम का सम्वत् चलाया, यह चैत्र शुक्ल 1 से आरंभ होता है।

11. ईस्वी सन्
ईसा मसीह के जन्म वर्ष से इस का आरंभ माना जाता है। ई.स. 527 को रोम निवासी पादरी डायोनिसियस ने गणना कर रोम नगर की स्थापना से 795 वर्ष बाद ईसा मसीह का जन्म होना निश्चित किया था। 1000 ईस्वी तक जाकर यूरोप सहित विश्व के अनेक देशों में इसका प्रचलन शुरू हुआ।

12. शक सम्वत् (135 विक्रम सम्वत्, 78 ई.)
इसकी शुरुआत शकों द्वारा विक्रमादित्य के शासन के 137 वर्ष बाद उज्जैन पर पुनः विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में की गयी थी।

13. कलचुरि सम्वत् (305 विक्रम सम्वत्, 248 ई.)
इसको चेदि सम्वत् और त्रैकुटक सम्वत् भी कहते हैं। इसको त्रैकुटक नामक एक राजवंश द्वारा आरंभ किया गया था।

14. गुप्त सम्वत् (377 विक्रम सम्वत्, 320 ई.)
इसकी शुरुआत चन्द्रगुप्त प्रथम ने की थी। इसको गुप्त काल या गुप्त वर्ष भी कहा जाता है।

15. शाहूर सन् तुगलक द्वारा चलाया गए यह सन् हिजरी सन् का संशोधित रूप है। चंद्र मास के बदले सौर मास के अनुसार माना गया है। इसमें 650 जोड़ने पर विक्रम सम्वत् बनता है। मराठी पंचांग में यह अभी भी मिलता है।

16. बंगाल सन्
इसे 'बंगाब्द' भी कहते हैं। इसका आरंभ वैशाख से होता है। इसमें 651 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है। बंगाल के अनेक भागों में कभी यह व्यापक रूप से प्रचलित था।

17. गांगेय सम्वत्
यह सम्वत् कलिंगनगर (तमिलनाडु) के गंगा वंशी राजा द्वारा चलाया हुआ सम्वत् माना जाता है। दक्षिण भारत में अनेक स्थानों पर इसका उल्लेख मिलता है। 633 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है।

18. हर्ष सम्वत् (663 विक्रम सम्वत्, 606 ई.)
इसकी शुरुआत कन्नौज के शासक हर्षवर्धन ने की थी और हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद एक सदी तक यह उत्तर भारत में चलन में था।

19. हिजरी सन्
इस्लामिक कैलेंडर के हिसाब से (679 विक्रम सम्वत्) 622 ईस्वी सन् से इसका आरंभ माना जाता है। यह चंद्र वर्ष है, चाँद देखकर इसका आरंभ किया जाता है। इसकी तारीख एक शाम से दूसरी शाम तक चलती है।

20. भट्टिक सम्वत्
यह सम्वत् जैसलमेर के राजा भट्टीक (भाटी) द्वारा शुरू किया गया था। इसमें 680 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है।

विक्रम
पंचांग

विविध सम्वत्सर

21. कोल्लम सम्वत्
केरल मालाबार के लोग इसे परशुराम सम्वत् भी कहते हैं। तमिल में इसे कोल्लम और संस्कृत में कोलंब सम्वत् कहा गया है। 881 जोड़ने पर विक्रम सम्वत् बनता है।

22. नेवार (नेपाल) सम्वत्
नेपाल के राजा जयदेव मल्ली ने इस सम्वत् को आरंभ किया था। इसमें 936 जोड़ने पर विक्रम सम्वत् बनता है।

23. यहूदी सन्
इजराइल और विश्वम के यहूदी इसका प्रयोग करते है।

24. फसली सन्
अकबर ने टोडरमल के परामर्श से लगान वसूली के लिए हिजरी सन् 971 (1506 विक्रम सम्वत्) में चलाया था। यह भी हिजरी सन् का संशोधित रूप ही था। क्योंकि इसके महीने सौर मास के अनुसार चलते थे।

25. इलाही सन्
अकबर ने बीरबल के सहयोग दीन-ए-इलाही के साथ इस सन् को हिजरी सन् 992 (विक्रम सम्वत् 1527 एवं 1584 ई.) में चलाया। इसमें 1 महीना 32 दिनों का होता था। बाद में शाहजहाँ ने इसे समाप्त कर दिया।

26. चालुक्य विक्रम सम्वत्
दक्षिण के चालुक्य राजा विक्रमादित्य (छठे) ने शक सम्वत् के स्थान पर चालुक्य विक्रम सम्वत् चलाया। इसको चालुक्य 'विक्रम का काल' वह 'विक्रम वर्ष' भी कहा जाता है। इसमें 1132 जोड़ने पर विक्रम सम्वत् बनता है।

27. सिंह सम्वत्
इस सम्वत् की शुरुआत काठियावाड़ के गोहिल शासकों ने की थी। इस सम्वत् को शिवसिंह सम्वत् के नाम से भी जाना जाता था। इसमें 1170 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है।

28. लक्ष्मणसेन सम्वत्
बंगाल के सेनवंशी राजा लक्ष्मण सेन के राज्याभिषेक से इसका आरंभ हुआ। इसका प्रचलन बंगाल बिहार और उड़ीसा में था। इसमें 1175 जोड़ने से विक्रम सम्वत् बनता है।

29. पुडेचैप्पू सम्वत्
यह से (1398 विक्रम सम्वत्) 1341 में केरल के कोच्चि के पास एक टापू की स्मृति में चलाया गया था। इसका प्रचलन कोचीन राज्य के आसपास तक ही रहा।

30. राज्याभिषेक सम्वत् (विक्रम सम्वत् 1731, ईस्वी 1674)
ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ था, जिसे आनंदनाम सम्वत् का नाम दिया गया। महाराष्ट्र में रायगढ़ किले में एक भव्य समारोह में शिवाजी पूर्णरूप से छत्रपति अर्थात् एक प्रखर हिन्दू सम्राट के रूप में स्थापित हुए।

विक्रम पचांग
Dr. Jagdish Gupta

विक्रम पंचांग

विक्रम पंचांग के प्रकाशन व 'नव सम्वत्सर' के इस अभूतपूर्व अवसर पर भारतीय प्राचीन विज्ञान ऋषियों की गौरवशाली परंपरा को जानने के इस प्रयास में हम पाते हैं कि पश्चिम सहित पूरी दुनिया आज तक जिन वैज्ञानिक अन्वेषणों व आविष्कारों को अपने द्वारा अन्वेषित करने का दावा करती रही है, वह दरअसल सदियों पहले प्राचीन भारतीय ऋषि-मुनियों के तप का अन्वेषण है। यह वही ज्ञान परंपरा है जिसने कालांतर में आधुनिक विज्ञान के लिए नयी राह प्रशस्त की। पश्चिम परस्त आधुनिक इतिहासकारों ने हमेशा ही इसको प्रश्नांकित किया तथा इसके अस्तित्व को नकारा, आधुनिक इतिहासकार विशेष रूप से वे वैदिक युग को चिन्हित करने में लगभग असफल रहे हैं। भौतिक, रसायन, वनस्पति, चिकित्सा, गणित, खगोल, ज्योतिष, ऊर्जा, संचार, दर्शन व योग सहित अनेक अनेक क्षेत्रों में वैदिक युगीन ऋषियों ने जो अन्वेषित किया था उसको दुनिया के आधुनिक विज्ञान समाज ने आज स्वीकार करना आरंभ किया है।

विश्व की सबसे प्राचीन भारतीय सनातन परंपरा को जिन ऋषि, महर्षि, आचार्य व असंख्य मेधावान महापुरुषों ने अपनी साधना, तप, ध्यान व उससे अर्जित ज्ञान से पल्लवित किया वह अद्वितीय है। सनातन की यह शाश्वत परंपरा जिसका न कोई आदि है और न अन्त तथा इसमें शामिल ज्ञान की अविचल धारा ने उत्तरोत्तर संपूर्ण विश्व को नयी दिशाएँ प्रदान की हैं। जैसा कि विदित है ज्ञान को भारत में प्राचीन समय से ही सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है, प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक समय तक ऐसे असंख्य क्षेत्र हैं जिनमें इसी भारतीय ज्ञान परंपरा से कई नवीन प्रतिमान स्थापित हुए हैं।

भारत के विषय में लिखित साक्ष्य ऋग्वैदिक काल से मिलता है और ऋग्वेद इस संदर्भ में प्रथम ग्रंथ है। ऋग्वेद विश्व की प्राचीनतम पुस्तक है जो प्राचीन भारतीय आर्यों की राजनीतिक व्यवस्था के साथ ही उनके ज्ञान-विज्ञान, दर्शन, धर्म, कला एवं साहित्यिक उपलब्धियों का एकमात्र महत्वपूर्ण स्रोत है। भौतिक जगत को समझने की चेष्टा सर्वप्रथम प्राचीन आर्यों ने ही आरंभ की थी। ऋग्वेद ग्रंथ के 'विश्वकर्मा सूक्त' में इस प्रकार के प्रश्न उठाये गये है कि 'सृष्टि का अधिष्ठान क्या है? इसका आरंभ कैसे हुआ? किस पदार्थ से यह जगत बना? इसका रचयिता कौन है?' इन प्रश्नों में से कुछ का उत्तर तो अभी आधुनिक भौतिकी को भी देना बाकी है। इसी प्रकार ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में भी इस बात का संकेत किया गया है कि सृष्टि के आरंभ में गहन अथाह जल था और आधुनिक विज्ञान का भी इस विषय में यही मानना है। वैदिक काल के ऋषियों ने अनेक शास्त्रों, विज्ञानों एवं वेदांगों की नींव डाली थी। भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने अपने समय से बहुत आगे की कल्पनाओं और विचारों को साकार किया है। उन्होंने हजारों साल पहले ही प्रकृति से जुड़े कई रहस्य उजागर करने के साथ कई आविष्कार किये और युक्तियाँ बतायीं। उनके इसी विलक्षण ज्ञान के आगे आधुनिक विज्ञान भी नतमस्तक होता है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित वैज्ञानिक सूत्र बहुत ही सहज और सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। उस काल में जहाँ जन सामान्य के जीवन को बेहतर बनाने के लिए शास्त्र लिखे गये तो विज्ञान और गणित के गूढ़तम रहस्यों के जवाब देने के लिए भी शास्त्र लिखे गये। आधुनिक भारतीय जनसमाज के मन मस्तिष्क में कहीं ना कहीं यह बात मौजूद है कि बहुतायत में वैज्ञानिक आविष्कार पश्चिमी देशों की देन है उनके लिए यह जानना आवश्यक है कि पश्चिम के अधिकांश वैज्ञानिकों तथा आविष्कारकों ने भारतीय वैदिक विज्ञान की महत्ता को स्वीकार किया है। पश्चिम के राइट बंधुओं से हजारों वर्ष पूर्व महर्षि भारद्वाज ने विमान की कल्पना करते हुए वैमानिकी शास्त्र रचा जो आज के संदर्भों में भी सामयिक है। 'पुष्पक' तथा अन्य विमानों के रामायण में वर्णन कोई कोरी कल्पना नहीं है। ताजा वैज्ञानिक अनुसंधान ने भी तय किया है कि रामायण काल में विमान की प्रौद्योगिकी इतनी विकसित थी जिसे आज समझ पाना भी कठिन है। मय विश्वकर्मा ने ब्रह्मा से वैमानिकी विद्या सीखी और पुष्पक विमान बनाया। पुष्पक विमान की पद्धति का विस्तृत ब्यौरा महर्षि भारद्वाज लिखित पुस्तक यंत्र सर्वस्व में भी किया गया है। इस पुस्तक के 40 अध्याय में से एक अध्याय वैमानिकी शास्त्र अभी भी उपलब्ध है। इसमें 25 तरह के विमानों का विवरण है। इस पुस्तक में वर्णित कुछ शब्द जैसे विश्व क्रिया दर्पण आज के रडार जैसे यंत्रों की कार्यप्रणाली का रूपक है।

आधुनिक विज्ञान में जॉन डाल्टन के परमाणुवाद का योगदान माना जाता है। परंतु भारत के महर्षि कणाद ने डाल्टन से दो हज़ार वर्ष पूर्व ही परमाणुवाद प्रतिष्ठित कर चुके थे। भागवत पुराण में भी परमाणु की सही-सही परिभाषा दी गयी है। पुराणों में जल में अग्नि का वास होने का उल्लेख है। इससे जल से ऊर्जा प्राप्त होने ही का आशय नहीं बल्कि वरुण (जल) के यौगिक होने का भी संदेश मिलता है। आधुनिक भाषा में जल को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का यौगिक माना जाता है। पुराण की भाषा में जल पृथ्वी तत्व हाइड्रोजन और अग्नि तत्व ऑक्सीजन का यौगिक है। न्यूटन से कई सदियों पहले भारत के खगोल विज्ञानी भास्कराचार्य ने यह प्रतिपादित कर दिया था कि पृथ्वी आकाशी पदार्थों को एक विशेष शक्ति से अपनी तरफ आकर्षित करती है। उन्होंने ही गणितीय गणना में शून्य को प्रतिपादित किया था। पश्चिमी खगोल विज्ञानी कॉपरनिकस से हजार वर्ष पूर्व भारतीय खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने पृथ्वी की आकृति व इसकी अपनी धुरी पर घूमने की पुष्टि कर दी थी। वैदिक युग में सुश्रुत जैसे ऋषि चिकित्सक सफल शल्य चिकित्सा करते थे और आधुनिक विज्ञान ने इसको कुछ सदी पहले ही पुनः आविष्कृत किया। गणित विज्ञान, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, उर्जा एवं पृथ्वी के जीवन सम्बन्धी ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिससे सिद्ध होता है कि सनातन वैदिक ज्ञान कितना विकसित था, जिसके मूल का उपयोग कर आज के आधुनिक विज्ञान के नाम पर पश्चिमी देशों द्वारा वैश्विक स्तर पर फैलाया गया है। हमारे ऋषि-मुनियों ने ध्यान और मोक्ष की गहरी अवस्था में ब्रह्म, ब्रह्मांड और आत्मा के रहस्य को जानकर उसे स्पष्ट तौर पर व्यक्त किया था। प्राचीन भारत में विज्ञान सहित अनेक विषयों पर अनेक शोध हुए हमारे शास्त्रों के उल्लेख से स्पष्ट प्रतीत होता है कि भारतीय ऋषि-मुनि महान वैज्ञानिक व शोधकर्ता थे। वेद, उपनिषद, भागवत, गीता आदि ग्रंथों के अनेक सूत्र से आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोग प्रेरित होते रहे हैं। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा को निष्पक्ष ढंग से देखने पर यह ज्ञात होता कि भारत विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में अति उन्नत था। विज्ञान का विकास भारत में वैदिक काल से ही प्रारंभ हो जाता है। वेदों में गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद व कृषि सहित अनेक विज्ञानों के विकसित होने के प्रमाण उपलब्ध हैं। वैदिक सभ्यता यज्ञ प्रधान रही है । विभिन्न उद्देश्यों से लौकिक एवं पारलौकिक अभ्युत्थान हेतु अनेक प्रकार के यज्ञ नियमित रूप से होते रहते थे।

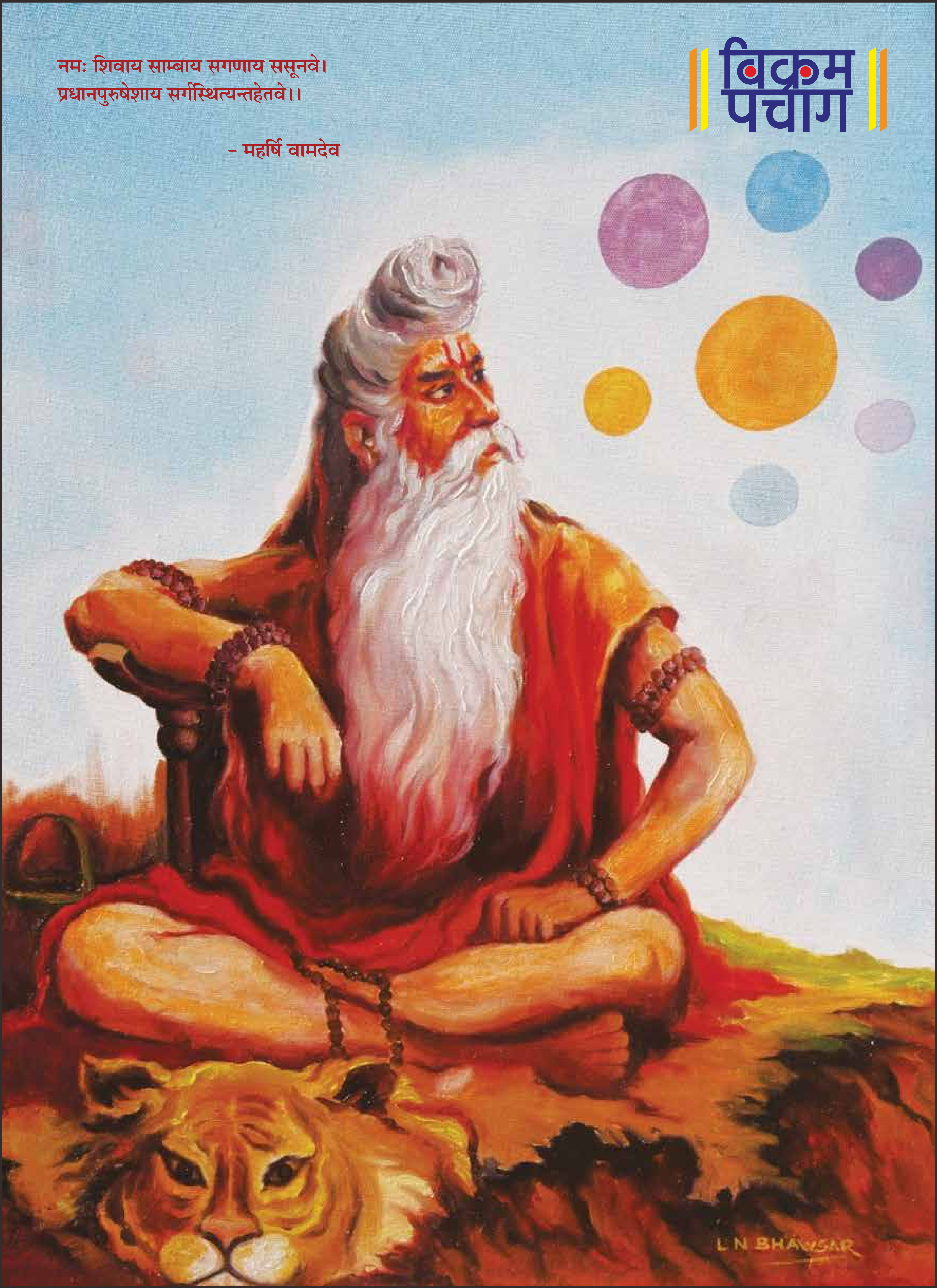
विक्रम पंचांग
नमः शिवाय साम्बाय सगणाय ससूनवे।
प्रधानपुरुषेशाय सर्गस्थित्यन्तहेतवे।।
– महर्षि वामदेव
L N BHAWSAR

इसके विशिष्ट प्रकार की ज्यामितीय आकार की वेदिकाएँ बनती थीं। यज्ञों के लिए मुहूर्त निश्चित होते थे। यज्ञों की सुव्यवस्था एवं सफल संपादन के लिए गणित, ज्यामिति और ज्योतिष तथा खगोल विज्ञान विकसित हुए। गणित विशेषतः उसकी दार्शनिक अंक प्रणाली और शून्य का आविष्कार विश्व को भारत की सबसे महत्वपूर्ण देन स्वीकार की जाती है। वास्तव में वैदिक युग को ज्ञान-विज्ञान की अनेक शाखाओं को विकसित करने का श्रेय है।

वैदिक ऋषि होने अपने तपोवन में विज्ञान के विविध रूपों का अनुसंधान किया था। उन्होंने प्रकृति पदार्थ के रहस्यों को वैज्ञानिक ढंग से प्रकट किया। वैज्ञानिक अनुसंधान ही उनकी रीत-नीति आधुनिक विज्ञान की संकीर्ण सीमाओं में ना बंधते हुए भी उच्चस्तरीय, आकर्षक व सम्मोहक है। वैदिक ऋषियों के विज्ञान की विविध धाराएँ आयुर्वेद भौतिक गणित रसायन वनस्पति जीव व भूगर्भ विज्ञान तथा कृषि व शिल्प आदि के रूप में प्रकट हुई है।

भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परंपरा में विक्रम स6वत् पंचांग रचना का दिन माना जाता है। महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने इसी दिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीना और वर्ष की गणना कर पंचांग की रचना की थी। विक्रम स6वत् संपूर्ण धरा की प्रकृति, खगोल सिद्धांतों और ग्रह-नक्षत्रों से जुड़ा है। इसका उल्लेख हमारे ग्रन्थों में भी है। इसके कई वैज्ञानिक आधार और पूरे विश्व के मानने हेतु तर्क भी हैं। सम्राट विक्रमादित्य के काल में ज्ञान की यही परंपरा उत्तरोत्तर अग्रसर होती रही।

आज से 3000 वर्ष पूर्व भारतीय संस्कृति का जो रूप था आज भी वह मूलतः वैसा ही है। दुनिया में अनेक सभ्यताओं ने जन्म लिया किंतु काल ने उन्हें ध्वस्त कर दिया। केवल भारत ही एक ऐसा देश है जिसका अतीत कभी मरा नहीं। वह बराबर वर्तमान के रथ पर चढ़कर भविष्य की तरफ अग्रसर रहा। भारत का अतीत कल भी जीवित था वह आज भी जीवित है और आगे भी रहेगा।

विक्रमकालीन ग्रंथों के अध्ययन से हम उस समय के हिंदू मस्तिष्क का अनुमान लगा सकते हैं जिसने हिंदू धर्म को नव जीवन प्रदान किया। एक से बढ़कर एक विद्वान हुए जिन्होंने ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में खोज करके जिस साहित्य की सृष्टि की वह आज भी प्रशंसनीय है तथा आज के विद्वान भी उससे सहायता प्राप्त करते हैं। विक्रमादित्य के काल में ज्ञान, विज्ञान, कला एवं साहित्य में जो पथ प्रशस्त हुआ वह अभूतपूर्व था।

नर-रूप-रत्नों से सजी थी वीर विक्रम को समा,
अब भी जगत् में जागती है जगमगी जिनकी प्रभा।
जाकर सुनो, उज्जैन मानों आज भी यह कह रही-
मैं मिट गई, पर कीर्ति मेरी तब मिटेगी: जब मही।।

महर्षि वामदेव

महर्षि वामदेव ऋग्वेद के चतुर्थ मंडल के सूत्रद्रष्टा, गौतम ऋषि के पुत्र तथा जन्मत्रयी के तत्ववेत्ता हैं जिन्हें गर्भावस्था में ही अपने विगत दो जन्मों का ज्ञान हो गया था और उसी अवस्था में इंद्र के साथ तत्वज्ञान पर इसकी चर्चा हुई थी। वैदिक उल्लेखानुसार सामान्य मनुष्यों की भाँति जन्म न लेने की इच्छा से इन्होंने माता का उदर फाड़कर उत्पन्न होने का निश्चय किया। किंतु माता द्वारा अदिति का आवाहन करने और इंद्र से तत्वज्ञान चर्चा होने के कारण ये वैसा न कर सके। तब यह श्येन पक्षी के रूप में गर्भ से बाहर आये। एक बार इंद्र ने युद्ध के लिए वामदेव को ललकारा था तब इंद्रदेव परास्त हो गये। वामदेव ने देवताओं से कहा कि मुझे दस दुधारु गाय देना होगा और मेरे शत्रुओं को परास्त करना होगा तभी में इंद्र को मुक्त करूँगा। इंद्र और सभी देवता इस शर्त से कुतिप हो चले थे। वामदेव ने सामगान अर्थात् संगीत शास्त्र का ज्ञान दिया। सामवेद में संगीत और वाद्य यंत्रों की संपूर्ण जानकारी अंकित है। भरत मुनि द्वारा रचित भरतनाट्य शास्त्र सामवेद से ही प्रेरित है।

महर्षि वामदेव ब्रह्मज्ञानी तथा जाति स्मर महात्मा रहे हैं। गौतम के पुत्र वामदेव की गणना गोत्रकार ऋषियों में होती है। गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों के पृथक-पृथक ऋषि माने गये हैं, उनमें पाँचवें अक्षर के ऋषि वामदेव हैं। उन्होंने विशिष्ट मंत्रों का संकलन करके गायन की पद्धति विकसित की। आधुनिक विद्वान भी इस तथ्य को स्वीकार करने लगे हैं कि समस्त स्वर, ताल, लय, छंद, गति, मन्त्र, स्वर-चिकित्सा, राग नृत्य मुद्रा, भाव आदि सामवेद से ही निकले हैं। वामदेव को ऐसे वैज्ञानिक सत्यों का ज्ञान था जिनकी जानकारी आधुनिक वैज्ञानिकों को सहस्त्राब्दियों बाद प्राप्त हो सकी है। सामवेद में वर्णित ये कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनसे यह प्रमाणित होता है कि हमारे पूर्वजों को ऐसे ऐसे वैज्ञानिक तथ्यों का ज्ञान था जिनका आधुनिक विज्ञान को हजारों साल बाद भी अभी तक ठीक से ज्ञान नहीं है। साम गान के संदर्भ में वैदिक काल में कई वाद्य यंत्रों का उल्लेख मिलता है।

विक्रम पंचांग

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्यं ब्रह्म सनातनम।
दुदोह यज्ञसिध्यर्थमृगयु: समलक्षणम् ।।

– महर्षि अंगिरा

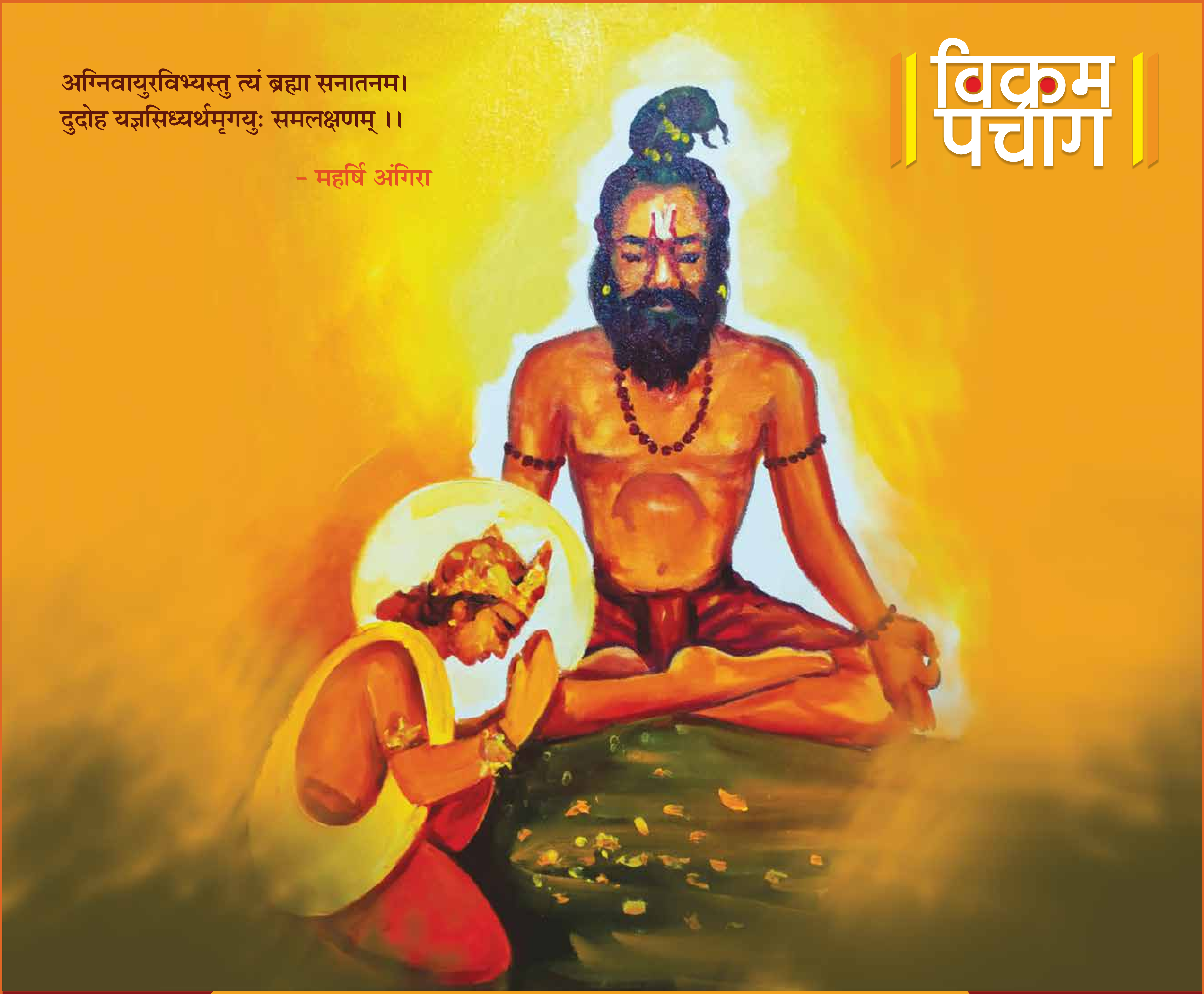

विक्रम सम्वत् 2079 ''राक्षस'' नाम सम्वत्सर

कलि सम्वत् 5123 • सृष्टि आरम्भ 1955885123

राजा – शनि • मंत्री – गुरू

चैत्र शुक्ल पक्ष — 02 अप्रैल से 16 अप्रैल 2022 तक

वैशाख कृष्ण पक्ष — 17 अप्रैल से 30 अप्रैल 2022 तक

चैत्र शुक्ल पक्ष			वार	वैशाख कृष्ण पक्ष	
	अश्वि १२/१९ **03 अप्रैल द्वितीया** सिंधारा दूज	पुष्य २७/५० **10 अप्रैल नवमी** श्री राम नवमी चैत्र नवरात्र पूर्ण श्री स्वामी नारायण जयंती	रविवार	चित्रा ०७/२९ **17 अप्रैल प्रतिपदा**	श्रवण २०/०० **24 अप्रैल अष्टमी**
	भरणी १३/२९ **04 अप्रैल तृतीया** मत्स्यजयंती, गणगौर तीजे गौरी मनोरथ तृतीया	श्लेषा ३०/०० **11 अप्रैल दशमी** धर्मराज दशमी, दशहरा म. जोतीराज फुले जयंती	सोमवार	स्व ०६/२९ विशा २९/१९ **18 अप्रैल द्वितीया**	धनिष्ठा १८/३९ **25 अप्रैल नवमी दशमी** पंचकोषी यात्रा प्रारम्भ (अवन्तिका)
	कृतिका १५/३९ **05 अप्रैल चतुर्थी** श्री विनायक चतुर्थी, दमनक चतुर्थी	मघा दिन/रात **12 अप्रैल एकादशी** कमदा एकदशी व्रत (लोंग)	मंगलवार	अनुराधा २८/०० **19 अप्रैल तृतीया**	शत १८/०० **26 अप्रैल एकादशी** श्री वल्लभाचार्य जयंती वरूथिनी एकादशी (खरबूजा)
	रोहिणी १८/०० **06 अप्रैल पंचमी** श्रीराम राज्य महोत्सव गुहराज निषाद जयंती	मघा ०७/०० **13 अप्रैल द्वादशी**	बुधवार	ज्योष्ठा २९/१९ **20 अप्रैल चतुर्थी** श्री संकष्टी चतुर्थी चन्द्रोदय ०९/४०	पू.भा. १७/३९ **27 अप्रैल द्वादशी** संत सेन जयंती
	मृगशिर २०/३९ **07 अप्रैल षष्ठी** स्कन्धषष्ठी विश्व स्वास्थ्य दिवस	पू.फा.०७/५० **14 अप्रैल त्रयोदशी** महावीर स्वामी जयंती डॉ. अम्बेडकर जयंती प्रदोष व्रत	गुरूवार	मूल २४/३९ **21 अप्रैल पंचमी** गुरू तेगबहादुर जयंती	उ.भा. १८/०४ **28 अप्रैल त्रयोदशी** प्रदोष व्रत
	आर्द्रा २३/०० **08 अप्रैल सप्तमी**	उफा ०८/१० **15 अप्रैल चतुर्दशी** श्री नृसिंह दोलोत्सव हटकेश्वर जयंती, शिव दमनक चतुर्दशी	शुक्रवार	पू.षा. २२/२९ **22 अप्रैल षष्ठी** वैतालषष्ठी विश्व पृथ्वी दिवस	रेवती १८/२९ **29 अप्रैल चतुर्दशी** मास शिवरात्री
रेवती ११/०९ **02 अप्रैल प्रतिपदा** नवसम्वत्सर प्रा., गुडी पड़वा झूलेलाल ज., ज्योतिष दिवस चैत्र नवरात्र प्रारम्भ, डॉ. हेडगेवार जयन्ती	पुनर्वसु २५/३९ **09 अप्रैल अष्टमी** दुर्गा अष्टमी, महाष्टमी	हस्त ०८/०० **16 अप्रैल पूर्णिमा** चैत्री पूर्णिमा, भ. हुनमान प्राकट्योत्सव (हनुमान जयंती)	शनिवार	उ.षा. १४/२० **23 अप्रैल सप्तमी** कालाष्टमी, शीतलाष्टमी गुरू अर्जुनदेव जयंती	अश्वि १९/०० **30 अप्रैल अमावस्या** पंचकोषी यात्रा पूर्ण शनिचरी अमावस्या

प्राचीन काल से ही काल-गणना का केन्द्र उज्जयिनी रही है। विज्ञान की दृष्टि से भी यह केन्द्र वर्तमान में उज्जैन से 32 कि.मी. दूर डोंगला में स्थित है। डोंगला वेधशाला की गणना अनुसार इस तिथि-पत्रक का प्रकाशन किया जा रहा है।

महर्षि अंगिरा

पुराणों में बताया गया है कि महर्षि अंगिरा ब्रह्मा के मानस पुत्र हैं तथा ये गुणों में ब्रह्मा के ही समान हैं। वज्रकुलोत्पन्न एक प्रसिद्ध वैदिक ऋषि हैं, जिनका उल्लेख मनु, ययाति, दध्यच्, प्रियमेध, कण्व, अत्रि, भृगु आदि के साथ मिलता है। इनकी गणना सप्तऋषियों में वशिष्ठ, विश्वामित्र, मरीचि आदि के साथ होती है तथा दस प्रजापतियों में की जाती है। इनके दिव्य अध्यात्मज्ञान, योगबल, तप-साधना एवं मन्त्रशक्ति की विशेष प्रतिष्ठा है। इनकी पत्नी दक्ष प्रजापति की पुत्री स्मृति (मतान्तर से श्रद्धा) थीं, जिनसे इनके वंश का विस्तार हुआ।

इनकी तपस्या और उपासना इतनी तीव्र थी कि इनका तेज और प्रभाव अग्नि की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गया। उस समय अग्निदेव भी जल में रहकर तपस्या कर रहे थे। जब उन्होंने देखा कि अंगिरा के तपोबल के सामने मेरी तपस्या और प्रतिष्ठा तुच्छ हो रही है तो वे दुःखी हो अंगिरा के पास गये और कहने लगे- ‘आप प्रथम अग्नि हैं, मैं आपके तेज़ की तुलना में अपेक्षाकृत न्यून होने से द्वितीय अग्नि हूँ। मेरा तेज़ आपके सामने फीका पड़ गया है, अब मुझे कोई अग्नि नहीं कहेगा।’ तब महर्षि अंगिरा ने सम्मानपूर्वक उन्हें देवताओं को हवि पहुँचाने का कार्य सौंपा। साथ ही पुत्र रूप में अग्नि का वरण किया। तत्पश्चात् वे अग्नि देव ही बृहस्पति नाम से अंगिरा के पुत्र के रूप में प्रसिद्ध हुए। उतथ्य तथा महर्षि संवर्त भी इन्हीं के पुत्र हैं। महर्षि अंगिरा की विशेष महिमा है। ये मन्त्रद्रष्टा, योगी, संत तथा महान भक्त हैं। इनकी अंगिरा-स्मृति में सुन्दर उपदेश तथा धर्माचरण की शिक्षा व्याप्त है। सम्पूर्ण ऋग्वेद में स्मृति चन्द्रिका में अंगिरा के गद्यांश उपस्मृतियों के 72 श्लोाक प्राप्त हुए हैं। इस ग्रंथ में अंत्यदजों से भोज्यी और पेय ग्रहण करने, गौ को चोट पहुँचाने का प्राश्चि त तथा स्त्रियों द्वारा नील वस्त्र धारण करने की विधि उल्लिखित है। महर्षि अंगिरा तथा उनके वंशधरों तथा शिष्य-प्रशिष्यों का जितना उल्लेख है, उतना अन्य किसी ऋषि के सम्बन्ध में नहीं हैं। विद्वानों का यह अभिमत है कि महर्षि अंगिरा से सम्बन्धित वेश और गोत्रकार ऋषि ऋग्वेद के नवम मण्डल के द्रष्टा हैं। नवम मण्डल के साथ ही ये अंगिरस ऋषि प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि अनेक मण्डलों के तथा कतिपय सूक्तों के द्रष्टा ऋषि हैं। जिनमें से महर्षि कुत्स, हिरण्यस्तूप, सप्तगु, नृमेध, शंकपूत, प्रियमेध, सिन्धुसित, वीतहव्य, अभीवर्त, अंगिरस, संवर्त तथा हविर्धान आदि मुख्य हैं। ऋग्वेद का नवम मण्डल जो 114 सूक्तों में निबद्ध है, पवमान-मण्डल के नाम से विख्यात है। इसकी ऋचाएँ पावमानी ऋचाएँ कहलाती हैं। इन ऋचाओं में सोम देवता की महिमापरक स्तुतियाँ हैं, जिनमें यह बताया गया है कि इन पावमानी ऋचाओं के पाठ से सोम देवताओं का आप्यायन होता है।

श्री विक्रम सं.२०७९ चैत्र शुक्ल पक्ष

दिनांक — **दि.०२ अप्रैल से १६ अप्रैल २०२२ तक**

सौम्यायन अयनांश २४/१०/१० बसंत ऋतु

यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।

तिथि	वार	समाप्ति घं.मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	अप्रैल	
०१	शनि	११ ४५	रेवती	११ १०	ऐन्द्र	०८ २४	०६ २३	१८ ३९	मेष ११ ।१०	११.१८.५६.००	02	**नवीन चंद्रदर्शन,नव संवत्सर प्रा.,गुडी पाडवा,** ज्योतिष दिवस वासन्तिक A
०२	रवि	१२ २०	अश्विनी	१२ २०	वैधृति	०७ ३०	०६ २२	१८ ३९	मेष	११.१९.५५.००	03	सिंधारा दूज,स.सि.६/२०से१२/२०तक **Aनवरात्र प्रां.,**घट स्थापना,चेतीचांद B
०३	सोम	१३ ३०	भरणी	१३ ३०	विष्कुंभ	०७ २०	०६ २१	१८ ४०	वृष.२० ।००	११.२०.५४.००	04	भ.२६/००से, **मत्स्यजयंती**(मीणा उत्पत्ति),गौरी मनोरथ तृतीया, गणगौर तीजे
०४	मंगल	१४ १५	कृतिका	१५ ४०	प्रीति	०७ २५	०६ २०	१८ ४०	वृषभ	११.२०.५३.०२	05	भ.१४/१५तक, **विनायक चतुर्थी, दमनक चतुर्थी,** अङ्गारक चतुर्थी, D
०५	बुध	१६ १०	रोहिणी	१८ ००	आयु	०८ ००	०६ १९	१८ ४१	वृषभ	११.२१.५२.३४	06	**श्रीराम राज्य महोत्सव कल्पादि,** स.सि.६/१७ से १८/००तक
०६	गुरु	१८ ००	मृगशिर	२० ४०	सौभाग्य	०८ ०५	०६ १८	१८ ४१	मि.०७ ।२०	११.२२.५१.३४	07	**स्कन्धपष्ठी,सूर्य-अशोका पष्ठी,** D स.सि.६/१८ से १५/४०तक
०७	शुक्र	२० ०५	आर्द्रा	२३ ००	शोभन	०८ ३०	०६ १७	१८ ४१	मिथुन	११.२३.५०.३१	08	भ.२०/०से,महासप्तमी,महानिशा पूजा बलीदान,स.सि. ०६/१५ से
०८	शनि	२२ १०	पुनर्वसु	२५ ४०	अति	०९ ००	०६ १६	१८ ४२	कर्क १९ ।००	११.२४.४९.२७	09	भ.९/००तक,दुर्गा अष्टमी, महाष्टमी वासंती दुर्गापूजन प्रा(बंगाल),भवान्युत्पत्ती, C
०९	रवि	२३ ५०	पुष्य	२७ ५०	सुकर्मा	०९ ५०	०६ १५	१८ ४२	कर्क	११.२५.४८.००	10	**श्रीराम नवमी,**श्रीस्वामी नारायण जं०,**चैत्र नवरात्र पूर्ण,**अयोध्या परिक्रमा F
१०	सोम	२५ ००	श्लेषा	३० ००	धृति	१० ००	०६ १५	१८ ४२	सिंह ३० ।००	११.२६.४७.०२	11	धर्मराज दशमी,दशहरा, C अशोकाष्टमी,अशोक कलिका प्राशन, स.सि.६/१५तक
११	मंगल	२६ ०१	मघा	दि रा	शूल	०९ ३०	०६ १४	१८ ४३	सिंह	११.२७.४६.०३	12	भ.१३/३०से२६/००तक,**कमदा एकादशी व्रत**(लोंग),श्रीवल्लभाचार्य बधाई,
१२	बुध	२६ १०	मघा	०७ ००	गंड	०९ ००	०६ १३	१८ ४३	सिंह	११.२८.४४.५०	13	वामन द्वादशी,विष्णु दमनोत्सव, F स.सि.६/१२से२७/५०तक
१३	गुरु	२६ ००	पू.फा	०७ ५०	वृद्धि	०८ ३०	०६ १२	१८ ४४	कन्या१४ ।००	११.२९.४५.३०	14	प्रदोषव्रत,अनङ्ग त्रयोदशी, हेडगेंवा जयन्ती, महावीर जयंती,
१४	शुक्र	२५ ३०	उफा	०८ १०	ध्रुव	०७ ३०	०६ ११	१८ ४४	कन्या	००.००.४२.१२	15	भ.२५/३०से,श्रीनृसिंह दोलोत्सव,शिव दमनक चतुर्दर्शी
१५	शनि	२५ ००	हस्त	०८ ००	व्या/हर्ष	०७ ०० २९ ००	०६ १०	१८ ४४	तुला २० ।२०	००.०१.४५.५२	16	भ.१३/००तक,स्नान,दान,व्रत की **चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयंती,** चित्रान्नदान बुध
												पश्चिमोदय ९/०० B निम्ब भक्षण, सूर्य को अर्घ्य प्रदान करे,पंचक ११/१०तक

दि. १६/०४/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
००	०६	१०	००	११	१०	०९	००
०१	०५	०६	१६	०१	१७	२५	२९
४५	००	००	१५	४०	०५	१७	४०
५२	००	००	०४	४५	००	०२	०५
५८	७९०	४५	११०	१३	६५	०४	०३
३७	३५	१३	००	२९	००	००	११
अश्वे	चित्र	धनि	भर	पू.भा	शत	धनि	कृ
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व

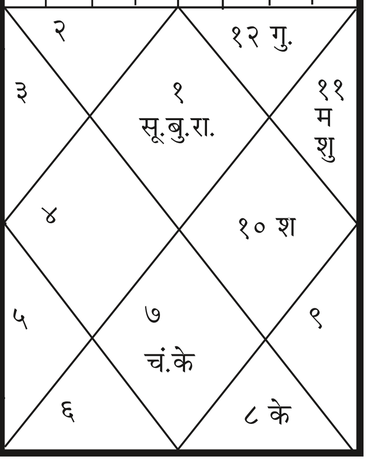

श्री विक्रम सं.२०७९ वैशाख कृष्ण पक्ष

दिनांक — **दि.१७ अप्रैल से ३० अप्रैल २०२२ तक**

सौम्यायन अयनांश २४/१०/१२ बसंत ऋतु

यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	अप्रैल	
०१	रवि	२२ ३०	चित्रा	०७ ३०	वज्र	२४ ००	०६ ०९	१८ ४५	तुला	००.०२.४४.३०	17	शिवलायों में गलन्तिका बांधे,पोशाला लगावें, वैशाख स्नान प्रां०, A
०२	सोम	२१ ००	स्वा/विशा	०६ ३० २९ २०	सिद्धि	२२ ३०	०६ ०८	१८ ४५	वृश्चि२४ ।००	००.०३.४३.०६	18	A पीपल को नित्य जल चढ़ावें। कच्छपावतार जयंती
०३	मंगल	१९ २०	अनुराधा	२८ ००	व्यति	१९ ००	०६ ०७	१८ ४६	वृश्चिक	००.०४.४१.५०	19	**भ.०८/००से१९/००तक, (अवन्तिका में प्रति मंगलवार मंगलनाथ दर्शन यात्रा)** B
०४	बुध	१६ ००	ज्येष्ठा	२६ २०	वरिय	१६ ४०	०६ ०६	१८ ४६	धनु २६ ।२०	००.०५.४०.०८	20	**श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत ०९/४०,** चन्द्रोदय सती अनुसूया जयंती
०५	गुरु	१३ ३०	मूल	२४ ४०	परिघ	१३ ००	०६ ०५	१८ ४७	धनु	००.०६.३८.००	21	B सायन सूर्य वृषभ में ०७/१५
०६	शुक्र	१२ १०	पू.षा.	२२ ३०	शिव	१० ५०	०६ ०४	१८ ४८	मकर२८ ।२०	००.०७.३६.५५	22	भ.१२/००से२३/००तक,वैतालषष्ठी,**गुमानदेव हनुमान** से वैताल मंदिर ध्वज यात्रा
०७	शनि	०९ ३०	उ.षा.	२१ १०	सिद्ध	०७ २०	०६ ०३	१८ ४८	मकर	००.०८.३५.२७	23	**कालाष्टमी,शीतलाष्टमी,** स.सि.२१/१० से
०८	रवि	०७ १०	श्रवण	२० ००	साध्य/शु	०६ ३० २८ ४०	०६ ०३	१८ ४८	मकर	००.०९.४०.२१	24	स.सि.०६/०३ तक
०९	सोम	०६ १०	धनिष्ठा	१८ ५०	शुक्ल	२४ ००	०६ ०२	१८ ४९	कुंभ ०६ ।३०	००.१०.३१.५८	25	भ.१७/००से२८/००तक, पंचक ०६/३०से
१०	सोम	२८ ००	दशमी तिथि का क्षय								00	**पंचकोषी यात्रा प्रारंभ (अवन्तिका)**
११	मंगल	२७ ३०	शत्भिष	१८ ००	ब्रह्म	२२ ००	०६ ०१	१८ ४९	कुम्भ	००.११.३०.४०	26	**वरुथीनी एकादशी व्रत(खरबूजा),** श्रीवल्लभाचार्य जं०,
१२	बुध	२५ ५०	पू.भा.	१७ ४०	ऐंद्र	१९ ००	०६ ०१	१८ ४९	मीन ११ ।३५	००.१२.२८.५९	27	
१३	गुरु	२४ ००	उ.भा.	१८ ०५	वैधृति	१७ २०	०६ ००	१८ ४९	मीन	००.१३.२७.०५	28	भ.२४/००से, प्रदोष व्रत,
१४	शुक्र	२४ ३०	रेवती	१८ ३०	विष्कुं	१६ ००	०५ ५९	१८ ५०	मेष १८ ।३०	००.१४.२५.०२	29	भ.१२/०तक,पंचक १८/३०तक, **मास शिवरात्री,** स.सि.५/५४से १८/३०तक
३०	शनि	२५ ००	अश्विनी	१९ ००	प्रीति	१५ २०	०५ ५८	१८ ५०	मेष	००.१५.२३.१६	30	स्नान,दान व श्राद्ध की वैशाखी शनिचरीअमावस्या, **पंचकोषी यात्रा पूर्ण,**

दि. ३०/०४/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
००	००	१०	०१	११	११	०९	००
१५	१६	१६	०६	०४	०२	२६	२८
२३	००	५०	०६	४९	२०	०५	५७
१६	००	४०	४०	३०	००	४०	२०
५८	७९०	४५	५८	१३	६६	०३	०३
०५	३५	१४	१५	००	००	२०	११
भर	अश्वि	शत	कृति	धनि	पू.भा	धनि	कृति
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	वक्री

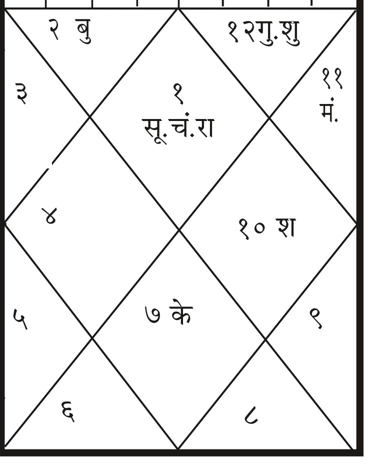

विक्रम पंचांग

संस्थाप्य मृणमये पात्रे
ताम्रपत्रं सुसंस्कृतम्।
छादयेच्छिखिग्रीवेन
चार्दाभिः काष्ठापांसुभिः।।
दस्तालोष्टो निधात्वयः
पारदाच्छादितस्ततः।
संयोगाज्जायते तेजो
मित्रावरुणसंज्ञितम्।।

– महर्षि अगस्त्य

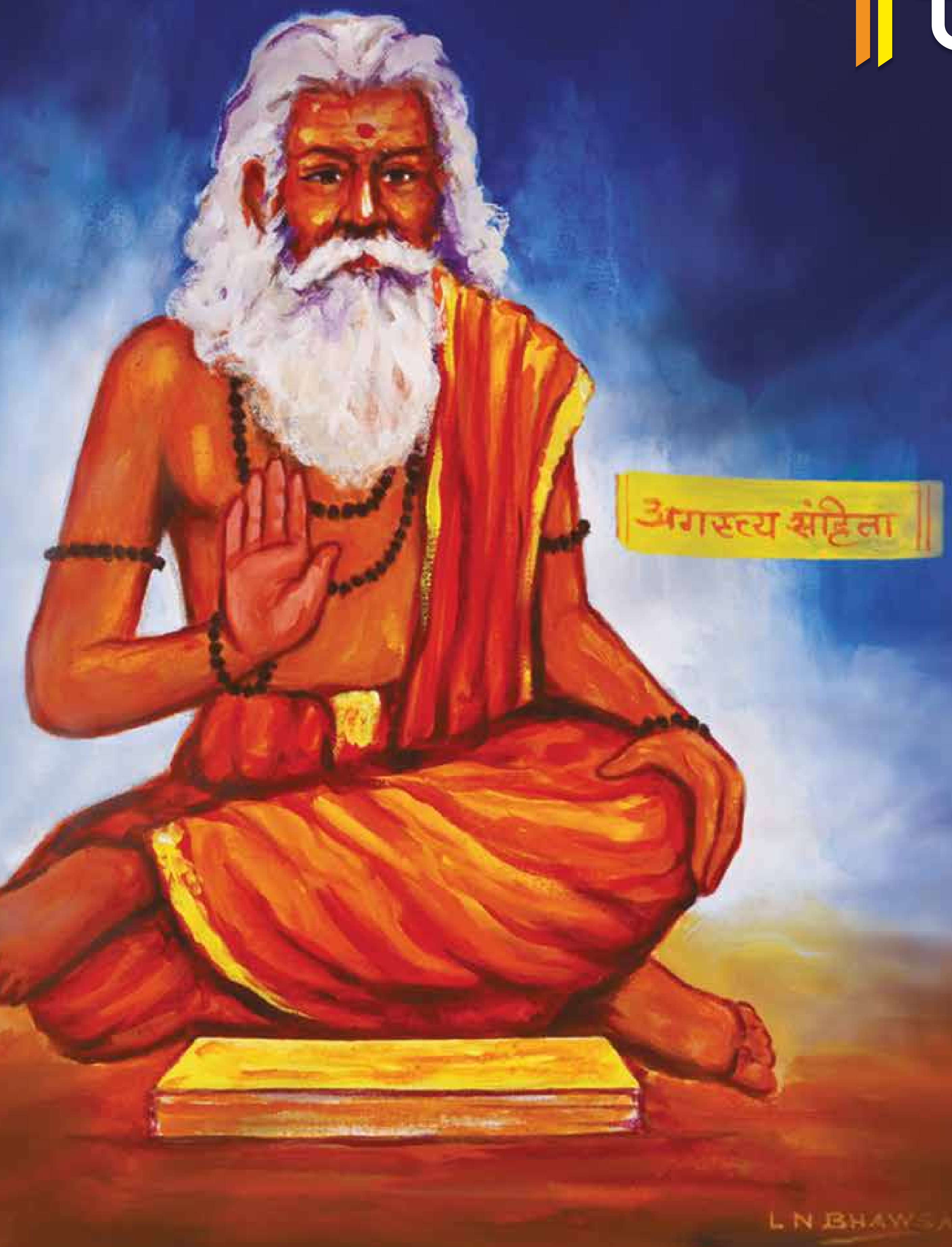

विक्रम सम्वत् 2079 ''राक्षस'' नाम सम्वत्सर

कलि सम्वत् 5123 • सृष्टि आरम्भ 1955885123
राजा – शनि • मंत्री – गुरू

वैशाख शुक्ल पक्ष — 1 मई से 16 मई 2022 तक

ज्यैष्ठ कृष्ण पक्ष — 17 मई से 30 मई 2022 तक

रविवार	भरणी २१/०० **01 मई** प्रतिपदा श्रमिक दिवस गुरू अनंगदेव जयंती	पुष्य ११/३९ **08 मई** सप्तमी गंगा जयंती, गंगोत्पत्ति मदर्स डे	स्वाती १५/०९ **15 मई** चतुर्दशी छिन्नमस्तका जयंती केवट जयंती		श्रवण २०/०० धनिष्ठा १८/३९ **22 मई** सप्तमी	कृतिका २२/४० **29 मई** चतुर्दशी
सोमवार	कृतिका २२/४० **02 मई** द्वितीया नवीन चन्द्रदर्शन	श्लेषा ११/१९ **09 मई** अष्टमी दुर्गाष्टमी, श्री हरि जयंती	विशाखा १४/०० **16 मई** पूर्णिमा श्री बुद्ध जंयती श्रीकूर्म जयंती, वैशाखी पूर्णिमा		शत १८/०० **23 मई** अष्टमी कालाष्टमी त्रिलोकीनाथ अष्टमी	रोहिणी २१/२० **30 मई** अमावस्या शनेश्चर जयंती सोमवती अमावस्या
मंगलवार	रोहिणी २१/२० **03 मई** तृतीया अक्षय तृतीया भगवान परशुराम जयंती	मघा १२/४९ **10 मई** नवमी सीता नवमी, जानकी जयंती		अनुराधा २८/०० **17 मई** प्रतिपदा विश्व दूरसंचार दिवस	पू.भा. १७/३९ **24 मई** नवमी	
बुधवार	मृगशिर २८/३९ **04 मई** चतुर्थी श्री विनायक चतुर्थी व्रत	पू.फा. १४/०० **11 मई** दशमी		ज्योष्ठा २९/१९ **18 मई** द्वितीया देवर्षि नारद जयंती	उ.भा. १८/०४ **25 मई** दशमी	
गुरूवार	आर्द्रा २९/२९ **05 मई** चतुर्थी	उ.फा. १४/१३ **12 मई** एकादशी मोहिनी एकदशी व्रत (गौमुत्र)		मूल २४/३९ **19 मई** तृतीया चतुर्थी श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय ०९/०९	रेवती १८/२९ **26 मई** एकादशी अपरा एकादशी व्रत (ककड़ी) भद्रकाली एकादशी	
शुक्रवार	पुनर्वसु दिन/राज **06 मई** पंचमी श्री आद्यशंकराचार्य जयंती संत सूरदास जयंती	हस्त १६/०० **13 मई** द्वादशी प्रदोषव्रत		पू.षा. २२/२९ **20 मई** पंचमी	अश्वि १९/०० **27 मई** द्वादशी प्रदोष व्रत	
शनिवार	पुनर्वसु ०८/२९ **07 मई** षष्ठी श्रीरामानुजाचार्य जंयती रविन्द्रनाथ टेगौर जयंती	चित्रा २५/५८ **14 मई** त्रयोदशी भागवान नृसिंह प्राकट्योत्सव		उ.षा. १४/२० **21 मई** षष्ठी	भरणी २१/०० **28 मई** त्रयोदशी मासशिवरात्री व्रत	

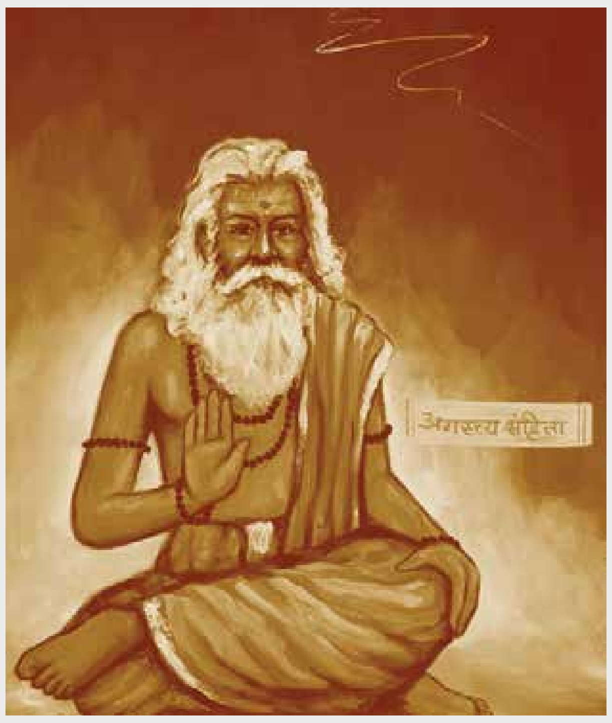

महर्षि अगस्त्य

(2943 वि.पू., 3000 ई.पूर्व)

वैज्ञानिक ऋषियों के क्रम में महर्षि अगस्त्य भी एक अग्रणी वैदिक ऋषि थे। जिनका जन्म श्रावण शुक्ल पंचमी (तदनुसार 3000 ई.पू.) को काशी में हुआ था। इन्हें सप्तर्षियों में से एक माना जाता है। महर्षि अगस्त्य राजा दशरथ के राजगुरु थे। देवताओं के अनुरोध पर इन्होंने काशी छोड़कर दक्षिण की यात्रा की और बाद में वहीं बस गये थे। उन्होंने अगस्त्य संहिता नामक ग्रंथ की रचना की और कालान्तर में इस ग्रंथ की प्राचीनता पर हुए अनेक शोध में इसे सही पाया गया। आश्चर्यजनक रूप से इस ग्रंथ में विद्युत उत्पादन से संबंधित सूत्र मिलते हैं। अगस्त्य संहिता को लिखे जाने का कालखंड 3000 ई.पू. का माना जाता है।

इस ग्रंथ में विद्युत कोश (बैट्री) के निर्माण की विधि विस्तार से बतायी गयी है, बल्कि इस बात का भी उल्लेख है कि किस प्रकार पानी को उसकी घटक गैस यानी ऑक्सीजन और हाईड्रोजन में विभाजित किया जा सकता है। आधुनिक बैट्री अगस्त्य मुनि द्वारा वर्णित बैट्री से काफी मिलती जुलती हैं। अगस्त्य मुनि के अनुसार-

संस्थाप्य मृण्मये पात्रे
ताम्रपत्रं सुसंस्कृतम्।
छादयेच्छिखिग्रीवेन
चार्दाभिः काष्ठापांसुभिः।।
दस्तालोष्टो निधात्वयः पारदाच्छादितस्ततः।
संयोगाज्जायते तेजो मित्रावरुणसंज्ञितम्।।

अर्थात एक मिट्टी का पात्र लें, उसमें ताम्र पट्टिका डालें तथा शिखिग्रीवा डालें, फिर बीच में गीली काष्ट पांसु लगाएँ, ऊपर पारा तथा दस्त लोष्ट डालें, फिर तारों को मिलायेंगे तो उससे मित्रावरुण शक्ति (विद्युत) का उदय होगा। आधुनिक युग में पश्चिम में बिजली का आविष्कारक माइकल फैराडे ने किया था। विद्युत बल्ब के आविष्कारक थॉमस एडिसन ने अपनी किताब में लिखा हैं कि 'एक रात मैं संस्कृत का एक वाक्य पढ़ते-पढ़ते सो गया। उस रात मुझे स्वप्न में संस्कृत के उस श्लोक का अर्थ और रहस्य समझ में आया जिससे मुझे विद्युत बल्ब बनाने में मदद मिली।' अगस्त्य संहिता में आधुनिक समय में प्रयोग में लायी जाने वाली तकनीक इलेक्ट्रोप्लेटिंग (विद्युत लेपन) का भी विवरण मिलता है अतः उन्हें विद्युत कोष (बैट्री) द्वारा सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातुओं पर परत चढ़ाने की विधि का आविष्कारक भी माना जाता है।

श्री विक्रम सं.२०७९ वैशाख शुक्ल पक्ष

दि.०१ मई से १६ मई २०२२ तक

सौम्यायन अयनांश २४/१०/१४ ग्रीष्म ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	दिनांक मई	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
०१	रवि	२५ ३०	भरणी	२१ ००	आयु	१४ ३०	०५ ५४	१८ ५२	वृष.२७।३०	००.१६.२१.२३	01	A स.सि ०५/५० तक
०२	सोम	२७ ००	कृतिका	२२ ५०	सौभाग्य	१४ ४९	०५ ५३	१८ ५३	वृषभ	००.१७.२०.०५	02	**नवीन चंद्रदर्शन,** शिवाजी जयंती, स.सि.२२/५०से
०३	मंगल	२९ २०	रोहिणी	२५ ००	शोभन	१५ ००	०५ ५२	१८ ५४	वृषभ	००.१८.१८.०१	03	अक्षय तृतीया,परशुराम जं.,बद्रीकेदार यात्रा,त्रेतायुगादि, समुद्रस्नान, A
०४	बुध	दि रा	मृगशिर	२७ ४०	अति	१५ १५	०५ ५२	१८ ५५	मि.१४।२०	००.१९.१५.०२	04	भ.१८/३०से, **विनायक चतुर्थी व्रत,** स.सि.०५/५०से२७/४०तक
०४	गुरु	०७ ५०	आर्द्रा	२९ ३०	सुकर्मा	१५ ५०	०५ ५१	१८ ५५	मिथुन	००.२०.१३.३२	05	भ.०८/००तक
०५	शुक्र	०९ ००	पुनर्वसु	दि रा	धृति	१६ १०	०५ ५१	१८ ५५	कर्क २५।००	००.२१.११.२९	06	चन्दन षष्ठी व्रत, **श्रीआद्यशंकराचार्य जयंती,** स.सि.दिन-रात
०६	शनि	१० ३०	पुनर्वसु	०८ ३०	शूल	१७ ००	०५ ५०	१८ ५६	कर्क	००.२२.०९.३०	07	गंगासप्तमी(महा.),**श्रीरामानुजाचार्य जयंती,** रविन्द्रनाथ टैगोर जं०
०७	रवि	११ ५०	पुष्य	१० ००	गंड	१७ ३०	०५ ५०	१८ ५६	कर्क	००.२३.०७.०५	08	भ.१२/००से २४/४०तक, **गंगोत्पत्ति,** गंगासप्तमी,स.सि.०५/४८से१०/००तक
०८	सोम	१३ २०	श्लेषा	११ २०	वृद्धि	१७ २०	०५ ५०	१८ ५६	सिंह ११।२०	००.२४.०५.०९	09	दुर्गाष्टमी,श्री बगलामुखी महाविद्या प्रागट्योत्सव श्रीहरि जयंती,
०९	मंगल	१४ ५०	मघा	१२ ५०	ध्रुव	१६ ५०	०५ ४९	१८ ५७	सिंह	००.२५.०३.००	10	मिथिला दिवस, **सीता नवमी,** मात्र नवमी, **जानकी जयन्ती**
१०	बुध	१५ ३०	पू.फा	१४ ००	व्याघा	१६ ००	०५ ४९	१८ ५७	कन्या२०।२०	००.२६.००.४०	11	भ.२७/३० से B स.सि.०५/४५ तक
११	गुरु	१५ २०	उ.फा.	१५ १५	हर्षण	१४ ५०	०५ ४८	१८ ५८	कन्या	००.२६.५८.००	12	भ.१५/२०तक, मोहिनी एकादशी व्रत(गौमुत्र),
१२	शुक्र	१४ ५०	हस्त	१६ ००	वज्र	१३ ४०	०५ ४८	१८ ५९	तुला २८।००	००.२७.५६.०५	13	प्रदोषव्रत,रूख्मणी द्वादशी,परशुराम द्वादशी
१३	शनि	१३ २०	चित्रा	१५ ५९	सिद्धि	१२ १०	०५ ४७	१८ ५९	तुला	००.२८.५३.०३	14	आद्यशंकराचार्य कैलाश गमन, स.सि.१६/००तक
१४	रवि	१२ ००	स्वाती	१५ १०	व्यति	१० ५०	०५ ४६	१८ ५९	तुला	००.२९.५१.५०	15	भ.१२ से २३ तक, पूर्णिमा व्रत, **नृसिंह जयंती व छिन्नमस्तका जयन्ती** B
१५	सोम	१० ३०	विशाख	१४ ००	वरिय	०९ ००	०५ ४५	१८ ००	वृश्चि.०८।२०	०१.००.४९.१८	16	स्नान,दान की **वैशाखी पूर्णिमा,** कुर्मो उत्पत्ति, बुद्ध, स.सि.१४/००से

दि. १६/०५/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०१	०७	१०	०१	११	११	०९	००
००	०९	२८	०९	०८	२३	२६	२७
४९	५८	०३	४५	०२	०५	४०	४१
१८	३०	१०	०१	०१	१०	००	२५
५७	७९०	४५	१३	११	७०	०२	०३
३७	३५	०५	५०	००	०५	११	११
कृति	विश	पू.भा	रोहि	उ.भ	रेवती	धनि	कृति
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व

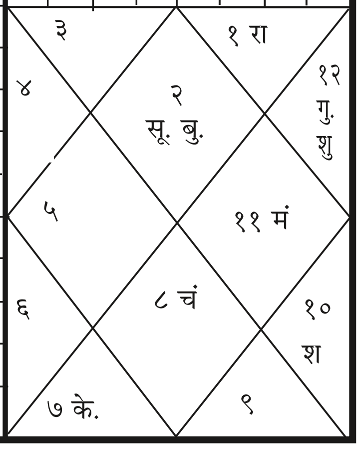

श्री विक्रम सं.२०७९ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

दि.१७ मई से ३० मई २०२२ तक

सौम्यायन अयनांश २४/१०/१६ ग्रीष्म ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घं. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	दिनांक मई	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
०१	मंगल	०९ २०	अनुराधा	१२ ५०	परि/शिव	०७ ०० २८ ००	०५ ४५	१९ ००	वृश्चिक	०१.०१.४६.५०	17	वृंदावन-विहार परिक्रमा, वन विहार, स.सि.०५/४३ तक
०२	बुध	०७ ५०	ज्येष्ठा	११ १०	सिद्ध	२६ ११	०५ ४५	१९ ००	धनु १०।०९	०१.०२.४४.२०	18	भ.१८/००से, **देवर्षिनारद जयंती, वीणादान,**
०३	गुरु	०६ ००	मूल	१० ००	साध्य	२४ ००	०५ ४५	१९ ००	धनु	०१.०३.४१.५०	19	भ.०६/००तक, **श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय ९/१०,** आखुरथ चतुर्थी
०४	गुरु	२७ ००	चतुर्थी तिथि का क्षय								00	
०५	शुक्र	२४ १०	पू.षा.	०७ ५०	शुभ	२१ ५०	०५ ४६	१९ ००	मकर१३।३५	०१.०४.३९.००	20	**भुवनेश्वरी माता का पाटोत्सव,** बुध वक्री ०७/००से,
०६	शनि	२१ ५०	उ.षा.	०६ ४०	शुक्ल	१९ ००	०५ ४७	१९ ०९	मकर	०१.०५.३६.५०	21	भ.२२/००से, सायन सूर्य मिथुन में ०९/२०, स.सि.०६/४० से
०७	रवि	१९ ४०	श्रव/धनि	०५ ५० २८ ३०	ब्रह्म	१६ ५०	०५ ४७	१९ ०९	कुंभ १७।१०	०१.०६.३४.३७	22	भ.०९/००तक, पंचक प्रा. १७/१०से, स.सि.०५/४४ तक
०८	सोम	१७ २०	शतभिष	२६ ००	ऐंद्र	१४ १०	०५ ४७	१९ ०२	कुम्भ	०१.०७.३२.०४	23	श्री त्रिलोकनाथाष्टमी,(बंगाल),**कालाष्टमी, त्रिलोकी नाथ अष्टमी**
०९	मंगल	१५ १०	पू.भा.	२५ ४०	वैधृति	११ ५०	०५ ४७	१९ ०२	मीन ०८।००	०१.०८.२९.३०	24	भ.२६/५०से
१०	बुध	१४ ००	उ.भा.	२६ ०५	विष्कुंभ	०९ ४०	०५ ४७	१९ ०३	मीन	०१.०९.२६.५०	25	भ.१४/००तक, A स.सि.०५/४४ से २६/२०तक
११	गुरु	१३ २०	रेवती	२६ २०	प्रीति	०७ ३०	०५ ४७	१९ ०३	मेष २६।२०	०१.१०.२४.००	26	अपरा एकादशी व्रत(ककड़ी),भद्रकाली एकादशी(बंगाल),पंचक २६/२०तक A
१२	शुक्र	१२ ००	अश्विनी	२७ ००	आयु/सौभा	०५ ४० २६ ५९	०५ ४७	१९ ०४	मेष	०१.११.२१.३०	27	प्रदोष व्रत, स.सि.०५/४४ से २७/००तक
१३	शनि	१२ ४०	भरणी	२८ १०	शोभन	२४ ३०	०५ ४७	१९ ०४	मेष	०१.१२.१९.००	28	भ.१३/००से २५/१५ तक, **मासशिवरात्री व्रत,**
१४	रवि	१४ ००	कृतिका	२९ ३०	अति	२३ ००	०५ ४७	१९ ०५	वृभ.१०।३५	०१.१३.१६.२०	29	सर्वाथ सिद्धि दिन रात
३०	सोम	१५ २०	रोहिणी	दि रा	सुकर्मा	२२ २०	०५ ४६	१९ ०५	वृषभ	०१.१४.१३.३७	30	स्नान,दान व पितृ अमावस्या, **भावुका दर्श अमावस्या शनेश्चर जयंती,**
												सोमवती अमावस्या, स.सि.दिन-रात

दि. ३०/०६/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०१	०१	११	०१	११	००	०९	००
१४	१०	१०	०२	१०	०८	२६	२७
१३	००	०१	२८	०२	०२	५२	१३
३७	००	००	००	००	००	००	००
५७	७१२	३६	३३	०२	७४	०१	०३
१६	०५	५७	३५	०८	०२	४०	११
रोहि	कृति	उ.भा	कृति	उ.भ	आश्ले	धनि	कृति
मा	मा	मा	वक्री	मा	मा	मा	व

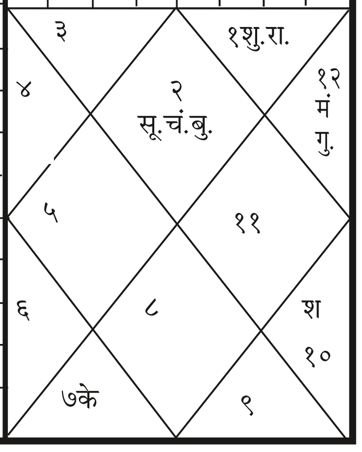

त्रिलोकपथाय त्रिलोकनाथाय
श्री महाविष्णुस्वरूप।
धनवंतरी स्वरूप श्री औषधचक्र
नारायणाय नमः।।

– धन्वन्तरि

विक्रम पचांग

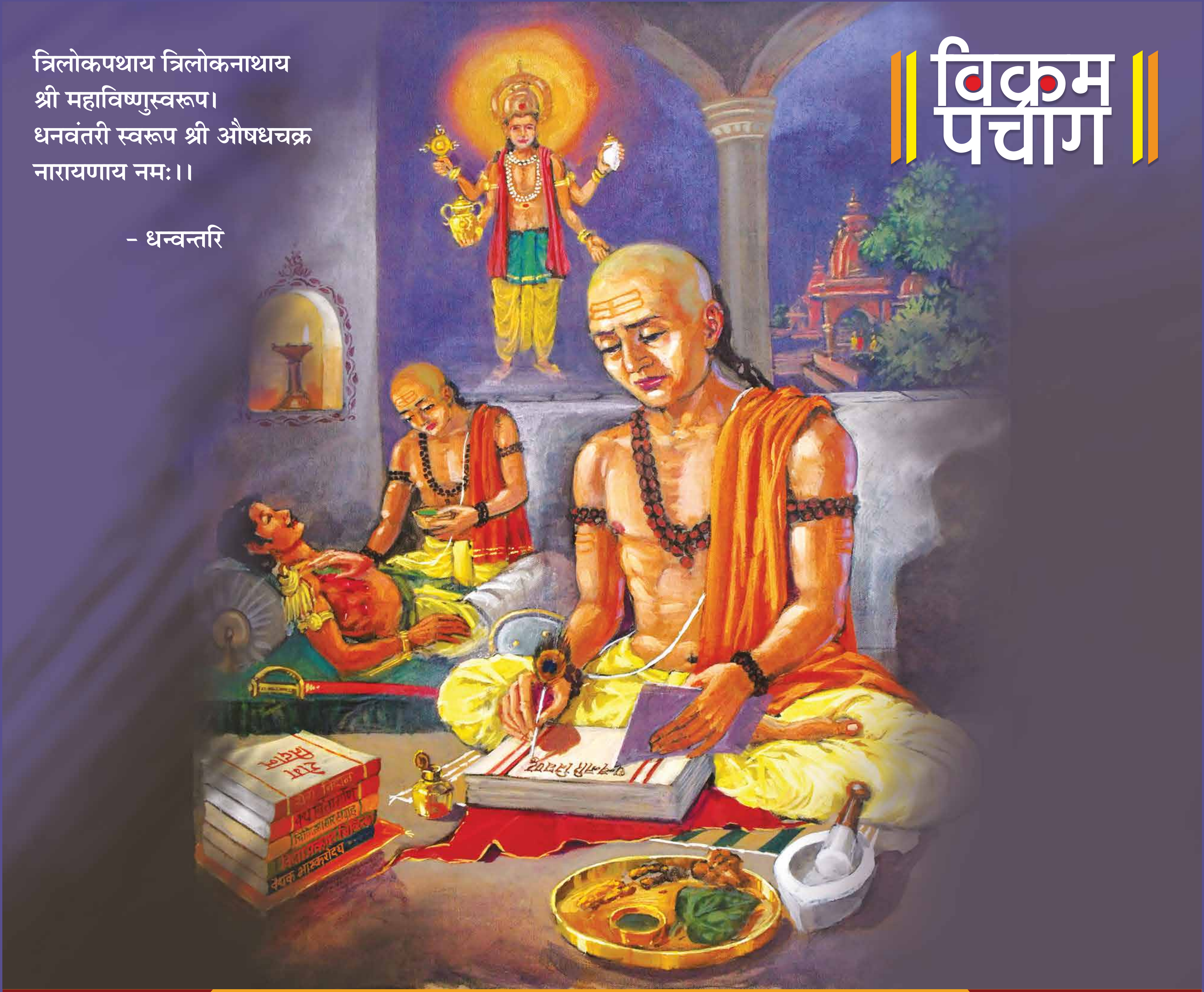

ज्यैष्ठ शुक्ल पक्ष
31 मई से 14 जून 2022 तक

विक्रम सम्वत् 2079 ''राक्षस'' नाम सम्वत्सर
कलि सम्वत् 5123 • सृष्टि आरम्भ 1955885123
राजा – शनि • मंत्री – गुरू

आषाढ़ कृष्ण पक्ष
17 मई से 30 मई 2022 तक

		श्लेषा १९/०९ 05 जून षष्ठी अरण्य पष्ठी, आरोग्य षष्ठी	विशाखा २२/०९ 12 जून त्रयोदशी वट सावित्री व्रतारम्भत्रिदिवसीय	**रविवार**		धनिष्ठा १२/१० 19 जून पंचमी नाग पंचमी	कृतिका १४/०० 26 जून सोमप्रदोष व्रत
		मघा २१/२९ 06 जून सप्तमी	अनुराधा २१/०० 13 जून चतुर्दशी पूर्णिमा व्रत	**सोमवार**		शत १०/४० 20 जून षष्ठी सप्तमी	रोहिणी १५/५० 27 जून चतुर्दशी
रोहिणी ०८/०० 31 मई प्रतिपदा नवीन चन्द्रदर्शन दस दिवसीय गङ्गादशहरा प्रारंभ	पू.फा. २३/०० 07 जून अष्टमी धूमावती जयंती	ज्योष्ठा १९/१९ 14 जून पूर्णिमा वटसावित्री पूर्णिमा व्रत कबीर जयंती महाराणा प्रताम जयंती	**मंगलवार**		पू.भा. ०९/३० 21 जून अष्टमी कालाष्टमी, शीतलाष्टमी	मृगशिर १८/०० 28 जून अमावस्या
मृगशिर १०/२७ 01 जून द्वितीया	उ.फा. २४/०९ 08 जून नवमी महेश नवमी शिप्रातीर्थ परिक्रम यात्रा प्रारंभ		**बुधवार**	मूल १७/३९ 15 जून प्रतिपदा गुरू हरगोविन्द जयंती	उ.भा. ०९/०० 22 जून नवमी	आर्द्रा २१/०४ 29 जून अमावस्या स्नानदान की अमावस्या पर्व
आर्द्रा १२/०९ 02 जून तृतीया महाराणा प्रताप जयंती	हस्त २४/०० 09 जून दशमी शिप्रातीर्थ परिक्रम यात्रा पूर्ण गंगा दशहरा, श्री बटुक भैरव जयंती		**गुरूवार**	पू.षा. १६/०० 16 जून द्वितीया	रेवती १०/०० 23 जून दशमी योगिनी एकादशी (मिश्री)	
पुनर्वसु १४/२९ 03 जून चतुर्थी श्री विनायक चतुर्थी व्रत	चित्रा २५/४० 10 जून एकादशी निर्जला एकादशी व्रत गायत्री जयंती		**शुक्रवार**	उ.षा. १४/०४ 17 जून तृतीया श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय ०८/५५	अश्वि ११/०४ 24 जून एकादशी	
पुष्य १६/४९ 04 जून पंचमी	स्वाती २४/०० 11 जून द्वादशी		**शनिवार**	श्रवण १३/०० 18 जून चतुर्थी	भरणी १२/०० 25 जून द्वादशी	

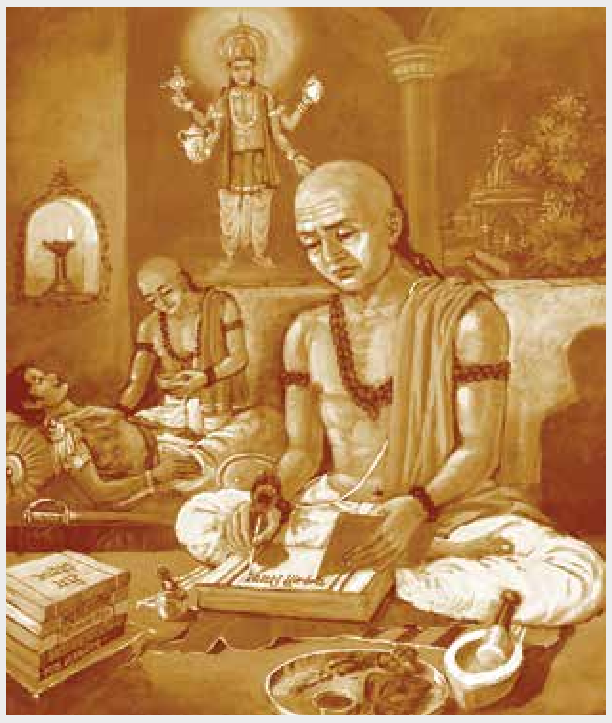

धन्वन्तरि

हमारे साहित्य में तीन धन्वन्तरियों का उल्लेख मिलता है। दैविक, वैदिक और ऐतिहासिक। दैविक धन्वन्तरि के विषय में कहा गया है कि वे रोग पीड़ित देवताओं की चिकित्सा करते थे। उनसे संबंधित अनेक कथाएँ प्राप्त होती हैं। आयुर्वेद साहित्य में प्रथम धन्वन्तरि वैद्य माने जाते हैं। जब देवताओं और असुरों ने 'समुद्र मंथन' किया तो अनेक मूल्यवान वस्तुओं की प्राप्ति के बाद अंत में धन्वन्तरि हाथ में अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। धन्वन्तरि हिन्दू धर्म में मान्य देवताओं में से एक हैं। भगवान धन्वन्तरि आयुर्वेद जगत् के प्रणेता तथा वैद्यक शास्त्र के देवता माने जाते हैं। भारतीय पौराणिक दृष्टि से 'धनतेरस' को स्वास्थ्य के देवता धन्वन्तरि का दिवस माना जाता है। धन्वन्तरि आरोग्य, सेहत, आयु और तेज के आराध्य देवता हैं। इतिहास में दो अन्य धन्वन्तरियों का वर्णन आता है। प्रथम वाराणसी के क्षत्रिय 'राजा दिवोदास' जिन्होंने 'शल्य चिकित्सा' का विश्व का पहला विद्यालय काशी में स्थापित किया जिसके प्रधानाचार्य सुश्रुत बनाये गये थे। सुश्रुत दिवोदास के ही शिष्य और ऋषि विश्वामित्र के पुत्र थे। उन्होंने ही सुश्रुत संहिता लिखी थी। द्वितीय वैद्य परिवार के 'धन्वन्तरि' थे। दोनों ने ही प्रजा को अपनी वैद्यक चिकित्सा से लाभान्वित किया। सुश्रुत के अनुसार काशीराज दिवोदास के रूप में अवतरित भगवान धन्वन्तरि के पास अन्य महर्षियों के साथ सुश्रुत जब आयुर्वेद का अध्ययन करने हेतु गये और उनसे आवेदन किया। उस समय भगवान धन्वन्तरि ने उन लोगों को उपदेश करते हुए कहा कि सर्वप्रथम स्वयं ब्रह्मा ने सृष्टि उत्पादन पूर्व ही अथर्ववेद के उपवेद आयुर्वेद को एक सहस्त्र अध्याय- शत सहस्त्र श्लोकों में प्रकाशित किया। भावमिश्र का कथन है कि सुश्रुत के शिक्षक 'धन्वन्तरि' शल्य चिकित्सा के विशेषज्ञ थे। सुश्रुत गुप्तकाल से संबंधित थे। अतः स्पष्ट है कि विक्रमयुगीन धन्वन्तरि अन्य व्यक्ति थे। इतना अवश्य है कि प्राचीनकाल में वैद्यों को धन्वन्तरि कहा जाता होगा। इसी कारण दैविक से लेकर ऐतिहासिक युग तक अनेक धन्वन्तरियों का उल्लेख मिलता है। शल्य तंत्र के प्रवर्तक को धन्वन्तरि कहा जाता था। इसी कारण शल्य चिकित्सकों का संप्रदाय धन्वन्तरि कहलाता था। शल्य चिकित्सा में निपुण वैद्य धन्वन्तरि उपाधि धारण करते होंगे। विक्रमादित्य के धन्वन्तरि भी शल्य चिकित्सक थे। वे विक्रमादित्य की सेना में मौजूद थे। उनका कार्य सेना में घायल हुए सैनिकों को ठीक करना था। धन्वन्तरि द्वारा लिखित ग्रंथों के ये नाम हैं- रोग निदान, वैद्य चिंतामणि, विद्याप्रकाश चिकित्सा, धन्वन्तरि निघण्टु, वैद्यक भास्करोदय तथा चिकित्सा सार संग्रह।

श्री विक्रम सं.२०७९ ज्यैष्ठ शुक्ल पक्ष

दि.३१ मई से १४ जून २०२२ तक

सौम्यायन — अयनांश २४/१०/१८ — ग्रीष्म ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ.मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ.मि.	योग	समाप्ति घं. मि.	सूर्योदय घ.मि.	सूर्यास्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	दिनांक मई जून	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
०१	मंगल	१७ ००	रोहिणी	०८ ००	धृति	२३ ००	०५ ४६	१९ ०५	मिथु.२१ ।१०	०१.१५.११.००	31	नवीन चन्द्रदर्शन,**दस दिवसीय गङ्गादशहरा प्रारम्भ,**
०२	बुध	१९ १०	मृगशिर	१० २८	शूल	२४ १०	०५ ४५	१९ ०५	मिथुन	०१.१६.०८.००	01	स.सि.०५/४३ से १०/२८ तक
०३	गुरु	२१ २०	आर्द्रा	१२ १०	गंड	२५ ००	०५ ४५	१९ ०५	मिथुन	०१.१७.०६.०३	02	रम्भाव्रत, **महाराणा प्रताप जयंती,** स.सि.१२/१० से
०४	शुक्र	२२ ५०	पुनर्वसु	१४ ३०	वृद्धि	२५ ३०	०५ ४५	१९ ०५	कर्क ०७ ।५२	११.१८.०२.१०	03	भ.१०/००से २२/५० तक ,**श्रीविनायक चतुर्थीव्रत,** स.सि.१४/३०तक
०५	शनि	२४ ४०	पुष्य	१६ ५०	ध्रुव	२५ ००	०५ ४५	१९ ०६	कर्क	०१.१८.५९.५५	04	**संत टेऊराम पुण्य तिथि,**
०६	रवि	२६ ००	श्लेषा	१९ १०	व्याघा	२५ ५०	०५ ४५	१९ ०६	सिंह १९ ।१०	०१.१९.५६.५८	05	अरण्य षष्ठी, आरोग्य षष्ठी
०७	सोम	२७ १०	मघा	२१ ३०	हर्षण	२५ ३०	०५ ४५	१९ ०७	सिंह	०१.२०.५४.१०	06	भ.२७/१०से
०८	मंगल	२७ ४०	पू.फा	२३ ००	वज्र	२४ २०	०५ ४५	१९ ०७	कन्या२९ ।२०	०१.२१.५१.१६	07	भ.१५/२५तक, दुर्गाष्टमी, **धूमावती जयंती,**
०९	बुध	२६ ५५	उ.फा.	२४ १०	सिद्धि	२३ ५९	०५ ४५	१९ ०७	कन्या	०१.२२.४८.२३	08	महेश नवमी, **दो दिवसीय शिप्रा यात्रा प्रा.** (अवन्तिका), स.सि.२४/१० से
१०	गुरु	२६ ००	हस्त	२४ ००	व्यति	२१ ३०	०५ ४५	१९ ०८	कन्या	०१.२३.४५.५०	09	**गंगा दशहरा, श्रीबटुक भैरव जं०** दो दिवसीय शिप्रा यात्रा पूर्ण, स.सि.५/४३तक
११	शुक्र	२५ ५०	चित्रा	२५ ४०	वरिया	२० ४०	०५ ४५	१९ ०८	तुला १२ ।४०	०१.२४.४२.३५	10	भ.१४/००से २५/५० तक, **निर्जला एकादशी व्रत(** आम),गायत्री जयंती,
१२	शनि	२४ ४०	स्वाति	२४ ००	परिघ	१८ ००	०५ ४५	१९ ०८	तुला	०१.२५३९.२०	11	स.सि.०५/४३ से २४/०० तक
१३	रवि	२२ १०	विशाख	२२ ५०	शिव	१६ १०	०५ ४५	१९ ०९	वृश्चि.१७ ।१०	०१.२६.३६.००	12	प्रदोषव्रत, **वट सावित्री व्रतारम्भत्रिदिवसीय,**
१४	सोम	२० ००	अनुराधा	२१ ००	सिद्ध	१४ ००	०५ ४५	१९ ०९	वृश्चिक	०१.२७.३३.४०	13	भ.२०/००से, पूर्णिमा व्रत, स.सि.०५/४३ से २१/००तक
१५	मंगल	१७ ५०	ज्येष्ठा	१९ २०	साध्य	११ ४०	०५ ४५	१९ ०९	धनु १९ ।२०	०१.२८.३०.४८	14	भ.०७/००तक,स्नान,दान व **वटसावित्री पूर्णिमा व्रत,**मन्वादि, कबीर जयंती,
												महाराणा प्रताप जयंती

दि. १४/०६/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०१	०८	११	०१	११	००	०९	००
२८	०६	१७	०८	१२	२४	२६	२६
३०	००	५५	००	१५	५९	४०	०४
४८	००	०२	१०	०५	००	००	००
५७	७९०	४३	६०	०८	७२	००	०३
०१	३५	३०	००	००	०५	३३	११
मृग	मूल	उ.भा	कृति	उ.भ	भर	धनि	कृति
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व

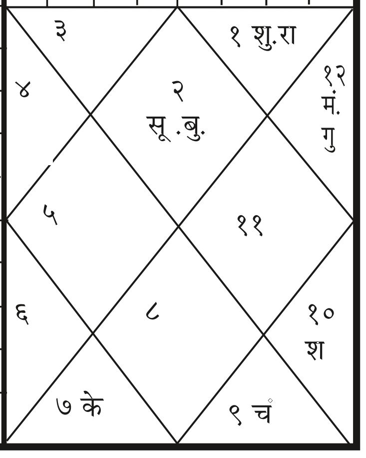

श्री विक्रम सं.२०७९ आषाढ़ कृष्णा पक्ष

दि.१५ जून से २९ जुन २०२२ तक

सौम्यायन — अयनांश २४/१०/१२ — ग्रीष्म ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घं. मि.	योग	समाप्ति घ.मि.	सूर्योदय घ.मि.	सूर्यास्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	दिनांक जून	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
०१	बुध	१५ ५५	मूल	१७ ४०	शुभ	०८ ५०	०५ ४५	१९ ०९	धनु	०१.२९.२७.५०	15	**वटसावित्री व्रत का पारण, अशुन्य व्रत, गुरु हरगोविंद जयंती**
०२	गुरु	१४ ००	पू.षा	१६ ००	शु/ब्रह्म	०६ १० / २९ ००	०५ ४५	१९ ०९	मकर२१ ।३२	०२.००.२५.००	16	भ.२५/०४ से,
०३	शुक्र	१२ ०८	उ.षा.	१४ ०५	ऐंद्र	२६ ३०	०५ ४५	१९ १०	मकर	२१.०१.२१.१०	17	भ.१२/०८तक, **श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत, चंद्रोदय ८/५५तक,**स.सि.१४/०५
०४	शनि	१० ००	श्रवण	१३ ००	वैधृति	२३ १०	०५ ४५	१९ १०	कुंभ २४ ।३५	०२.०२.१८.४०	18	पंचक प्रा. २४/३५से, सायन सूर्य कर्क में १५/००, स.सि.१३/००तक
०५	रवि	१० ५०	धनिष्ठा	१२ १०	विष्कुंभ	२० ००	०५ ४५	१९ १०	कुम्भ	०२.०३.१५.४५	19	कोकिला पंचमी(जैन), नागपंचमी(बंगाल)
०६	सोम	०५ ५०	शत्भिष	१० ४०	प्रीति	१७ १०	०५ ४६	१९ १०	मीन २७ ।२०	०२.०४.१२.५०	20	भ.०५/५०से १६/४० तक
०७	सोम	२७ ३०	सप्तमी तिथि का क्षय								00	
०८	मंगल	२५ ५०	पू.भा.	०९ ३०	आयु	१४ ५०	०५ ४६	१९ ११	मीन	०२.०५.०९.५१	21	**कालाष्टमी, शीतलाष्टमी, भल-भलाष्टमी,**
०९	बुध	२४ ३०	उ.भा.	०९ ००	सौभाग्य	१२ ००	०५ ४७	१९ ११	मीन	०२.०६.०६.४०	22	
१०	गुरु	२४ १५	रेवती	१० ००	शोभन	१० २०	०५ ४७	१९ ११	मेष १० ।००	०२.०७.०३.३८	23	भ.१२/२५से२४/१५ तक, पंचक १० तक स.सि.दिन-रात
११	शुक्र	२५ ००	अश्विनी	११ ०५	अति	०८ ५०	०५ ४७	१९ ११	मेष	०२.०८.००.३४	24	स.सि.०५/४५ से ११/००तक, **योगिनी एकादशी(मिश्री),**
१२	शनि	२६ ०५	भरणी	१२ ००	सुकर्मा	०८ ००	०५ ४७	१९ ११	वृष.१८ ।३०	०२.०८.५७.३९	25	
१३	रवि	२७ २०	कृतिका	१४ ००	धृति	०७ ००	०५ ४८	१९ १२	वृषभ	०२.०९.५४.२५	26	भ.२७/२० से, सोमप्रदोषव्रत,
१४	सोम	२८ ४०	रोहिणी	१५ ५०	शूल	०६ ५०	०५ ४८	१९ १२	मिथुन २९ ।००	०२.१०.५१.२०	27	भ.१६/१०तक, **मास शिवरात्री,** स.सि. दिन-रात
३०	मंगल	दि रा	मृगशिर	१८ ००	गंड	०८ ०२	०५ ४८	१९ १२	मिथुन	०२.११.४८.१६	28	स्नान,दान,श्राद्ध की आषाढ़ी अमावस्या, वंशवर्धक अमावस्या
३०	बुध	०६ ००	आर्द्रा	२१ ०५	वृद्धि	०९ ००	०५ ४८	१९ १२	मिथुन	०२.१२.४५.१०	29	स्नान,दान की अमावस्या पर्व

दि. २९/०६/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०२	०२	११	०१	११	०१	०९	००
१२	२५	२९	२९	१३	१४	२६	२५
४५	००	५५	१८	३०	०३	२०	२७
१०	००	०५	५९	००	०४	०८	५९
५६	७४५	४८	११०	०५	७०	०२	०३
५५	३५	०५	००	०५	५९	२८	११
आ	पुनर्व	रेवती	मृग	उ.भा	रोहि	धनि	भर
मा	मा	मा	मा	मा	मा	वक्री	वक्री

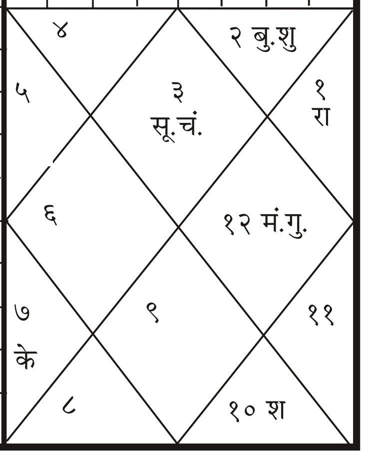

॥ विक्रम पंचांग ॥

मातरं पितरं पुत्रान् बान्धवानपि चातुरः।
अप्येतानभिशंकेत वैद्ये विश्वासमेति च।।
विसृजत्यात्मनात्मानं न चैनं परिशंकते।
तस्मात्पुत्रवदेनैनं पायलेदातुरं भिषक्।।

- आचार्य सुश्रुत

विक्रम सम्वत् 2079 ''राक्षस'' नाम सम्वत्सर

कलि सम्वत् 5123 • सृष्टि आरम्भ 1955885123

राजा - शनि • मंत्री - गुरू

आषाढ़ शुक्ल पक्ष — 30 जून से 13 जुलाई 2022 तक

श्रावण कृष्ण पक्ष — 14 जुलाई से 28 जुलाई 2022 तक

	मघा २९/३९ 03 जुलाई **चतुर्थी** श्री विनायक चतुर्थी व्रत श्री द्वारिकाधीश पाटोत्सव	विशाखा ०६/३० अनुराधा २९/०० 10 जुलाई **एकादशी** देवशयनी एकादशी (दाख) चातुर्मास व्रतारंभ	**रविवार**		शत १०/४० 17 जुलाई **चतुर्थी**	रोहिणी १५/५० 24 जुलाई **एकादशी** कामदा भागवत एकादशी (गोदुग्ध)
	पू.फा. दिन/रात 04 जुलाई **पंचमी** हेरा पंचमी	ज्योष्ठा २७/१९ 11 जुलाई **द्वादशी** सौम्य प्रदोषव्रत जया पार्वती व्रत प्रारंभ	**सोमवार**		पू.भा. ०९/३० 18 जुलाई **पंचमी** श्री महाकालेश्वर सवारी	मृगशिर १८/०० 25 जुलाई **द्वादशी** सोमप्रदोष व्रत श्री महाकालेश्वर सवारी
	पू.फा. ०७/०० 05 जुलाई **षष्ठी** स्कन्द षष्ठी, कुसुम्बा षष्ठी	मूल २४/०० 12 जुलाई **त्रयोदशी चतुर्दशी**	**मंगलवार**		उ.भा. ०९/०० 19 जुलाई **षष्ठी**	आर्द्रा १२/०९ 26 जुलाई **त्रयोदशी** मास शिवरात्री व्रत
	उ.फा. ०७/३९ 06 जुलाई **सप्तमी**	पू.षा. २३/२९ 13 जुलाई **पूर्णिमा** गुरू पूर्णिमा, व्यास पूजा	**बुधवार**		रेवती १०/०० 20 जुलाई **सप्तमी** कालाष्टमी	पुनर्वसु दिन/रात 27 जुलाई **चतुर्दशी**
पुनर्वसु २३/४० 30 जून **प्रतिपदा** नवीन चन्द्रदर्शन गुप्त नवरात्र विधान प्रारंभ	हस्त ०८/०० 07 जुलाई **अष्टमी** दुर्गाष्टमी		**गुरूवार**	उ.षा. १४/०४ 14 जुलाई **प्रतिपदा**	अश्वि ११/०४ 21 जुलाई **अष्टमी**	पुनर्वसु ०६/३० 28 जुलाई **अमावस्या** स्नानदान श्राध्द की हरियाली अमावस्या
पुष्य २६/०० 01 जुलाई **द्वितीया** मनोरथ द्वितीया श्री जगदीश रथ यात्रा (पुरी)	चित्रा ०७/२९ 08 जुलाई **नवमी** भड्डली नवमी गुप्त नवरात्र विधान पूर्ण		**शुक्रवार**	श्रवण १३/०० 15 जुलाई **द्वितीया**	भरणी १२/०० 22 जुलाई **नवमी**	
श्लेषा २८/२० 02 जुलाई **तृतीया**	स्वाती ०७/०० 09 जुलाई **दशमी** आशा दशमी		**शनिवार**	धनिष्ठा १२/१० 16 जुलाई **तृतीया** श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत अङ्गारकी चन्द्रोदय ०९/००	कृतिका १४/०० 23 जुलाई **दशमी**	

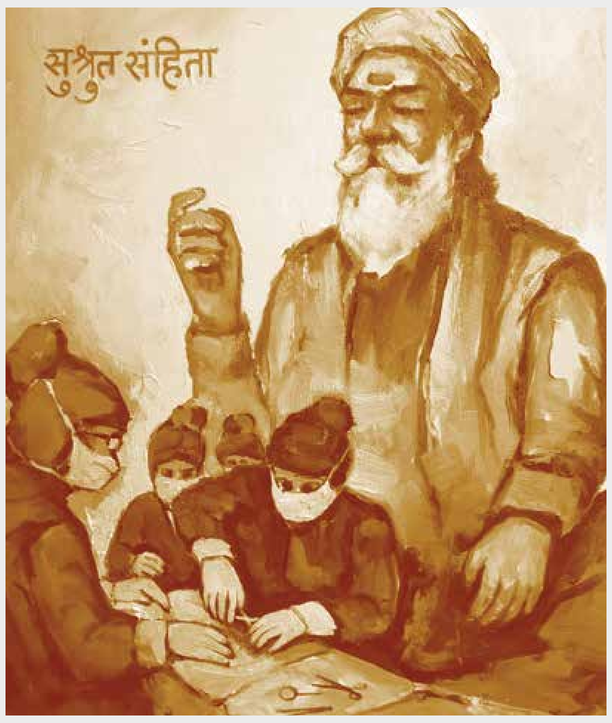

आचार्य सुश्रुत

(543 वि.पू., 600 ई.पू.)

आचार्य सुश्रुत प्राचीन भारत के प्रसिद्ध चिकित्साशास्त्री तथा शल्य चिकित्सक थे। इन्हें शल्य चिकित्सा का जनक माना जाता है। सुश्रुत ने प्रसिद्ध चिकित्सकीय ग्रंथ सुश्रुत संहिता की रचना की थी। इस ग्रंथ में शल्य क्रियाओं के लिए आवश्यक यंत्रों (साधनों) तथा शस्त्रों (उपकरणों) आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

सुश्रुत संहिता के प्रणेता आचार्य सुश्रुत का जन्म छठी शताब्दी ईसा पूर्व में काशी में हुआ था। सुश्रुत के जन्म के विषय में केवल अनुमान ही लगाये जा सकते है। उनका जन्म ऋषि विश्वामित्र के कुल में हुआ था और उनकी अद्भुत रचना सुश्रुत संहिता का रचना काल ईसा पूर्व छठी शताब्दी माना जाता है। दिवोवास नामक चिकित्सा शास्त्री काशी नरेश भी थे। उनका दूसरा नाम धन्वन्तरि भी था। उस काल में चिकित्सकों को धन्वन्तरि भी कहा जाता था। आचार्य सुश्रुत का जन्म भी ऐसे ही कुल में हुआ था। भारतीय चिकित्सा पद्धति में सुश्रुत संहिता को विशेष स्थान प्राप्त है। इसमें शल्य चिकित्सा के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से समझाया गया है। शल्य क्रिया के लिए सुश्रुत 125 तरह के उपकरणों का प्रयोग करते थे। ये उपकरण शल्य क्रिया की जटिलता को देखते हुए खोजे गये थे। इन उपकरणों में विशेष प्रकार के चाकू, सुइयाँ, चिमटियाँ आदि हैं। सुश्रुत ने 300 प्रकार की ऑपरेशन प्रक्रियाओं की खोज की। वैद्यकी क्षेत्र में त्वचारोपण- तंत्र के भी सुश्रुत अच्छे जानकार थे।

सुश्रुत ने अपने ग्रन्थ में शल्य चिकित्सा की आठ प्रक्रियाओं छेद्य, भेद्य, लेख्य, वेध्य, ऐष्य, अहार्य, विश्रव्य, व सीव्य का उल्लेख किया है। सुश्रुत संहिता के पहले हिस्से यानी पूर्व तंत्र में पाँच हिस्से हैं। जिन्हें सूत्रस्थान, निदानस्थान, शरीरस्थान, कल्पस्थान तथा चिकित्सास्थान के नाम से लिखा गया है । इसके 120 अध्याय हैं, जिनमें आयुर्वेद के चार प्राथमिक अंगों 'शल्यतंत्र', 'अगदतंत्र', 'रसायनतंत्र', 'वाजीकरण' के बारे में विस्तार से बताया गया है। महर्षि सुश्रुत के ग्रन्थ का दूसरा हिस्सा यानी उत्तर तंत्र को चौंसठ अध्यायों में बाँटा गया है। जिसमें आयुर्वेद के बाकी के चार अंगों 'शालाक्य', 'कौमार्यभृत्य', 'कायचिकित्सा' तथा 'भूतविद्या' के विषय का उल्लेख किया गया है। आयुर्वेदीय साहित्य में शरीररचना का जितना विशद विवेचन सुश्रुत संहिता में प्राप्त होता है उतना किसी अन्य ग्रन्थ में नहीं है। इसी कारण आयुर्वेद वाङ्मय में शारीरे सुश्रुतः श्रेष्ठः उक्ति प्रसिद्ध है।

श्री विक्रम सं.२०७९ आषाढ़ शुक्ल पक्ष

दि.३० जुन से १३ जुलाई २०२२ तक

सौम्यायन अयनांश २४/१०/२२ ग्रीष्म ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ.मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ.मि.	योग	समाप्ति घ.मि.	सूर्योदय घ.मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	दिनांक जून जुलाई	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
०१	गुरु	०८ ४०	पुनर्वसु	२३ ४०	ध्रुव	२० ४५	०५ ४९	१९ १२	कर्क १७।०५	०२.१३.४२.०५	30	**नवीन चंद्रदर्शन, गुप्त नवरात्र विधान प्रारंभ,** स.सि.०५/४७ से २३/४०तक
०२	शुक्र	११ ००	पुष्य	२६ ००	व्याघ	१० २०	०५ ४९	१९ १२	कर्क	०२.१४.३८.३९	01	मनोरथ द्वितीया,श्रीजगदीश रथ यात्रा(पुरी)
०३	शनि	१२ २०	श्लेषा	२८ २०	हर्षण	१० ३५	०५ ५०	१९ १२	सिंह २८।२०	०२.१५.३६.००	02	भ.२५/००से,
०४	रवि	१३ ४०	मघा	२९ ४०	वज्र	१० ५०	०५ ५०	१९ १२	सिंह	०२.१६.३२.५०	03	भ.१३/४०तक, विनायक चतुर्थी, श्रीद्वारिकाधीश पाटोत्सव
०५	सोम	१४ ३८	पू.फा	दि रा	सिध्दि	१० ००	०५ ५०	१९ १२	सिंह	०२.१७.२९.४५	04	**हेरा पंचमी,**
०६	मंगल	१५ ००	पू.फा	०७ ००	व्यति	०९ ३०	०५ ५१	१९ १२	कन्या१३।१०	०२.१८.२६.३६	05	**स्कन्द षष्ठी, कुसुम्बा षष्ठी,** सन्त टेऊराम जयंती
०७	बुध	१४ २०	उ.फा.	०७ ४०	वरिय	०९ ००	०५ ५१	१९ १२	कन्या	०२.१९.२३.३०	06	भ.१४/२०से २६/१०तक, विवस्वत सप्तमी
०८	गुरु	१४ ००	हस्त	०८ ००	परिघ	०९ ००	०५ ५१	१९ १२	तुला १९।४५	०२.२०.२०.२५	07	दुर्गाष्टमी, स.सि.०५/४९ से ०८/०० तक
०९	शुक्र	१३ १०	चित्रा	०७ ३०	शि/सिद्ध	०६ ०० ३१ ००	०५ ५२	१९ १२	तुला	०२.२१.१७.१९	08	**भड्डुली नवमी, गुप्त नवरात्र विधान पूर्ण**
१०	शनि	१२ ००	स्वाति	०७ ००	साध्य	२७ ००	०५ ५२	१९ १२	वृश्चि.२४।३९	०२.२२.१४.००	09	भ.२२/१५से, आशा दशमी, मन्वादि,
११	रवि	०९ ३०	विश/अनु	०६ ३० २९ ००	शुभ	२५ १०	०५ ५२	१९ १२	वृश्चिक	०२.२३.११.००	10	भ.०९/३०तक, देवशयनी एकादशी(दाख),चातुर्मास व्रतारंभ, षष्टपुर यात्रा
१२	सोम	०७ ५९	ज्येष्ठा	२७ २०	शुक्ल	२२ ४०	०५ ५२	१९ १२	धनु २७।२०	०२.२४.०८.१०	11	सौम्य प्रदोषव्रत, जया पार्वती व्रत प्रारंभ,
१३	मंगल	०६ ००	मूल	२४ ००	ब्रह्म	२० ००	०५ ५३	१९ १२	धनु	०२.२५.०५.००	12	भ.२८००से, चौमासी, चौदस वायु परीक्षा
१४	मंगल	२८ ००	चतुर्दशी तिथि का क्षय								00	
१५	बुध	२६ २०	पू.षा.	२३ ३०	ऐंद्र	१७ ३०	०५ ५३	१९ १२	मकर२८।४०	०२.२६.०१.५५	13	भ.१४/४०तक, स्नान,दान,व्रत एवं आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा,
												संन्यासियो का चातुर्यमास प्रारंभ कोकिला व्रत, गोवर्धन परिक्रमा,

दि. १३/०७/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०२	०९	००	०२	११	०१	०९	००
२६	०१	०९	२५	१५	२९	२५	२४
०१	००	४४	१३	२८	४०	४०	४१
५५	००	५७	२०	४५	४५	१०	१४
५६	७९०	४६	१२१	०३	७२	०३	०३
५६	३५	००	३२	३५	२३	३०	११
पुन	उ.षा	अश्ले	पुन	उ.भा	कृति	धनि	भर
मा	मा	मा	मा	मा	मा	वक्री	मा

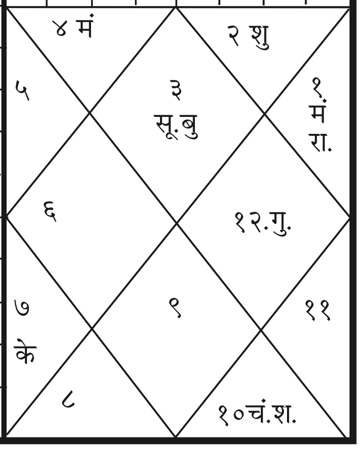

श्री विक्रम सं.२०७९ श्रावण कृष्ण पक्ष

दि. १४ जुलाई से २८ जुलाई २०२२ तक

सौम्या/याम्यायन अयनांश २४/१०/२४ वर्षा ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ.मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ.मि.	योग	समाप्ति घ.मि.	सूर्योदय घ.मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	दिनांक जुलाई	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
०१	गुरु	२२ ०५	उ.षा.	२२ ००	वैधृति	१५ ००	०५ ५४	१९ ११	मकर	०२.२६.५८.५१	14	अशून्यशयन व्रत,नक्त व्रतारंभ सम्पूर्ण मास(दाम्पत्य सुख हेतु),हरी सब्जी **A**
०२	शुक्र	२० ००	श्रवण	२० ३०	विष्कुंभ	११ ५०	०५ ५४	१९ ११	मकर	०२.२७.५५.४७	15	हिंडोला प्रारंभ जया पार्वती व्रत का जागरण, स.सि.०५/५२ से २०/३० तक
०३	शनि	१९ ४०	धनिष्ठा	१९ ००	प्री/आयु	०८ १० २९ १०	०५ ५५	१९ ११	कुंभ ०७।४५	०२.२८.५२.४४	16	भ.०७/५०से १९/४०तक, श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत, अङ्गारकी चंद्रोदय ९/०, **B**
०४	रवि	१७ ०५	शतभि	१८ ००	सौभाग्य	२६ ०५	०५ ५५	१९ ११	कुम्भ	०२.२९.४९.४१	17	शिवजी का विशेष पूजन व व्रत, सायन सूर्य सिंह में १८/१५
०५	सोम	१४ ४०	पू.भा.	१७ ४०	शोभन	२१ १०	०५ ५६	१९ १०	मीन ११।३०	०३.००.४६.३९	18	मोना पंचमी,नागपंचमी(बंगाल),**श्रीमहाकालेश्वर सवारी,सूर्य याम्यायन में**
०६	मंगल	१२ २०	उ.भा.	१७ ००	अति	१९ ००	०५ ५६	१९ १०	मीन	०३.०१.४३.३७	19	भ.१२/२०से२३/१०तक, केर पूजा(त्रिपुरा), **B** पंचक प्रा.७/०५से
०७	बुध	१० ००	रेवती	१७ ०५	सुकर्मा	१६ २०	०५ ५६	१९ १०	मेष १७।०५	०३.०२.४३.३६	20	कालाष्टमी, पंचक १७/०५तक
०८	गुरु	१० ०५	अश्विनी	१८ ००	धृति	१६ ४०	०५ ५७	१९ १०	मेष	०३.०३.३७.३५	21	हरकाली पूजा(उत्तराखण्ड) ,स.सि.०५/५५ से १८/०० तक
०९	शुक्र	१० ३०	भरणी	१८ ५०	शूल	१७ १०	०५ ५७	१९ ०९	वृष.२५।१०	०३.०४.३४.३६	22	भ.२३/०० से **A श्रावण में शाक का परित्याग करें**
१०	शनि	११ २०	कृतिका	२० ००	गंड	१७ ५०	०५ ५८	१९ ०९	वृषभ	०३.०५.३१.३६	23	भ.११/२०तक
११	रवि	१३ ००	रोहिणी	२१ ५०	वृद्धि	१९ ४०	०५ ५८	१९ ०८	वृषभ	०३.०६.२८.३८	24	कामदा भागवत एकादशी व्रत वैष्णव(गोदुग्ध),
१२	सोम	१५ ०५	मृगशिर	२४ ००	ध्रुव	१९ ४०	०५ ५८	१९ ०८	मिथु.१०।३०	०३.०७.२५.४०	25	सोमप्रदोषव्रत, **श्री महाकालेश्वर सवारी,** स.सि.०५/५६ से २४/०० तक
१३	मंगल	१७ ५०	आर्द्रा	२७ ५०	व्याघा	२० १०	०५ ५८	१९ ०८	मिथुन	०३.०८.२२.४४	26	भ.१७/५०से,**मास शिवरात्री व्रत,(श्रवण मास में शिवरात्री महोत्सव)**
१४	बुध	२० १०	पुनर्वसु	दि रा	हर्षण	२१ ००	०५ ५८	१९ ०७	कर्क २९।१०	०३.०९.१९.४८	27	भ.०७/३०तक ,
३०	गुरु	२२ ००	पुनर्वसु	०६ ३०	वज्र	२२ ०५	०५ ५९	१९ ०७	कर्क	०३.१०.१६.५३	28	स्नान,दान,श्राद्ध की हरियाली अमावस्या, दर्श अमावस्या, चितलगी
												अमावस्या (उड़ीसा) स.सि. दिन-रात

दि.२८/०७/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०३	०३	००	०३	११	०२	०९	००
१०	१०	२०	२२	१५	१८	२४	२३
१६	००	०५	००	३८	०३	३५	५७
५३	००	२०	०४	०२	०३	१५	१९
५७	७९०	४४	१००	०१	७२	०४	०३
०६	३५	०५	००	०९	५३	१०	११
पुष्य	पुष्य	भरणी	अश्ले	उ.भा	आर्द्रा	धनि	भरणी
मा	मा	मा	मा	मा	मा	वक्री	वक्री

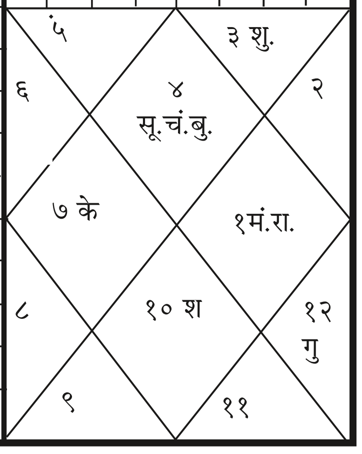

विक्रम पंचांग

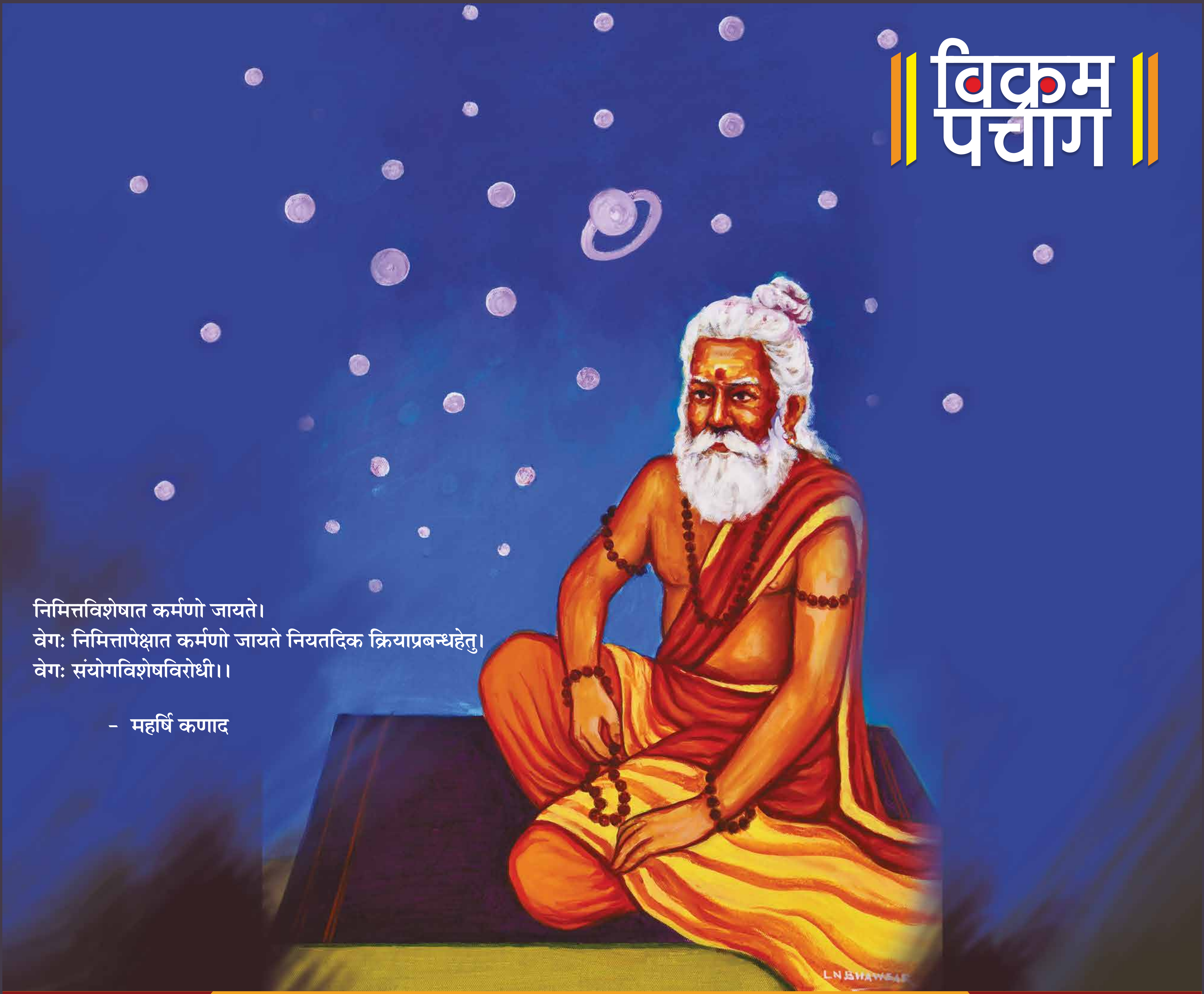

निमित्तविशेषात कर्मणो जायते।
वेगः निमित्तापेक्षात कर्मणो जायते नियतदिक क्रियाप्रबन्धहेतु।
वेगः संयोगविशेषविरोधी।।

– महर्षि कणाद

श्रावण शुक्ल पक्ष
29 जुलाई से 12 अगस्त 2022 तक

विक्रम सम्वत् 2079 ''राक्षस'' नाम सम्वत्सर
कलि सम्वत् 5123 • सृष्टि आरम्भ 1955885123
राजा – शनि • मंत्री – गुरू

भाद्रपद कृष्ण पक्ष
13 अगस्त से 27 अगस्त 2022 तक

	मघा १४/०० 31 जुलाई तृतीया हरियाली तीज	अनुराधा १३/५० 07 अगस्त दशमी	रविवार		पू.भा. २५/२० 14 अगस्त द्वितीया तृतीया कज्जली तीज, सतुआ तीज	रोहिणी ०७/०५ 21 अगस्त दशमी गोगा नवमी
	पू.फा. १५/३० 01 अगस्त चतुर्थी श्री विनायक चतुर्थी व्रत श्री महाकालेश्वर सवारी	ज्येष्ठा १२/०० 08 अगस्त एकादशी श्री महाकालेश्वर सवारी पवित्रा एकादशी व्रत (सिंघाड़ा)	सोमवार		उ.भा. २५/०० 15 अगस्त चतुर्थी स्वतंत्रता दिवस श्री महाकालेश्वर सवारी श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत–चन्द्रोदय ०९/१०	मृगशिर ०८/५० 22 अगस्त एकादशी श्री महाकालेश्वर सवारी लोकमान्य तिलक पु.ति.
	उ.फा. १६/४० 02 अगस्त पंचमी नाग पंचमी नागचंद्रेश्वर दर्शन (उज्जैन)	मूल ११/०५ 09 अगस्त द्वादशी भौमप्रदोषव्रत	मंगलवार		रेवती २५/२० 16 अगस्त पंचमी	आर्द्रा १०/३० 23 अगस्त एकादशी अजा एकादशी व्रत(खारक)
	हस्त १६/३४ 03 अगस्त षष्ठी स्कन्द षष्ठी, कुसुम्बा षष्ठी	पू.षा. ०९/०७ 10 अगस्त त्रयोदशी	बुधवार		अश्वि २६/५० 17 अगस्त षष्ठी	पुनर्वसु १३/०० 24 अगस्त द्वादशी प्रदोष व्रत
	चित्रा १६/०० 04 अगस्त सप्तमी शीतला सप्तमी गोस्वामी तुलसीदास जयंती	उ.षा. ०७/५० श्रवण ३१/०० 11 अगस्त चतुर्दशी रक्षाबंधन श्रावणी उपाकर्म श्री गायत्री जयंती	गुरूवार		भरणी २८/३० 18 अगस्त सप्तमी हलषष्ठी	पुष्य १५/०२ 25 अगस्त त्रयोदशी मास शिवरात्री व्रत
पुष्य २६/२९ 29 जुलाई प्रतिपदा	स्वाती १५/१९ 05 अगस्त अष्टमी दुर्गाष्टमी	धनिष्ठा २८/१० 12 अगस्त पूर्णिमा स्नान,दान, जप की पूर्णिमा	शुक्रवार		कृतिका २९/०० 19 अगस्त अष्टमी	श्लेषा १७/१० 26 अगस्त चतुर्दशी
श्लेषा २५/०० 30 जुलाई द्वितीया नवीन चन्द्रदर्शन	विशाखा १४/१९ 06 अगस्त नवमी		शनिवार	शत २५/३० 13 अगस्त प्रतिपदा	रोहिणी दिन/रात 20 अगस्त नवमी श्री कृष्णजन्माष्टमी व्रत	मघा १९/५० 27 अगस्त अमावस्या कुशग्रहणी अमावस्या शनिश्चरी अमावस्या

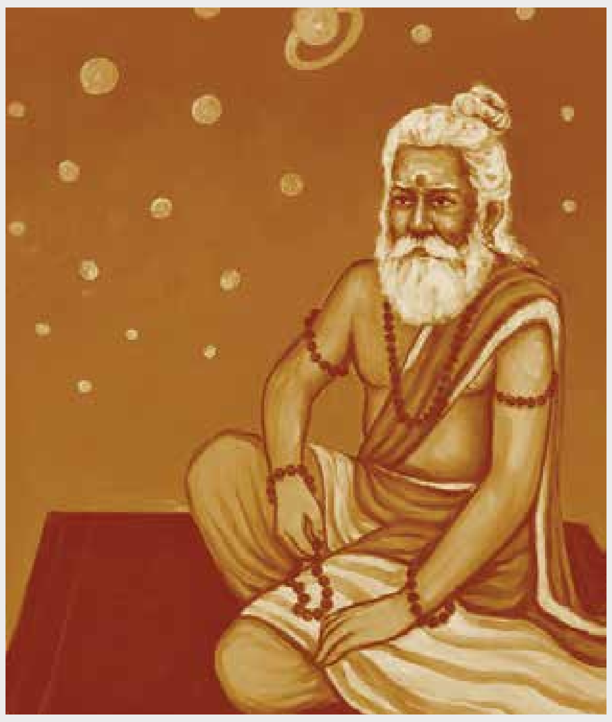

महर्षि कणाद

(543 वि.पू., 600 ई.पू.)

महान परमाणुशास्त्री महर्षि कणाद छठी सदी ईसा पूर्व गुजरात के प्रभास क्षेत्र द्वारका के निकट जन्मे थे। उन्होंने वैशेषिक दर्शन नामक एक पुस्तक की रचना की। दर्शनशास्त्र वह ज्ञान है जो परम सत्य और प्रकृति के सिद्धांतों और उनके कारणों की विवेचना करता है। माना जाता है कि परमाणु तत्व का सूक्ष्म विचार सर्वप्रथम इन्होंने किया था इसलिए इन्हीं के नाम पर परमाणु का एक नाम कण पड़ा। उन्हें विज्ञान सीखने और परमाणु ऊर्जा के बारे में खोज में बहुत रुचि थी। आचार्य कणाद के अनुसार परमाणु सूक्ष्म की वस्तुएँ हैं जिन्हें अविनाशी माना जाता है। महर्षि कणाद के अनुसार पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, दिक, काल, मन और आत्मा इन्हें जानना चाहिए। इस परिधि में जड़-चेतन सारी प्रकृति व जीव आ जाते हैं। वैशेषिक सूत्रों में ईश्वर का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। कणाद पृथ्वी, जल, तेज और वायु के नित्य परमाणुओं के संयोग से जगत की उत्पत्ति मानते हैं। परमाणु स्वतः शांत तथा निष्पद अवस्था में रहते हैं। किंतु प्राणियों के अदृष्ट के द्वारा परमाणुओं तथा मन आदि में स्पंदन होता है जिससे सृष्टि का आरंभ होता है (5. 2. 13)। ईसा से 600 वर्ष पूर्व ही कणाद मुनि ने परमाणुओं के संबंध में जिन धारणाओं को उजागर किया, उनसे आश्चर्यजनक रूप से आधुनिक पश्चिमी वैज्ञानिकों से बहुत साम्य रखती है। कणाद ने लगभग 2400 वर्ष पूर्व ही पदार्थ की रचना सम्बन्धी सिद्धान्त को उजागर कर दिया था। महर्षि कणाद ने न केवल परमाणुओं को तत्वों की ऐसी लघुतम अविभाज्य इकाई माना जिनमें इस तत्व के समस्त गुण उपस्थित होते हैं अपितु उसको 'परमाणु'नाम भी उन्होंने ही दिया तथा यह भी कहा कि परमाणु कभी स्वतंत्र नहीं रह सकते। महर्षि कणाद ने कहा कि एक प्रकार के दो परमाणु संयुक्त होकर 'द्विणुक' का निर्माण कर सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि अलग-अलग पदार्थों के परमाणु भी आपस में संयुक्त हो सकते हैं। वैशेषिक सूत्र में परमाणुओं को सतत गतिशील भी माना गया है तथा द्रव्य के संरक्षण की भी बात कही गयी है। ये बातें भी पश्चिम के विद्वानों द्वारा यहीं से ली गयी हैं। ब्रह्मण्ड का विश्लेषण परमाणु विज्ञान की दृष्टि से सर्वप्रथम एक शास्त्र के रूप में सूत्रबद्ध ढंग से महर्षि कणाद ने आज से हजारों वर्ष पूर्व अपने वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित किया था। कुछ मामलों में महर्षि कणाद का प्रतिपादन आज के पश्चिमी विज्ञान से भी आगे जाता है। महर्षि कणाद कहते हैं, द्रव्य को छोटा करते जायेंगे तो एक स्थिति ऐसी आयेगी जहाँ से उसे और छोटा नहीं किया जा सकता, क्योंकि यदि उससे अधिक छोटा करने का प्रयत्न किया तो उसके पुराने गुणों का लोप हो जायेगा। दूसरी बात वे कहते हैं कि द्रव्य की दो स्थितियाँ हैं- एक आणविक और दूसरी महत् आणविक स्थिति सूक्ष्मतम है तथा महत् यानी विशाल। दूसरे, द्रव्य की स्थिति एक समान नहीं रहती है। महर्षि कणाद ने परमाणु को ही समझाने में अपना जीवन समर्पित कर दिया, इसे ही सृष्टि का मूल तत्व माना। कहा जाता है कि जीवन के अंत में उनके शिष्यों ने उनकी अंतिम अवस्था में प्रार्थना की कि कम से कम इस समय तो परमात्मा का नाम लें, तो कणाद ऋषि के मुख से निकला पीलवः पीलवः पीलवः अर्थात् परमाणु, परमाणु, परमाणु।

श्री विक्रम सं.२०७९ श्रावण शुक्ल पक्ष

दि.२९ जुलाई से १२ अग.२०२२ तक

याम्यायन — अयनांश २४/१०/२६ — वर्षा ऋतु

यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	सूर्योदय घ.मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	दिनांक जुलाई अगस्त	
०१	शुक्र	२३ ३०	पुष्य	०९ ३०	सिध्दि	१९ ००	०६ ००	१९ ०६	कर्क	०३.११.१३.५८	29	आदित्य पूजा, मेलाछिन्नमस्तका (चिन्तपूर्णा), **श्रीमहाकालेश्वर सवारी**
०२	शनि	२५ ००	श्लेषा	११ ४०	व्यति	१९ ४०	०६ ०१	१९ ०६	सिंह ११ ।४०	०३.१२.११.०५	30	नवीन चंद्रदर्शन, श्रृंगार द्वितीया **A** पूजन स्वर्ण गौरी व्रत
०३	रवि	२६ ४०	मघा	१४ ००	वरिय	१९ २०	०६ ०१	१९ ०५	सिंह	०३.१३.०८.१५	31	मधुश्रवा तृतीया, हरियाली तीज, जीवंतिका पूजन, महालक्ष्मी स्थापना व **A**
०४	सोम	२८ ००	पू.फा	१५ ३०	परिघ	१९ ००	०६ ०१	१९ ०५	कन्या२१ ।५०	०३.१४.०५.२५	01	भ.१५/० से २८/०तक, **विनायक चतुर्थी, श्री महाकालेश्वर सवारी,**
०५	मंगल	२८ ४०	उ.फा.	१६ ४०	शिव	१८ ३६	०६ ०२	१९ ०४	कन्या	०३.१५.०२.३१	02	नागपंचमी, जागृतगौरी पंचमी, वर्णषष्ठी, **नागचंद्रेश्वर दर्शन**(अवन्तिका),
०६	बुध	२८ ०५	हस्त	१६ ३५	सिद्ध	१७ ४०	०६ ०२	१९ ०३	तुला २८ ।१५	०३.१५.५९.४२	03	वर्ण षष्ठी, श्रियाल षष्ठी, लुंठन षष्ठी, स्कन्द षष्ठी, कल्की जं.
०७	गुरु	२७ ३०	चित्रा	१६ ००	साध्य	१६ २०	०६ ०३	१९ ०३	तुला	०३.१६.५६.५४	04	भ.२७/३०से, शीतला सप्तमी, गोस्वामी तुलसीदास जं.,
०८	शुक्र	२७ ००	स्वाति	१५ २०	शुभ	१५ ०५	०६ ०३	१९ ०२	तुला	०३.१७.५३.५९	05	भ.१४/४८ तक, दुर्गाष्टमी, गुरु वक्री १०/००
०९	शनि	२६ ००	विशाखा	१४ २०	शुक्ल	१२ ५९	०६ ०४	१९ ०१	वृश्चि.०८ ।३५	०३.१८.५१.२०	06	नकुल नवमी
१०	रवि	२४ ००	अनुराधा	१३ ५०	ब्रह्म	११ ००	०६ ०४	१९ ००	वृश्चिक	०३.१९.४८.३५	07	वरद लक्ष्मीव्रत, **B** पवित्रार्पण जीवंतिका, **श्रीमहाकालेश्वर सवारी**
११	सोम	२२ ००	ज्येष्ठा	१२ ००	ऐंद्र	०९ ००	०६ ०४	१८ ५९	धनु १२ ।००	०३.२०.४५.५५	08	भ.११/०से २२/०तक, पवित्रा(पुत्रदा) एकादशी व्रत, झूलन यात्रा(सिंघाड़ा), **B**
१२	मंगल	१९ ३०	मूल	११ ०५	वैधृति	०७ ०५	०६ ०५	१८ ५८	धनु	०३.२१.४३.१३	09	**भौमप्रदोषव्रत,** पवित्रारोपणं, पवित्रा बारस, दमोदर द्वादशी,
१३	बुध	१६ ०५	पू.षा.	०९ ०७	विष/प्री	०६ ०२ २८ २०	०६ ०६	१८ ५८	मकर१४ ।५०	०३.२२.४०.३२	10	आखेटक त्रयोदशी,
१४	गुरु	१३ ०२	उषा/श्रव	०७ ५० ३१ ००	आयु	२५ ००	०६ ०७	१८ ५७	मकर	०३.२३.३७.५३	11	भ.१३/२से२३/३२तक,**रक्षाबंधन,**व्रत की पूर्णिमा,ऋषितर्पण,शुक्लयजुर्वेदीय **C**
१५	शुक्र	१० ०१	धनिष्ठा	२८ १०	सौभाग्य	२९ ३०	०६ ०७	१८ ५७	कुंभ १७ ।१०	०३.२४.३५.१५	12	स्नान,दान,जप की पूर्णिमा, पंचक प्रा.१७/१०तक
												C तैतरीय व माध्यन्दिनी श्रावणी उपाकर्म, श्रीगायत्री जं०, **संस्कृत दिवस**

दि. १२/०८/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०३	१०	०१	०४	११	०३	०९	००
२४	०७	००	१५	१५	०८	२३	२२
३५	००	०६	५७	४०	००	२७	५४
१५	००	३५	०५	००	००	०५	४४
५७	७९०	४३	५७	०२	७३	०४	०३
२४	३५	०२	२४	५३	२४	३०	११
अ	शत	कृति	पू.फ	उ.भ	पुष्य	धनि	भर
मा	मा	मा	मा	वक्री	मा	वक्री	मा

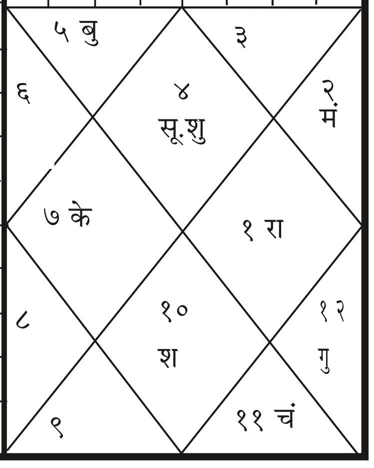

श्री विक्रम सं.२०७९ भाद्रपद कृष्ण पक्ष

दि.१३ अगस्त से २७ अगस्त २०२२ तक

याम्यायन — अयनांश २४/१०/२८ — वर्षा ऋतु

यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	दिनांक अगस्त	
०१	शनि	०८ ०५	शत्भिष	२५ ३०	शोभन	१८ ००	०५ ५३	१९ १२	कुम्भ	०३.२५.३२.३९	13	**भाद्रपद मास से दही का परित्याग करें,**
०२	रवि	०६ ३०	पू.भा.	२५ २०	अति	१५ ०५	०५ ५४	१९ ११	मीन १९ ।३५	०३.२६.३०.०४	14	भ.१६/४५ से २७/००तक, **कज्जली तीज, सतुआ तीज,** स.सि. २५/२० से
०३	रवि	२७ ००	तृतीया तिथि का क्षय								00	**A श्रीमहाकालेश्वर सवारी,**स.सि.०५/५२तक
०४	सोम	२५ १०	उ.भा.	२५ ००	सुकर्मा	१० २०	०५ ५४	१९ ११	मीन	०३.२७.२७.३१	15	श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत, चंद्रोदय ०९/१०, भारतीय स्वतन्त्रता दिवस, **A**
०५	मंगल	२४ ५०	रेवती	२५ २०	धृति/शूल	०६ ५० २९ ००	०५ ५५	१९ ११	मेष २५ ।२०	०३.२८.२५.००	16	**नागपंचमी,** रक्षापंचमी,मनसा पूजा, पंचक २५/२०तक, स.सि.२५/२० से
०६	बुध	२४ ००	अश्विनी	२६ ५०	गंड	२८ ०५	०५ ५५	१९ ११	मेष	०३.२९.२२.२९	17	स.सि.०५/५३ तक
०७	गुरु	२४ २०	भरणी	२८ ३०	वृद्धि	२८ १०	०५ ५६	१९ १०	मेष	०४.००.२०.२०	18	भ.२४/००से, रांधन छट, हलषष्ठी, चन्द्रषष्ठी, सायन सूर्य कन्या में १२/१०
०८	शुक्र	२४ ५०	कृतिका	२९ ००	ध्रुव	२६ ४०	०५ ५६	१९ १०	वृष.१० ।३७	०४.०१.१७.३३	19	भ.१२/१०तक, शीतला सप्तमी,
०९	शनि	२६ ००	रोहिणी	दि रा	व्याघा	२४ ३०	०५ ५६	१९ १०	वृषभ	०४.०२.१५.१७	20	**जन्माष्टमी व्रत,**
१०	रवि	२८ ०५	रोहिणी	०७ ०५	हर्षण	२५ ००	०५ ५७	१९ १०	मिथु.२० ।००	०४.०३.१२.४३	21	गोगा नवमी
११	सोम	दि रा	मृगशिर	०८ ५०	वज्र	२४ ३०	०५ ५७	१९ ०९	मिथुन	०४.०४.१०.२१	22	भ.१५/००से२८/५तक, लोकमान्य तिलक पुण्य तिथि,स.सि.५/५५ से८/५०तक
११	मंगल	०६ १५	आर्द्रा	१० ३०	सिद्धि	२४ ०५	०५ ५८	१९ ०९	मिथुन	०४.०५.०८.००	23	**अजा एकादशी व्रत** (खारक),संस्कृत दिवस,**श्रीमहाकाल सवारी**
१२	बुध	०८ ००	पुनर्वसु	१३ ००	व्यति	२५ ००	०५ ५८	१९ ०८	कर्क ०६ ।३५	०४.०६.०५.४०	24	**अजा एकादशी व्रत** (वैष्णव), **गोवत्स द्वादशी**,
१३	गुरु	१० ००	पुष्य	१५ ०२	वरिया	२६ १०	०५ ५८	१९ ०८	कर्क	०४.०७.०३.२५	25	**प्रदोषव्रत,** स.सि.०५/५६ से १५/०२तक
१४	शुक्र	११ ४०	श्लेषा	१७ १०	परिघ	२७ ००	०५ ५८	१९ ०८	सिंह १७ ।१०	०४.०८.०१.१०	26	भ.००/१०से २३/००तक, मास शिवरात्रीव्रत, **B** लोहार्गल स्नान
३०	शनि	१३ ००	मघा	१९ ५०	शिव	२८ ४०	०५ ५८	१९ ०७	सिंह	०४.०८.५८.५६	27	स्नान,दान की **कुशग्रहणी अमावस्या, शनिश्चरी अमावस्या,** श्री शक्ति पूजा**B**

दि. २७/०८/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०४	०४	०१	०५	११	०३	०९	००
०८	१८	०७	०३	१४	२६	२२	२२
५८	००	३५	३५	३०	०५	२०	०६
५६	००	५०	००	१०	१०	०५	५९
५७	७९०	४०	६९	०५	७४	०४	०३
४८	३५	०३	१५	२०	००	२०	११
भर	पू.फा	कृति	उ.फा	उ.भा	अ.	धनि	कृति
मा	मा	मा	मा	वक्री	मा	वक्री	वक्री

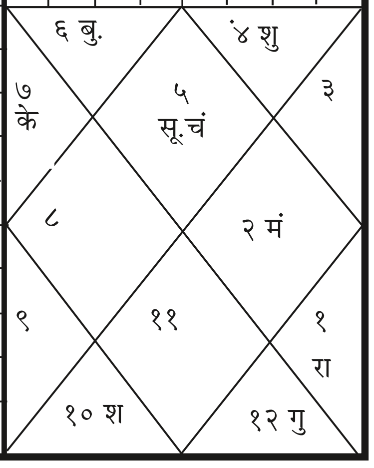

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।।

– आचार्य चरक

विक्रम पचांग

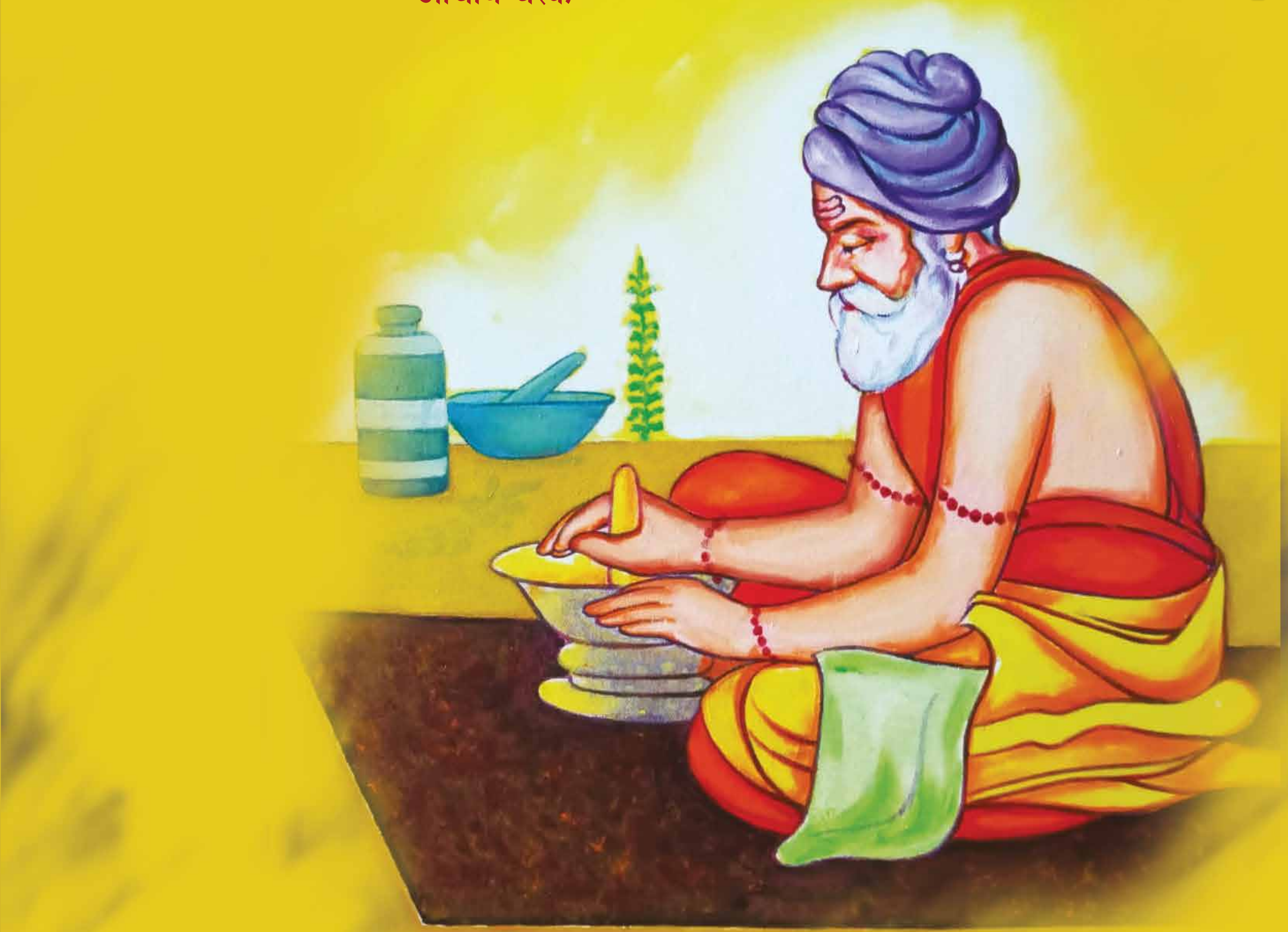

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

28 अगस्त से 10 सितम्बर 2022 तक

विक्रम सम्वत् 2079 ''राक्षस'' नाम सम्वत्सर

कलि सम्वत् 5123 • सृष्टि आरम्भ 1955885123

राजा – शनि • मंत्री – गुरू

आश्विन कृष्ण पक्ष

11 सितम्बर से 25 सितम्बर 2022 तक

पू.फा. २९/४० 28 अगस्त प्रतिपदा नवीन चन्द्रदर्शन	ज्येष्ठा २०/३० 04 सितम्बर अष्टमी	रविवार	शत २५/३० 11 सितम्बर प्रतिपदा प्रतिपदा का श्राद्ध	रोहिणी दिन/रात 18 सितम्बर अष्टमी अशोकाष्टमी	मघा १९/५० 25 सितम्बर अमावस्या स्नान दान व श्राद्ध की सर्व पितृ अमावस्या
उ.फा. २३/१० 29 अगस्त द्वितीया रामदेव बीज पीररामदेव जी का मेला	मूल ११/०५ 05 सितम्बर नवमी दशमी तेजा दशमी	सोमवार	पू.भा. २५/२० 12 सितम्बर द्वितीया द्वितीया का श्राद्ध	रोहिणी ०७/०५ 19 सितम्बर नवमी नवमी का श्राद्ध सौभागवतीयों का श्राद्ध	
हस्त २३/४० 30 अगस्त तृतीया हरितालिका तीजव्रत वराह जयंती	पू.षा. १६/५७ 06 सितम्बर एकादशी डोल ग्यारस जलझूलनी एकादशी व्रत (कमल काकड़ी)	मंगलवार	उ.भा. २५/०० 13 सितम्बर तृतीया तृतीया का श्राद्ध श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय ०९/००	मृगशिर ०८/५० 20 सितम्बर दशमी दशमी का श्राद्ध	
चित्रा २६/३० 31 अगस्त चतुर्थी श्री गणेश चतुर्थी व्रत	उ.षा. १४/४० 07 सितम्बर द्वादशी	बुधवार	रेवती २५/२० 14 सितम्बर चतुर्थी चतुर्थी का श्राद्ध	आर्द्रा १०/३० 21 सितम्बर एकादशी इन्द्रिरा एकादशी व्रत(कलाकन्द)	
स्वाती २३/०० 01 सितम्बर पंचमी ऋषिपंचमी सप्तऋषि अरून्धती पूजा	श्रवण १३/३० 08 सितम्बर त्रयोदशी प्रदोष व्रत	गुरूवार	अश्वि २६/५० 15 सितम्बर पंचमी पंचमी का श्राद्ध	पुनर्वसु १३/०० 22 सितम्बर द्वादशी द्वादशी का श्राद्ध सन्यासियों का श्राद्ध	
विशाखा २२/२० 02 सितम्बर षष्ठी सूर्य षष्ठी बलदेव जयंती	धनिष्ठा १२/२० 09 सितम्बर चतुर्दशी अनंतचतुर्दशी व्रत पार्थिव गणेश विसर्जन	शुक्रवार	भरणी २८/३० 16 सितम्बर षष्ठी चन्द्रषष्ठी का श्राद्ध	पुष्य १५/०२ 23 सितम्बर त्रयोदशी प्रदोष व्रत	
अनुराधा २१/३० 03 सितम्बर सप्तमी संतान सप्तमी ललीता सप्तमी	शत ०९/४० 10 सितम्बर पूर्णिमा श्राद्ध प्रारंभ	शनिवार	कृतिका २९/०० 17 सितम्बर सप्तमी सप्तमी का श्राद्ध कालाष्ठमी, काला जयंती	श्लेषा १७/१० 24 सितम्बर चतुर्दशी चतुर्दशी का श्राद्ध मास शिवरात्री व्रत	

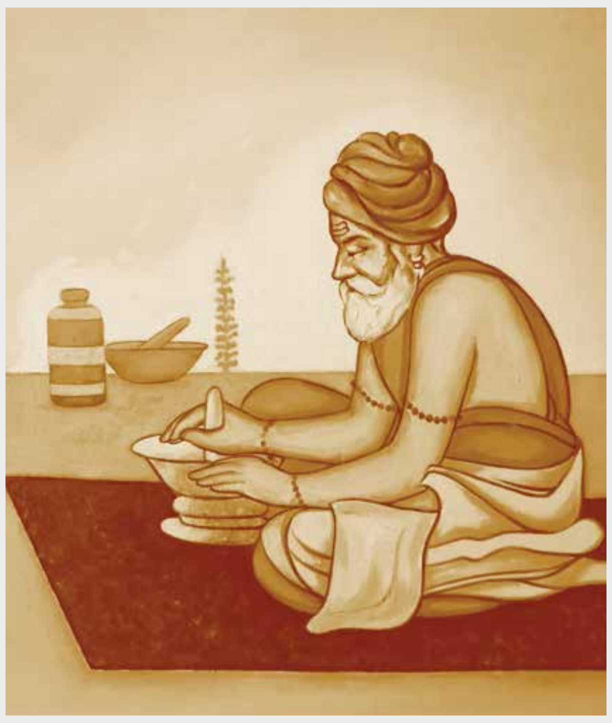

आचार्य चरक

(243 वि.पू., 300 ई.पू. लगभग)

आयुर्वेदीय चरक संहिता के महान ग्रन्थकर्ता आचार्य चरक को विशुद्ध नामक ऋषि के पुत्र तथा अनंत संज्ञक नामक नाग का अवतार माना जाता है। उपलब्ध आयुर्वेदीय संहिताओं में चरक संहिता सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। इसमें चिकित्सा विज्ञान के मौलिक तत्वों का जितना उत्तम विवेचन किया गया है उतना संभवतः और कहीं भी प्राप्त नहीं है। चरक संहिता का रचनाकाल उपनिषदों के बाद और बुद्ध के पूर्व का माना जाता है। चरक की गणना भारतीय औषधि विज्ञान के मूल प्रवर्तकों में होती है। दो हजार वर्ष पूर्व चरक ने चिकित्सा संबंधी विचारों को एकत्र कर नये सिद्धांतों को प्रतिपादित किया तथा उन्हें चिकित्सा शिक्षा के योग्य बनाया। आठ भागों में विभाजित इस ग्रन्थ में 120 अध्याय तथा चरक द्वारा प्रतिपादित आयुर्वेद के लगभग सभी सिद्धांत शामिल हैं। इसमें व्याधियों के उपचार तो बताये ही गये हैं साथ ही अनेक बार दर्शन और अर्थशास्त्र के विषयों का भी उल्लेख है। यह सर्वविदित है कि आयुर्वेद को जानने और समझने के लिए आचार्य चरक के चिकित्सा सिद्धांतों को समझना बहुत जरूरी है। इसलिए आयुर्वेद के चिकित्सकों के बीच आचार्य चरक महत्व सबसे ज्यादा है। चरक आयुर्वेद के पहले चिकित्सक थे, जिन्होंने भोजन के पाचन और रोगप्रतिरोधक क्षमता की अवधारणा को दुनिया के सामने रखा। आचार्य चरक और आयुर्वेद का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि एक का स्मरण होने पर दूसरे का अपने आप स्मरण हो जाता है। आचार्य चरक केवल आयुर्वेद के ज्ञाता ही नहीं थे परन्तु सभी शास्त्रों के विशेषज्ञ थे। उनका दर्शन एवं विचार सांख्य दर्शन एवं वैशेषिक दर्शन का प्रतिनिधित्व करता है। आचार्य चरक ने शरीर को वेदना, व्याधि का आश्रय माना है और आयुर्वेद शास्त्र को मुक्तिदाता कहा है। आरोग्यता को महान सुख की संज्ञा दी है कहा है कि आरोग्यता से बल, आयु, सुख, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है। आयुर्वेद की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाने वाली चरक संहिता में भारत के अलावा यवन, शक, चीनी आदि जातियों के खानपान और जीवन-शैली का भी उल्लेख मिलता है। आठवीं शताब्दी में इस ग्रन्थ का अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ और यह शास्त्र पश्चिमी देशों तक पहुँचा।

श्री विक्रम सं.२०७९ भाद्रपद शुक्ल पक्ष

दि.२८ अगस्त से १० सितं.२०२२ तक

याम्यायन अयनांश २४/१०/३० वर्षा ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ.मि.	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	दिनांक सितंबर	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
०१	रवि	१३ ५०	पू.फा.	२९ ४०	सिद्ध	२६ ४०	०६ १२	१८ ४४	कन्या २८००	०४.०९.५६.४५	28	**नवीन चंद्रदर्शन,** मोनव्रत प्रा.,स.सि.२९/४० से A पार्थिव श्रीगणेश स्थापना,
०२	सोम	१४ ५९	उ.फा.	२३ १०	साध्य	२६ ००	०६ १२	१८ ४३	कन्या	०४.१०.५४.३५	29	पीर रामदेव जी का मेला प्रां०, रामदेव बीज , स.सि.०६/१० तक
०३	मंगल	१४ ३०	हस्त	२३ ५०	शुभ	२५ ००	०६ १२	१८ ४२	कन्या	०४.११.५२.२८	30	भ.२५/४५से, **हरितालिका तीजव्रत,** वराह जयंती, **सामवेदियों का उपाकर्म,**
०४	बुध	१४ ००	चित्रा	२३ ३०	शुक्ल	२३ ३०	०६ १२	१८ ४१	तुला ११ ।४०	०४.१२.५०.२२	31	भ.१४/००तक, **श्रीगणेश चतुर्थीव्रत**, कलंक चतुर्थी,चन्द्रदर्शन निषेध, A
०५	गुरु	१३ २०	स्वाति	२३ ००	ब्रह्म	२१ १५	०६ १३	१८ ४०	तुला	०४.१३.४८.१८	01	**ऋषिपंचमी,** रक्षापंचमी,गुरूपंचमी, **सप्तऋषि अरून्धती पूजा,**
०६	शुक्र	१२ ३५	विशाख	२२ २०	ऐंद्र	१९ ००	०६ १३	१८ ४०	वृश्चि.१६ ।३०	०४.१४.४६.१६	02	सूर्यषष्ठी, चम्पाषष्ठी,स्कन्द, मंथन षष्ठी, **बलदेव जयंती,**
०७	शनि	१० ००	अनुराधा	२१ ३०	वैधृति	१६ ४५	०६ १३	१८ ३९	वृश्चिक	००.१५.४४.१०	03	भ.१०/००से२१/०तक, ललिता सप्तमी, **संतान सप्तमी,**
०८	रवि	०८ ४०	ज्येष्ठा	२० ३०	विष्कुंभ	१४ ००	०६ १४	१८ ३८	धनु २० ।३०	०४.१६.४२.१८	04	ज्यैष्ठा गौरी पूजा, दुर्गाष्टमी, दुर्वा, राधाष्टमी, धरोहाष्टमी,दधीची जयंती, B
०९	सोम	०७ २०	मूल	१९ ०५	प्रीति	११ ०५	०६ १४	१८ ३७	धनु	०४.१७.४०.२०	05	रामदेव जी का मेला **तेजादशमी,** स.सि.०६/१२तक
१०	सोम	३० ००	दशमी तिथि का क्षय								00	B महालक्ष्मी व्रत प्रां.तल नवमी,श्रीहरि जयंती,अदु:ख नवमी,स.सि.२०/३०से
११	मंगल	२७ ३०	पू.षा.	१६ ५७	आयु/सौभा	०८ २० / ३० ००	०६ १४	१८ ३६	मकर२२ ।२२	०४.१८.३८.२८	06	भ.१६/३० से २७/३०तक, **परिवर्तिनी एकादशी व्रत** (कमल काकड़ी), C
१२	बुध	२४ ५०	उ.षा.	१४ ४०	शोभन	२७ ०३	०६ १५	१८ ३५	मकर	०४.१९.३६.३६	07	**परिवर्तिनी एकादशीव्रत** (वैष्णव),वामन जयंती,गोत्रीरात्री व्रत, श्रवण द्वादशी,
१३	गुरु	२१ ४०	श्रवण	१३ ३०	अति	२३ ००	०६ १५	१८ ३४	कुंभ २४ ।१०	०४.२०.३४.४७	08	प्रदोष व्रत, पंचक प्रा. २४/१० से, C डोल ग्यारस,स्मार्त जल झूलनी एकादशी,
१४	शुक्र	१८ १०	धनिष्ठा	१२ २०	सुकर्मा	२० ०१	०६ १६	१८ ३३	कुम्भ	०४.२१.३३.००	09	भ.१८/०० से३०/००तक, अनंतचर्तुदशी व्रत व पार्थिव गणेश विसर्जन,
१५	शनि	१५ ०५	शत्भिषा	०९ ४०	धृति	१६ ३०	०६ १६	१८ ३२	मीन २६ ।५०	०४.२२.३१.१३	10	भ. स्नान,दान,व्रत की पूर्णिमा,कन्याओं द्वारा संज्ञा निर्माण व पूजा, प्रोष्ठपदी व्रत
												की पूनम,महालय श्राद्ध प्रारंभ

दि. १०/०९/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०४	११	०१	०५	११	०४	०९	००
२२	०१	१७	०८	१३	१३	२१	२९
३१	०२	३०	५०	१०	१०	२०	२२
१३	०३	१०	०२	००	२०	१०	१४
५८	७९०	३५	१८	०५	७४	०३	०३
१७	३५	००	१६	२०	१०	००	११
पू.फा	पू.भा.	रोहि	हस्त	उ.भा.	मघा	धनि.	भर
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व

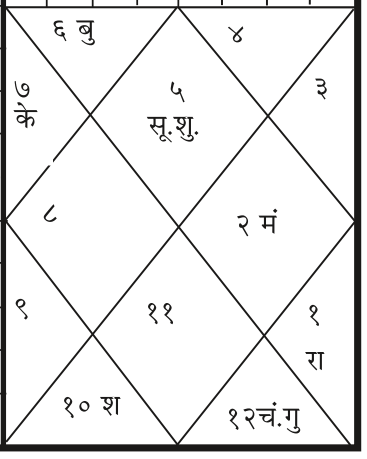

श्री विक्रम सं.२०७९ आश्विन कृष्ण पक्ष

दि.११ सितं. से १५ सित.२०२२ तक

याम्यायन अयनांश २४/१०/३२ शरद ऋतु

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	दिनांक सितंबर	यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।
०१	रवि	१३ ००	पू.भा	०९ ००	शूल	१४ ०५	०६ १६	१८ ३१	मीन	०४.२३.२९.३०	11	अश्विन में दूध का त्याग करे, स.सि.०९/००से प्रतिपदा का श्राद्ध
०२	सोम	१२ ०९	उ.भा.	०८ ०५	गंड	१२ १५	०६ १६	१८ ३०	मीन	०४.२४.२७.४९	12	भ.२३/४०से, स.सि.०६/१४ तक द्वितीया का श्राद्ध
०३	मंगल	११ ००	रेवती	०८ २०	वृद्धि	१० ०२	०६ १६	१८ २९	मेष ०८ ।२०	०४.२५.२६.१०	13	भ.११/०तक,**श्रीसंकष्टीचतुर्थी व्रत,** चंद्रोदय ०९/००, तृत्तीया का श्राद्ध, A
०४	बुध	१० ३०	अश्विनी	०९ ०५	ध्रुव	०९ १०	०६ १७	१८ २८	मेष	०४.२६.२४.१३	14	स.सि.०६/१५तक, चतुर्थी का श्राद्ध, A पंचक ८/२०तक, स.सि.०८/२०से
०५	गुरु	११ ०२	भरणी	१० ०३	व्याघा	०८ ५०	०६ १७	१८ २७	वृष.१६ ।२०	०४.२७.२३.००	15	कुवारा पंचमी, पंचमी का श्राद्ध
०६	शुक्र	११ ५९	कृतिका	११ ०९	हर्षण	०८ ००	०६ १७	१८ २६	वृषभ	०४.२८.२१.२५	16	भ.१२/०से २४/३०तक, चन्द्रषष्ठी का श्राद्ध, षष्ठी का एकोदिष्ट श्राद्ध
०७	शनि	१३ ५४	रोहिणी	१२ ००	वज्र	०७ ३०	०६ १८	१८ २५	मिथु.२४ ।५५	०४.२९.२०.००	17	कालाष्टमी,काली जयंती, सप्तमी का श्राद्ध
०८	रवि	१५ ५९	मृगशिर	१३ ४८	सिद्धि	०८ ४०	०६ १८	१८ २४	मिथुन	०५.००.१८.२७	18	अशोकाष्टमी, महालक्ष्मी व्रत पूर्ण, अष्टमी का श्राद्ध
०९	सोम	१८ ००	आर्द्रा	१८ ००	व्यति	०९ ००	०६ १८	१८ २३	मिथुन	०५.०१.१७.०१	19	अविधावा नवमी, सौभागवतीयों का श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध, C
१०	मंगल	२० ५०	पुनर्वसु	२० ५०	वरिया	१० ०५	०६ १९	१८ २२	कर्क १४ ।०७	०५.०२.१५.३७	20	भ.०७/३०से२२/५०तक, दशमी का श्राद्ध
११	बुध	२२ ११	पुष्य	२३ २८	परिघ	११ ००	०६ १९	१८ २१	कर्क	०५.०३.१४.१६	21	इन्द्रिरा एकादशी व्रत(कलाकन्द), एकादशी का श्राद्ध,
१२	गुरु	२४ २४	श्लेषा	२५ ५०	शिव	१२ ०५	०६ १९	१८ २०	सिंह २५ ।५०	०५.०४.१३.००	22	द्वादशी व **सन्यासियों का श्राद्ध,** द्वादशी का श्राद्ध
१३	शुक्र	२५ १५	मघा	२७ २०	सिद्ध	११ ५०	०६ १९	१८ १९	सिंह	०५.०५.११.४०	23	भ.२५/१५से, प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध
१४	शनि	२६ ४०	पू.फा	२८ ३९	साध्य	११ २०	०६ २०	१८ १८	सिंह	०५.०६.१०.२६	24	भ.१३/५७तक, मासिक शिवरात्री व्रत, अग्नि-जल-दुर्घटना में मृतकों एवं B
३०	रवि	२७ ४०	उ.फा.	३० ००	शुभ	१० ०५	०६ २०	१८ १७	कन्या ११ ।००	०५.०७.०९.१३	25	स्नान,दान व श्राद्ध की सर्व पितृ अमावस्या,अज्ञात तिथि पूर्णिमा व
												अमावस्यास.सि.दिन-रात B चतुर्दशी का श्राद्ध, C सायन सूर्य तुला में १०/१०

दि.२५/०९/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०५	०५	०१	०४	११	०५	०९	००
०७	०९	२९	२९	११	०२	२०	२०
०९	२८	०५	१८	५०	१०	२३	४३
१३	३०	१०	२१	०२	००	०५	२९
५८	७९०	११	३०	०४	७४	०२	०३
५१	३५	००	००	१०	०८	००	११
उ.फ	उ.फा	मृग	हस्त	उ.भा	उ.फा	धनि	भर
मा	मा	मा	वक्री	वक्री	मा	वक्री	वक्री

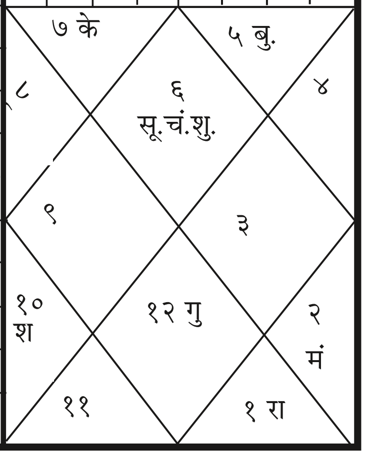

मण्डलं चतुरस्त्रं चिकीर्षन्विष्कम्भमष्टौ भागान्कृत्वा भागमेकोनत्रिंशधा।
विभाज्याष्टाविंशतिभागानुद्धरेत् भागस्य च षष्ठमष्टमभागोनम्।।

– महर्षि बौधायन

विक्रम पचांग

आश्विन शुक्ल पक्ष
26 सितम्बर से 9 अक्टूबर 2022 तक

विक्रम सम्वत् 2079 ''राक्षस'' नाम सम्वत्सर
कलि सम्वत् 5123 • सृष्टि आरम्भ 1955885123
राजा – शनि • मंत्री – गुरू

कार्तिक कृष्ण पक्ष
10 अक्टूबर से 25 अक्टूबर 2022 तक

	मूल २६/५६ 02 सप्तमी अक्टूबर सरस्वती आवहान महात्मागाँधी जयंती लालबहादुर शास्त्री जयंती	उ.भा. २७/०१ 09 पूर्णिमा अक्टूबर शरद पूर्णिमा	रविवार		आर्द्रा २५/५९ 16 सप्तमी अक्टूबर	उ.फा. १५/३५ 23 त्रयोदशी अक्टूबर मासशिवरात्रि व्रत नरकहरा चतुर्दशी, रूपचौदस
उ.फा. ०६/५० 26 प्रतिपदा सितम्बर शारदीय नवरात्र प्रा. घटस्थापना, अग्रसेन जयंती	पू.षा. २५/०० 03 अष्टमी अक्टूबर सरस्वती पूजा दुर्गाष्टमी, महाष्टमी		सोमवार	रेवती १६/५० 10 प्रतिपदा अक्टूबर	पुनर्वसु २८/५० 17 अष्टमी अक्टूबर	हस्त १७/०० 24 चतुर्दशी अक्टूबर दीपावली महापर्व लक्ष्मी व कुबेर पूजन
हस्त ०७/१० 27 द्वितीया सितम्बर नवीन चन्द्रदर्शन	उ.षा. २४/११ 04 नवमी अक्टूबर महानवमी सरस्वती विसर्जन		मंगलवार	अश्वि १७/०० 11 द्वितीया अक्टूबर	पुष्य ३०/२५ 18 नवमी अक्टूबर कालाष्ठमी अहोई अष्टमी, काली पूजा	चित्रा १६/०५ 25 अमावस्या अक्टूबर सूर्य ग्रहण स्नान दान, पूजन की अमावस्या
चित्रा ०७/३० 28 तृतीया सितम्बर	श्रवण २२/०० 05 दशमी अक्टूबर विजिया दशमी शमी पूजा व शास्त्र पूजा		बुधवार	भरणी १७/५० 12 तृतीया अक्टूबर	श्लेषा दिन/रात 19 नवमी अक्टूबर	
स्वाती ०३/५९ 29 चतुर्थी सितम्बर श्री गणेश चतुर्थी व्रत	धनिष्ठा २०/०० 06 एकादशी अक्टूबर कमला एकादशी व्रत (माखन मिश्री)		गुरूवार	कृतिका १९/०० 13 चतुर्थी अक्टूबर करवा चौथ श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय १०/००	श्लेषा ०८/५० 20 दशमी अक्टूबर	
विशाखा ०६/२२ अनुराधा २८/४० 30 पंचमी सितम्बर उपाङ्ग ललिता व्रत ललिता पंचमी	शत १९/०० 07 द्वादशी त्रयोदशी अक्टूबर प्रदोष व्रत		शुक्रवार	रोहिणी २१/०२ 14 पंचमी अक्टूबर	मघा ११/०५ 21 एकादशी अक्टूबर रमा एकादशी व्रत (केला)	
ज्येष्ठा २७/४९ 01 षष्ठी अक्टूबर भद्रकाली प्राकट्य	पू.भा. १८/०३ 08 चतुर्दशी अक्टूबर		शनिवार	मृगशिर २३/२० 15 षष्ठी अक्टूबर स्कन्द षष्ठी	पू.फा. १३/३० 22 द्वादशी अक्टूबर शनि प्रदोषव्रत धन्वन्तरी जयंती, धनतेरस	

महर्षि बौधायन

(743 वि.पू., 800 ई.पू.)

शुल्व सूत्र के रचनाकार महर्षि बौधायन का जन्म ईसा पूर्व 800 के आस-पास हुआ था। वे गणित के प्रकांड विद्वान् थे तथा गणित का प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों में होने वाले कर्मकांडों के लिए किया करते थे। बौधायन के अनेक सूत्र वैदिक संस्कृत में हैं जो धर्म, दैनिक कर्मकाण्ड, गणित आदि से सम्बन्धित हैं। वे कृष्ण यजुर्वेद के तैत्तरीय शाखा से सम्बन्धित हैं। सूत्र ग्रन्थों में सम्भवतः ये प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने श्रौतसूत्र, कर्मान्तसूत्र, द्वैधसूत्र, गृह्यसूत्र तथा धर्मसूत्र जैसे ग्रन्थों को भी रचा। शुल्व सूत्रों में यज्ञ के लिए उपयुक्त स्थान निर्धारण, यज्ञ वेदी का आकार-प्रकार निर्धारण और उसके निर्माण की योजना आदि का वर्णन है। 'शुल्व' का अर्थ होता है 'नापने का डोरा'। वस्तुतः शुल्व सूत्रों को भारतीय ज्यामिति तथा क्षेत्रमिति का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ कहा जा सकता है जिसके माध्यम से प्राचीन समय की ज्यामिति तथा क्षेत्रमिति के सिद्धांतों का प्रतिपादन हुआ है। इसी उद्देश्य के लिए उन्होंने शुल्व सूत्रों की रचना की थी। विशेष बात यह थी कि लोकप्रिय प्रमेय की कल्पना उन्होंने पाइथागोरस से सदियों पहले ही कर ली थी। उन्होंने अपने एक श्लोक में कहा है कि -

दीर्घ चतुरश्रस्या क्षण्यारज्जुः पार्श्व् मानी तिर्यक्मानी।
च यत्पृथ्वभूते कुरु तस्ते दुमयं करोति।।

अर्थात् दीर्घचतुर्श (आयत) में रज्जु (कर्ण) का चैत्र (वर्ग) पार्श्वमनि (आधार) तथा त्रियांग मनि (लंब) के वर्गों के योग के बराबर होता है। उन्होंने दो वर्गों के योग से एक नवीन व बड़ी वर्गाकृति बनाने की विधि भी समझायी थी। बौधायन के शुल्वसूत्र में रैखिक समीकरणों के ज्यामितीय हल भी दिये गये हैं। सभी प्राचीन सभ्यताओं में गणित विद्या की पहली अभिव्यक्ति गणना प्रणाली के रूप में प्रगट होती है। बौधायन ने अनुष्ठानों की संरचना के निर्माणों के लिए विभिन्न अनुमानों का प्रयोग किये थे और इस क्रम में उन्होंने (पाई) का मान भी निकाला था। अपने एक सूत्र में बौधायन ने विकर्ण के वर्ग का नियम दिया है। एक आयत का विकर्ण उतना ही क्षेत्र इकट्ठा बनाता है जितने कि उसकी लम्बाई और चौड़ाई अलग-अलग बनाती हैं। बौधायन ने आयत, वर्ग, समकोण त्रिभुज समचतुर्भुज के गुणों तथा क्षेत्रफलों का विधिवत अध्ययन किया था। यज, शायद उस समय यज्ञ के लिए बनायी जाने वाली यज्ञ भूमिका के महत्व के कारण था। वैदिक काल में गणितीय गतिविधियों के अभिलेख वेदों में अधिकतर धार्मिक कर्मकांडों के साथ मिलते हैं। फिर भी, अन्य कई कृषि आधारित प्राचीन सभ्यताओं की तरह यहाँ भी अंकगणित और ज्यामिति का अध्ययन धर्मनिरपेक्ष क्रियाकलापों से भी प्रेरित था।

श्री विक्रम सं.२०७९ आश्विन शुक्ल पक्ष

दि.२६ सितं. से ०९ अक्टू.२०२२ तक

याम्यायन अयनांश २४/१०/३४ शरद ऋतु

यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	अक्टूं	दिनांक
०१	सोम	२७ ३५	उ.फा.	०६ ५०	शुक्ल	०९ ०६	०६ २०	१८ १६	कन्या	०५.०८.०८.०४	26	**शारदीय नवरात्र प्रां.घट स्थापना,** अग्रसेन जं०,मातामह श्राद्ध
०२	मंगल	२६ ५९	हस्त	०७ १०	ब्रह्म	०८ ००	०६ २१	१८ १५	तुला १९ ।२०	०५.०९.०७.००	27	नवीन चंद्रदर्शन,
०३	बुध	२५ ५२	चित्रा	०७ ३०	ऐंद/वैधृ	०७ ०७ २८ ०५	०६ २१	१८ १४	तुला	०५.१०.०५.५५	28	
०४	गुरु	२५ ०१	स्वाति	०६ ५९	विष्कुंभ	२६ ५०	०६ २१	१८ १३	वृश्चि.२४ ।४५	०५.११.०४.५०	29	**विनायक चतुर्थीव्रत**
०५	शुक्र	२३ ००	विश/अनु	०६ २२ २८ ४०	प्रीति	२४ ४६	०६ २२	१८ १२	वृश्चिक	०५.१२.०३.४७	30	भ.१५/३४से २५/०१तक, उपाङ्ग ललिता व्रत, ललिता पंचमी,
०६	शनि	२१ १९	ज्येष्ठा	२७ ४९	आयु	२३ ००	०६ २२	१८ ११	धनु २७ ।५०	०५.१३.०२.४९	01	भद्रकाली प्राकट्य
०७	रवि	१९ ०५	मूल	२६ ५३	सौभाग्य	२१ ०१	०६ २२	१८ १०	धनु	०५.१४.०१.५३	02	भ.१९/१२से३०/०तक,सरस्वती आवहान,महात्मा गाँधी व लालबहादूर शास्त्री जं.
०८	सोम	१७ ००	पू.षा.	२५ ००	शोभन	१८ ४०	०६ २३	१८ ०९	धनु	०५.१५.०१.००	03	सरस्वती पूजा,दुर्गाष्टमी,महाष्टमी,गढ़ कालीका यात्रा (अवन्तिका)
०९	मंगल	१४ ५०	उ.षा.	२४ ११	अति	१५ ००	०६ २३	१८ ०८	मकर०६ ।४७	०५.१६.००.१०	04	**महानवमी, सरस्वती बलिदान, सरस्वती विसर्जन**
१०	बुध	१२ १२	श्रवण	२२ ००	सुकर्मा	१२ ०२	०६ २३	१८ ०७	मकर	०५.१६.५९.११	05	भ.२२/४५से, **विजिया दशमी,** बोद्धावतार, शमी पूजा, शस्त्र व शास्त्र पूजा,
११	गुरु	०९ ४०	धनिष्ठा	२० ०३	धृति	०९ २१	०६ २४	१८ ०६	कुंभ ०९ ।००	०५.१७.५८.३२	06	भ.०९/४०तक, **पाशांकुशा एकादशी व्रत(फूट, काचरी),** पंचक ०९/००से
१२	शुक्र	०७ ०५	शत्भिष	१९ ००	शूल/गंड	०६ ५९ २८ ००	०६ २४	१८ ०५	कुम्भ	०५.१८.५७.४८	07	प्रदोष व्रत, अग्रसेन जयंती
१३	शुक्र	२८ ५६	त्रयोदशी तिथि का क्षय								00	
१४	शनि	२७ २०	पू.भा.	१८ ०३	वृद्धि	२५ ००	०६ २५	१८ ०४	मीन ११ ।४८	०५.१९.५७.०६	08	भ.२७/२० से
१५	रवि	२६ ०५	उ.भा.	१७ ०१	ध्रुव	२१ ४४	०६ २५	१८ ०३	मीन	०५.२०.५६.२६	09	भ.१६/००तक, स्नान,दान,व्रत **शरद पूर्णिमा,**कोजागरी पूनम, स.सि.०६/२३से १७/००तक

दि .०९/१०/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०५	११	०१	०५	११	०५	०९	००
२०	२३	२८	०६	०९	१६	२०	२०
५६	००	०९	१२	२५	२०	४०	०२
२६	००	५९	३०	१०	२५	००	४४
५९	७९०	१२	१०	०५	७४	०१	०३
५९	३५	१०	००	२५	०३	२०	११
हस्त	रेवती	मृग	हस्त	उ.भा	हस्त	धनि	भर
मा	मा	वक्री	मा	वक्री	मा	मा	वक्री

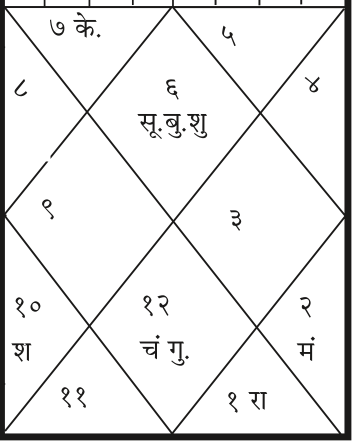

श्री विक्रम सं.२०७९ कार्तिक कृष्ण पक्ष

दि.१० अक्टू. से २५ अक्टू. २०२२ तक

याम्यायन अयनांश २४/१०/३६ शरद ऋतु

यहाँ पर दिया गया, सभी समय,भा.स्टे.स्टा.में है जो संपूर्ण भारत में समान रूप से ग्राह्य रहेगा ।

तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ. मि.	सूर्य स्पष्ट स्टे. टा ५/३०	अक्टूबर	दिनांक
०१	सोम	२५ १०	रेवती	१६ ५०	व्याघा	१९ ०२	०६ २५	१८ ०२	मेष १६ ।५०	०५.२१.५५.४९	10	कार्तिक में द्वि-दल का परित्याग करें,पंचक १६/५०तक, स.सि.०६/२४ **C**
०२	मंगल	२५ २५	अश्विनी	१७ ००	हर्षण	१६ ५०	०६ २६	१८ ०१	मेष	०५.२२.५५.१४	11	हेमन्त ऋत, स.सि.०६/२४से १७/००तक **C** से १७/००तक
०३	बुध	२६ ००	भरणी	१७ ५०	वज्र	१५ ००	०६ २६	१८ ००	वृष.२४ ।०८	०५.२३.५४.४१	12	भ.१४/१०से २६/००तक, स.सि.१७/५०से
०४	गुरु	२६ ४०	कृतिका	१९ ००	सिध्दि	१४ ०५	०६ २७	१७ ५९	वृषभ	०५.२४.५४.११	13	श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत(करवाचौथ),चंद्रोदय १०/००, स.सि.०६/२५तक
०५	शुक्र	२७ ३२	रोहिणी	२१ ०२	व्यति	१४ ४०	०६ २७	१७ ५८	वृषभ	०५.२५.५३.४३	14	
०६	शनि	२८ ३०	मृगशिर	२३ २०	वरिया	१५ २०	०६ २७	१७ ५८	मिथु.१० ।११	०५.२६.५३.१७	15	भ.२८/३०से, स्कन्द षष्ठी
०७	रवि	२९ २०	आर्द्रा	२५ ५९	परिघ	१६ ००	०६ २८	१७ ५७	मिथुन	०५.२७.५२.५४	16	भ.१८/००तक
०८	सोम	३० २०	पुनर्वसु	२८ ५०	शिव	१६ ५०	०६ २८	१७ ५६	कर्क २२ ।०७	०५.२८.५२.३३	17	**A** धन त्रयोदशी यम के लिय दीपदान, अभ्यङ्ग स्नान
०९	मंगल	दि रा	पुष्य	३० २५	सिद्ध	१७ ५९	०६ २९	१७ ५५	कर्क	०५.२९.५२.१४	18	कालाष्टमी अहोई अष्टमी, काली पूजा,कराष्टमी
०९	बुध	०९ ४०	श्लेषा	दि रा	साध्य	१८ ४०	०६ २९	१७ ५४	कर्क	०६.००.५१.५७	19	भ.२२/२५से, भौम पुष्य योग **B** अभ्यङ्ग स्नान,स.सि.दिन-रात
१०	गुरु	११ १२	श्लेषा	०८ ५०	शुभ	१९ ००	०६ ३०	१७ ५३	सिंह०८ ।५०	०६.०१.५१.४७	20	भ.११/१२तक,सायन सूर्य वृश्चिक में ११/१०
११	शुक्र	१३ ५०	मघा	११ ०५	शुक्ल	१७ ५०	०६ ३०	१७ ५३	सिंह	०६.०२.५१.३१	21	रमा एकादशी व्रत(केला),
१२	शनि	१५ ०३	पू.फा	१३ ३०	ब्रह्म	१७ ०३	०६ ३०	१७ ५३	कन्या२० ।०२	०६.०३.५१.२१	22	**शनि प्रदोषव्रत,**गोत्रिरात दिवस,गोवत्स द्वादशी,**धन्वन्तरी जयंती,**धनतेरस,**A**
१३	रवि	१७ २०	उ.फा	१५ ३५	ऐंद्र	१६ ५०	०६ ३१	१७ ५२	कन्या	०६.०४.५१.१३	23	नरकहरा चतुर्दशी,मासशिवरात्री व्रत,रूपचौदस,दीपदान के केदार गौरी व्रत**B**
१४	सोम	१८ ००	हस्त	१७ ००	वैधृति	१५ ००	०६ ३१	१७ ५१	तुला २८ ।३०	०६.०५.५१.०८	24	भ.१८/०से २९/३०तक, **दीपावली महापर्व लक्ष्मी व कुबेर पूजन**
३०	मंगल	१७ ००	चित्रा	१६ ०५	विष्कुंभ	१४ ०१	०६ ३२	१७ ५०	तुला	०६.०६.५१.०५	25	स्नान,दान,पूजन की अमावस्या, **सूर्य ग्रहण**

दि. २५/११/२०२२ स्टे.टा. ०५/३०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा
०६	०६	०२	०६	११	०६	०९	००
०६	०१	०१	०५	०७	१०	२१	१९
५१	१३	२०	०५	१५	१५	००	१४
०५	००	००	१०	००	१०	०१	०५
५९	८९०	०७	१०१	०६	७५	०१	०३
५९	३५	००	०५	१२	३०	२०	११
स्वा	स्वा	मृग	चित्रा	उ.भा	स्वा	श्रव	भर
मा	मा	मा	मा	वक्री	मा	मा	वक्री

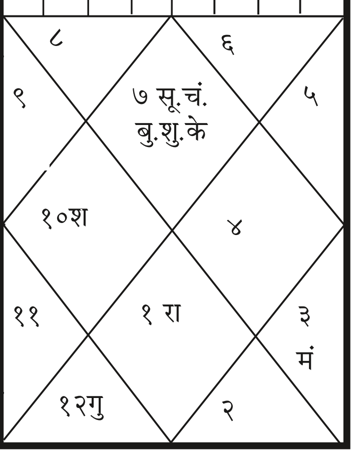

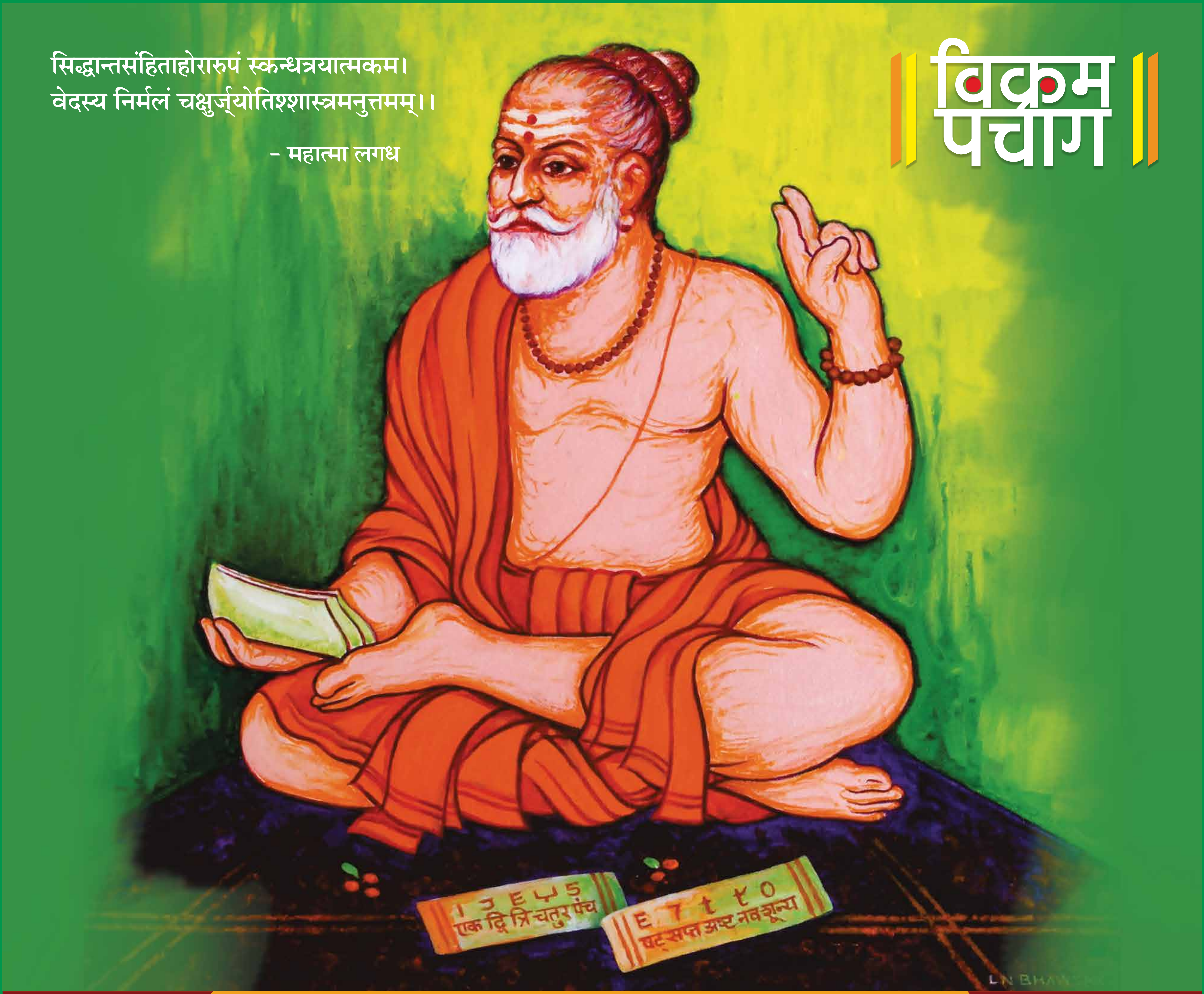

कार्तिक शुक्ल पक्ष
26 अक्टूबर से 8 नवम्बर 2022 तक

विक्रम सम्वत् 2079 ''राक्षस'' नाम सम्वत्सर

कलि सम्वत् 5123 • सृष्टि आरम्भ 1955885123
राजा - शनि • मंत्री - गुरू

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
10 अक्टूबर से 22 अक्टूबर 2022 तक

	मूल ०७/२७ पू.षा. २९/४८ **30** **षष्ठी** अक्टूबर सूर्य षष्ठी डालाछठ	रेवती २४/०७ **06** **त्रयोदशी** नवम्बर वैकुण्ठ चतुर्दशी	**रविवार**		आर्द्रा १०/१३ **13** **पंचमी** नवम्बर	हस्त २४/३१ **20** **द्वादशी** नवम्बर सोम प्रदोष व्रत
	उ.षा. २८/१५ **31** **सप्तमी** अक्टूबर सहस्त्रार्जुन जयंती सरदार पटेल जयंती	अश्वि २४/४१ **07** **चतुर्दशी** नवम्बर	**सोमवार**		पुनर्वसु १३/११ **14** **षष्ठी** नवम्बर	चित्रा २४/०८ **21** **त्रयोदशी** नवम्बर
	श्रवण २६/५१ **01** **अष्टमी** नवम्बर गोपाष्टमी	भरणी २५/४२ **08** **पूर्णिमा** नवम्बर पूर्णिमा व्रत	**मंगलवार**		पुष्य १६/११ **15** **सप्तमी** नवम्बर	स्वाति २३/०७ **22** **चतुर्दशी** नवम्बर मास शिवरात्रि व्रत
स्वाती १३/१३ **26** **प्रतिपदा** अक्टूबर अन्नकूट गोवर्धन पूजा भाईदूज, यम द्वितीया, गौ क्रीड़ा बलिपूजा	धनिष्ठा २५/४१ **02** **नवमी** नवम्बर अक्षय आँवला नवमी		**बुधवार**	कृतिका २७/११ **09** **प्रतिपदा** नवम्बर	श्लेषा १८/५८ **16** **अष्टमी** नवम्बर श्रीकाल भैरवाष्टमी भैरव	विशाखा २१/३३ **23** **अमावस्या** नवम्बर देवपितृकार्ये अमावस्या
विशाखा १३/४६ **27** **द्वितीया** अक्टूबर विश्वकर्मा पूजा, चित्रगुप्त पूजा	शत २४/४६ **03** **दशमी** नवम्बर		**गुरूवार**	रोहिणी २९/०६ **10** **द्वितीया** नवम्बर	मघा २१/२० **17** **नवमी** नवम्बर	
अनुराधा १०/४२ **28** **तृतीया** अक्टूबर	पू.भा. २४/११ **04** **एकादशी** नवम्बर देव प्रबोधिनी एकादशी		**शुक्रवार**	मृगशिर दिन/रात **11** **तृतीया** नवम्बर	पू.फा. २३/०७ **18** **दशमी** नवम्बर	
ज्येष्ठा ०६/०९ **29** **चतुर्थी पंचमी** अक्टूबर सौभाग्य ज्ञान पांडव पंचमी	उ.भा. २३/५७ **05** **द्वादशी** नवम्बर शनि प्रदोष व्रत तुलसी विवाह		**शनिवार**	मृगशिर ०७/२९ **12** **चतुर्थी** नवम्बर श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २०/४१	उ.फा. २४/११ **19** **एकादशी** नवम्बर	

महात्मा लगध

(1743 वि.पू., 1800 ई.पू.)

वेदांग ज्योतिष ग्रन्थ की रचना करने वाले आचार्य लगध का जन्म स्थान कश्मीर माना जाता है। महर्षि सांदीपनि के गुरुकुल उज्जयिनी से अध्ययन ग्रहण करने वाले लगध के इस ग्रन्थ का रचनाकाल 1800 (ई. पू.) अनुमानित है। ज्योतिषशास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों में आचार्य लगध प्रणीत वेदांग ज्योतिष की महत्वपूर्ण गणना की जाती है। वस्तुतः लगध ने वैदिक साहित्य के गहन अध्ययन एवं स्वयं के शोध कार्य द्वारा वेदांग ज्योतिष का सृजन किया जिसको विश्व में गणित की प्रथम सुव्यवस्थित कृति मान्य किया जाता है। लगध ने स्वयं भी इस ग्रन्थ को यज्ञार्थ कालनिर्णय के लिए ही श्रेष्ठ माना है। यह निर्विवाद है कि भारत गणित विद्या का आदि देश रहा है। नारद संहिता के अनुसार प्राचीन काल में इस देश में अष्टादश लोक विश्रुत गणितज्ञ रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि लिखित ना होने के कारण वैदिक युग में विकसित अंक विद्या का अधिक उपयोग ज्ञान धीरे-धीरे विलुप्त हो गया। परंतु कालांतर में महर्षि सांदीपनि गुरुकुल उज्जयिनी के परम मेघावी अध्येता लगध ने अंक विद्या का पुनरुद्धार किया। लगध ने अनेक गणितीय संकेतों को आविष्कृत किया तथा दशमलव पद्धति का रोचक विवरण प्रस्तुत किया। कालांतर में संख्याओं को व्यक्त करने की यही विधि विश्व गणित एवं विज्ञान का मूल आधार बन गयी, जिसकी विश्व के अनेक उच्च कोटि के विद्वानों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। कालांतर में समस्त भाषाओं में इन मूल संकेतों को अंगीकृत करते हुए स्थानीय एवं मुद्रण की सुविधाओं के अनुसार उनमें कुछ परिवर्तन किये गये हैं, किंतु इनके मूल में वही 'भारतीय अंक' है जिसकी खोज पुरातन काल में कश्मीरी विद्वान आचार्य लगध ने की थी। लगध विश्व में बीज गणित के मूल प्रवर्तक थे जिन्होंने दो अज्ञात राशियों से किसी अज्ञात राशि का मान ज्ञात करने की विधि का वर्णन किया है। उन्होंने ही सांदीपनि गुरुकुल में आयोजित विद्वानों की एक सभा में अपनी एक व्याख्या को प्रस्तुत करते हुए पहली बार षडहों के नामकरण अर्थात् छह दिनों के नाम रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति तथा शु वार निर्धारित किये थे। कालांतर में सात दिनों का सप्ताह मान्य किया गया तथा शनिवार को जोड़कर दिनों के वही ना पुनः नामांकित कर दिये गये। वस्तुतः लगध द्वारा रचित वेदांग ज्योतिष का मूल उद्देश्य गणित के अनुप्रयोग द्वारा एक ऐसी पंचांग पद्धति का विकास करना है जो सरल ढंग से चंद्र वर्ष एवं सौर वर्ष के मध्य सामंजस्य स्थापित कर सके इस कार्य में लगध पूर्णतः सफल रहे।

श्री विक्रम सं. २०७९ आषाढ़ कृष्ण पक्ष

तारीख २६ अक्टूबर से ८ नवम्बर सन् २०२२ ईस्वी तक
दक्षिणायण, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु
(यहां पर सभी समय भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में दिया गया है)

ता. अक्टूबर	तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	करण	घटी पल	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घ. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ मि.	सूर्य स्पष्ट प्रातः५/३० बजे का	
२६	१	बु.	१४ ३७	स्वाति	१३ २०	प्रीति	०८ ३९	बव	१९ ५९	६ ३७	१७ ५२	वृश्चिक३०/२६	०५।०८।२२।१२	चंद्रदर्शन अन्नकूट नवीन जैन संवत् २५४९प्रा.गुजराती नववर्ष प्रा. गोवर्धन पूजा
२७	२	गु.	१२ ४२	विशाखा	१२ ०८	आयुष्मान सौभाग्य	०१ ५९ ५४ ४९	कौलव	१५ ११	६ ३८	१७ ५१	वृश्चिक	०८।०९।२२।०२	सर्वा १२।०८ से विश्वकर्मा पूजा चित्रगुप्त पूजा रविउल आखिरमास ४मुस.
२८	३	शु.	१० ३३	अनुराधा	१० ४२	शोभमन	४७ ०९	गर	०९ ४६	६ ३८	१७ ५०	वृश्चिक	०६।१०।२१।५३	भद्रा २१।२३ से सर्वा १०।४२ तक भगिनी तीज (C) इंदिरा गांधी पुण्य संकल्प दि.
२९	४	श.	०८ १४	ज्येष्ठा	०९ ०७	अतिगण्ड	३९ २३	विष्टि	०३ ५८	६ ३९	१७ ४९	धनु०९/०७	०६।११।२१।४७	भद्रा ०८।१४ तक सौभाग्य ज्ञान पांडव पंचमी (B) वक्री १८।५७ बुध स्वातिपर १२।५४आ.
०	५	श.	२९ ५१	०	० ०	०	० ०		० ०	० ०	० ०	०	० ० ० ०	पंचमी तिथि क्षय (A) बलि पूजा गौ क्रीड़ा भाई दूज यम द्वितीया बुध तुला पर १३/४८
३०	६	र.	२७ २८	मूल पूर्वाषाढ़ा	०७ २७ २९ ४८	सकुर्मा	३१ ३५	कौलव	२५ ०१	६ ४०	१७ ४९	धनु	०६।१२।२१।४१	सर्वा ०६।०४ से ०७।२७ तक सर्वा २९।४८ से ३०।४० तक सूर्य षष्ठी-डालाछठ विश्व बचत दि. मंगल (B)
३१	७	चं.	२५ १९	उत्तराषाढ़ा	२८ १५	धृति	२३ ५३	गर	१९ १०	६ ४०	१७ ४८	मकर११/२५	०६।१३।२१।४१	भद्रा २५।११ से सर्वा २५।१५ से ३०।४१ तक सहस्त्रार्जुन ज.सरदार पटेल (C)
न १	८	मं.	२३ ०३	श्रवण	२६ ५१	शूल	१६ २६	विष्टि	१३ ३७	६ ४१	१७ ४७	मकर	०६।१४।२१।४०	भद्रा १२।०८ तक गोपाष्टमी नवम्बरमास ११ ता. ३०प्रा.
२	९	बु.	२१ ०८	धनिष्ठ	२५ ४१	गुण्ड	०९ १९	बालव	०८ ३१	६ ४१	१७ ४७	कुंभ१४/१६	०६।१५।२१।४२	अक्षय आँवला नवमी पर्व पंचक प्रा.१४।१६ वृक्ष पूजा कुष्मांड नवमी
३	१०	गु.	१९ २८	शतभिषा	२४ ४६	वृद्धि ध्रुव	०२ ४० ५६ ४३	तैतिल	०४ ०१	६ ४२	१७ ४६	कुंभ	०६।१६।२१।४५	शुक्र विशाखा पर २०।४५ (D) समाप्त चंद्रग्रहण पदमक योग २५/४२ से सर्वा २५/४२ से
४	११	शु.	१८ ०७	पूर्वाभाद्र	२४ ११	व्याघात	५१ १८	वणिज	०० १३	६ ४३	१७ ४५	मीन१८/१९	०६।१७।२१।५१	भद्रा ०६।५३ से १८।०७ तक देव प्रबोधिनी ११ व्रत सभी का, भीष्म पंचक प्रा.चातुर्मास पूर्ण
५	१२	श.	१७ ०७	उत्तराभाद्र	२३ ५७	हर्षण	४३ ४०	बालव	२६ ००	६ ४३	१७ ४५	मीन	०६।१८।२१।५७	शनि प्रदोष व्रत तुलसी विवाह
६	१३	र.	१६ ३१	रेवती	२४ ०७	वज्र	४२ ५०	तैतिल	२४ २८	६ ४४	१७ ४४	मेष२४/०७	०६।१९।२२।०७	सूर्य विशाखा पर २०।३७ वैकुण्ठ चतुर्दशी पंचक समाप्त २४।०७ सर्वा २४।०७ से ३०।४५ ग्यारवी शरीफ मुस.
७	१४	चं.	१६ २१	अश्विनी	२४ ४१	सिद्धि	३९ ४९	वणिज	२३ ५९	६ ४५	१७ ४४	मेष	०६।२०।२२।१७	भद्रा १६।२० से २८/२८ तक बुध विशाखा पर १५।१८
८	१५	मं.	१६ ३७	भरणी	२५ ४२	व्यतीपात	३७ ४१	बव	२४ ३९	६ ४५	१७ ४३	मेष	०६।२१।२२।३०	पूर्णिमा व्रत श्री निम्बार्क गुरूनानक जं.कार्तिक स्नान पूर्ण मेला पुष्करराज गढ़ गंगा तीर्थ भीष्म पंचक (D)

कार्तिक शुक्ल पक्ष १५
मंगलवार

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
६	०	२	६	११	६	९	०	६
२१	१५	००	२०	०५	२५	२४	१८	१८
२२	५६	५५	५७	०३	२८	३७	५३	५३
३०	०७	२४	३०	४८	२४	५४	२३	२३
६०	७६४	०७	९६	०३	७५	०१	०३	०३
१४	५३	४८	४२	१२	१२	३६	११	११
मा	मा	व	मा	व	मा	मा	व	व
विशाखा १	भरणी १	मृगशिरा ३	विशाखा ३	उत्तराभा. १	विशाखा १	धनिष्ठा १	भरणी २	स्वाति ४

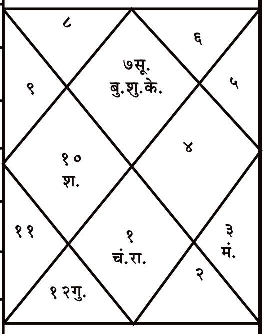

श्री विक्रम सं. २०७९ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६

तारीख ९ नवम्बर से २३ नवम्बर सन् २०२२ ईस्वी तक
दक्षिणायण, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु
(यहां पर सभी समय भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में दिया गया है)

ता. नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	करण	घटी पल	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घ. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ मि.	सूर्य स्पष्ट प्रातः५/३० बजे का	
९	१	बु.	१७ २१	कृतिका	२७ ११	वरीयान	३६ २७	कौलव	२६ २९	६ ४६	१७ ४३	वृषभ०८/०४	०६।२२।२२।४४	पदम योग समाप्त २७/११ सर्वा ३०/४७ तक
१०	२	गु.	१८ ३५	रोहिणी	२९ ०६	परिध	३६ ०८	गर	२९ ३०	६ ४७	१७ ४२	वृषभ	०६।२३।२३।००	
११	३	शु.	२० १६	मृगशिरा	- -	शिव	३६ ४१	वणिज	०१ ३६	६ ४७	१७ ४२	मिथुन १८/१७	०६।२४।२३।१८	भद्रा ०७/२६ से २०/१६ तक शुक्र वृश्चिक पर २०/०९
१२	४	श.	२२ २२	मृगशिरा	०७ २९	सिद्धि	३८ ००	बव	०६ १९	६ ४८	१७ ४१	मिथुन	०६।२५।२३।३८	चतुर्थी व्रत चंद्रोदय २०/४१ (A) सूरी पुण्य खरगच्छ माण्डवला मेला राज.
१३	५	र.	२४ ४७	आर्द्रा	१० १३	साध्य	३९ ५४	कौलव	११ ५६	६ ४९	१७ ४१	कर्क ३०/२६	०६।२६।२३।५९	श्री ऊँमायानंद चैतन्य जं. मंगल वृषभ पर २०/३७ बुध वृश्चिक पर २१/१९
१४	६	चं.	२७ २१	पुनर्वसु	१३ ११	शुभ	४२ ०५	गर	१८ ०८	६ ४९	१७ ४१	कर्क	०६।२७।२४।२२	भद्रा २७/२१ से शुक्र अनुराधा पर ११/५५ सर्वा १३/११ से ३०/५० तक बाल दि. नेहरू जं.
१५	७	मं.	२९ ५१	पुष्य	१६ ११	शुक्ल	४४ १०	विष्टि	२४ २६	६ ५०	१७ ४०	कर्क	०६।२८।२४।४७	भद्रा १६/३६ तक बुध अनुराधा पर २४/०२ सर्वा १६/११ से ३०/५१ तक जिनकांति (A)
१६	८	बु.	- -	आश्लेषा	१८ ५८	ब्रह्म	४५ ४३	बालव	३० १०	६ ५१	१७ ४०	सिंह१८/५८	०६।२१।२५।१३	सूर्य वृश्चिक पर १९/१८ श्री काल भैरवाष्टमी भैरव समुत्पत्तिः बं. मार्गशीर्ष मास प्रा.
१७	८	गु.	०७ ५९	मघा	२१ २०	ऐन्द्रा	४६ २१	कौलव	०२ ५०	६ ५१	१७ ४०	सिंह	०७।००।२५।४१	
१८	९	शु.	०९ ३५	पूर्वाफा	२३ ०७	वैधृति	४५ ४४	गर	०६ ४६	६ ५२	१७ ३९	कन्या २१/२३	०७।०१।२६।१०	भद्रा २२/०१ से श्री जाम्भोजी पुण्य दि. विश्नोई पंथ
१९	१०	श.	१० २९	उत्तराफा	२४ ११	विष्कुंभ	४३ ४२	विष्टि	०९ ००	६ ५३	१७ ३९	कन्या	०७।०२।२६।४१	भद्रा १०/२९ तक सूर्य अनुराधा पर २६/३८ इंदिरा गांधी जं. श्री महावीर स्वामी दीक्षा कल्याणक
२०	११	र.	१० ३८	हस्त	२४ ३१	प्रीति	४० ११	बालव	०९ २२	६ ५४	१७ ३९	कन्या	०७।०३।२७।१४	उत्पत्ति ११ व्रत सभी का वैतरणी व्रत सर्वा अमृत ०६/५४ से २४/३१ तक
२१	१२	चं.	१० ०३	चित्रा	२४ ०८	आयुष्मान	३५ १५	तैतिल	०७ ५२	६ ५४	१७ ३९	तुला१२/१९	०७।०४२७।४८	सोम प्रदोष व्रत (B) १३/४८ शुक्र उदय पश्चिम में २२/१७
२२	१३	मं.	०८ ४६	स्वाति	२३ ०७	सौभाग्य	२९ ००	वणिज	०४ ३७	६ ५५	१७ ३८	तुला	०७।०५।२८।२३	भद्रा ०८/४६ से १९/४९ तक मास शिवरात्रि व्रत रा. मार्गशीर्ष मास प्रा. सायन सूर्य धनु पर (B)
०	१४	मं.	३० ५२	०	० ०	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	०	० ० ० ०	चतुर्दशी तिथि क्षय
२३	३०	बु.	२८ २६	विशाखा	२१ ३३	शोभन	२१ ३८	चतुष्पाद	२६ ४८	६ ५६	१७ ३८	वृश्चिक१५/५६	०७।०६।२९।००	देवपितृकार्ये अमावस्या गुरु मार्गी २८/३३ सर्वा अमृत २१/३३ से ३०/५७ तक

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष ३०
बुधवार

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
७	६	१	७	११	७	९	०	६
०६	२३	२७	१४	०४	१४	२५	१८	१८
२१	४३	३१	३५	३७	१७	१३	०५	०५
०००	५३	१२	४८	३६	२४	१३	४१	४१
६०	८६१	११	९२	००	७५	०३	०३	०३
३८	२५	३०	४२	०६	१८	०६	११	११
मा	मा	व	मा	व	मा	मा	व	व
अनुराधा१	विशाखा २	मृगशिरा २	अनुराधा ४	उत्तराभा. १	अनुराधा ४	धनिष्ठ १	भरणी २	स्वाति ४

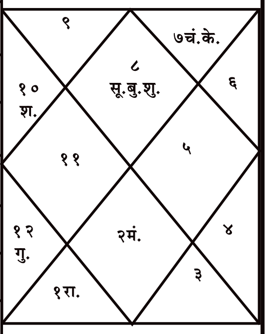

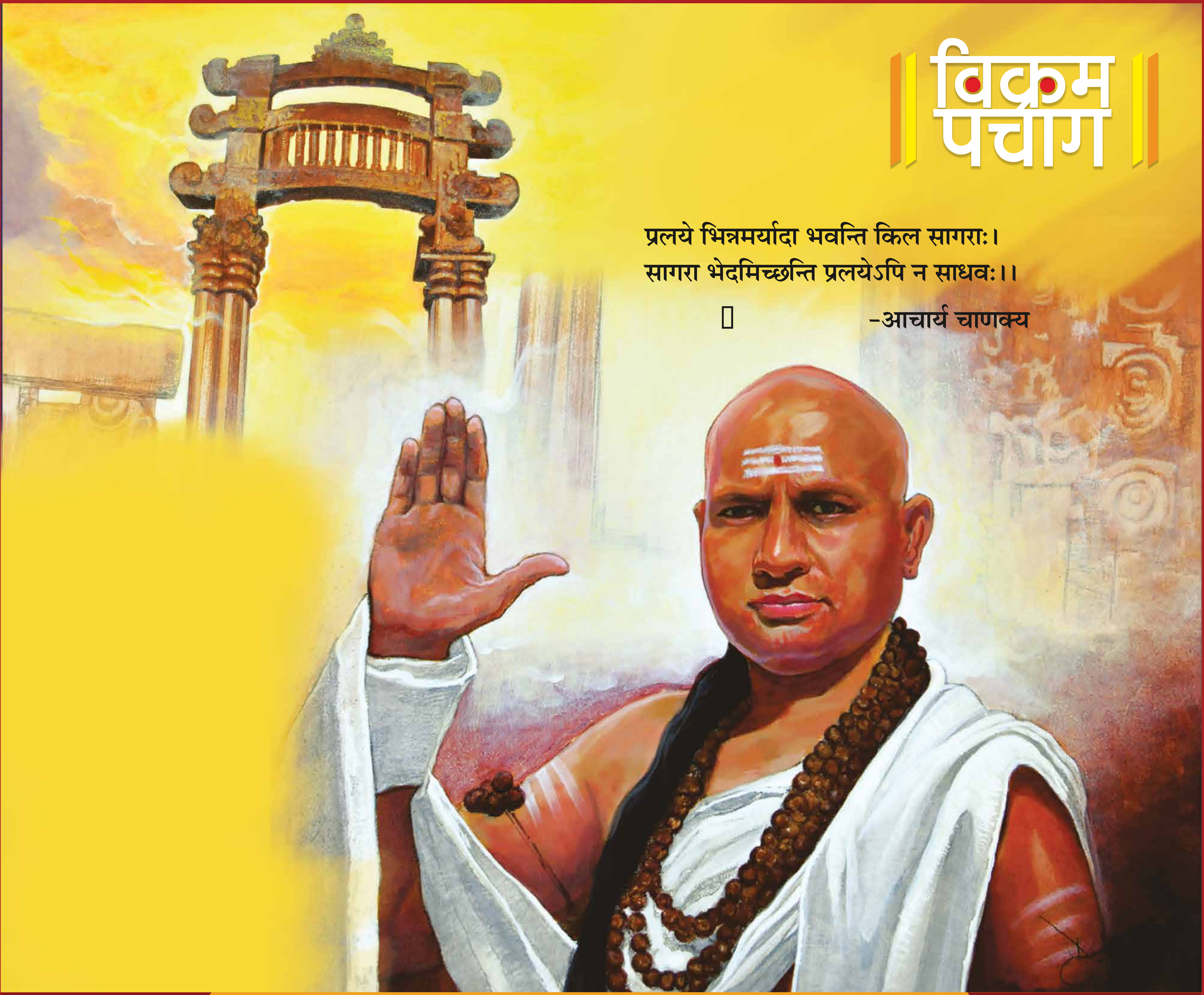

विक्रम पचांग

प्रलये भिन्नमर्यादा भवन्ति किल सागराः।
सागरा भेदमिच्छन्ति प्रलयेऽपि न साधवः।।

-आचार्य चाणक्य

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

24 नवम्बर से 8 दिसम्बर 2022 तक

विक्रम सम्वत् 2079 ''राक्षस'' नाम सम्वत्सर

कलि सम्वत् 5123 • सृष्टि आरम्भ 1955885123

राजा - शनि • मंत्री - गुरू

पौष कृष्ण पक्ष

9 दिसम्बर से 23 दिसम्बर 2022 तक

			वार			
	पू.षा. १२/४१ **27** चतुर्थी नवम्बर	अश्वि दिन/रात **04** द्वादशी दिसम्बर नौ सेना दिवस	रविवार		पुनर्वसु २०/३३ **11** तृतीया दिसम्बर	हस्त १०/१५ **18** दशमी दिसम्बर
	उ.षा. १०/३१ **28** पंचमी नवम्बर श्रीराम जानकी विवाहोत्सव	अश्वि ०७/१६ **05** त्रयोदशी दिसम्बर सोम प्रदोष व्रत	सोमवार		पुष्य २३/३३ **12** चतुर्थी दिसम्बर श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २०/२१	चित्रा १०/२६ **19** एकादशी दिसम्बर
	श्रवण ०८/०५ **29** षष्ठी नवम्बर चम्पाषष्ठी मित्र सप्तमी	भरणी ०८/४१ **06** चतुर्दशी दिसम्बर	मंगलवार		श्लेषा २६/३२ **13** पंचमी दिसम्बर	स्वाति ०९/५० **20** द्वादशी दिसम्बर
	धनिष्ठा ००/२१ शत ४७/४३ **30** सप्तमी नवम्बर नरसी मेहता जयंती	कृतिका १०/२८ **07** चतुर्दशी दिसम्बर श्री दत्त महाप्रभु जयंती सशस्त्र सेना झण्ड दिवस	बुधवार		मघा २९/१७ **14** षष्ठी दिसम्बर	विशाखा ०८/३१ अनुराधा ३०/३२ **21** त्रयोदशी दिसम्बर प्रदोष व्रत मास शिवरात्रि व्रत
अनुराधा १९/३५ **24** प्रतिपदा नवम्बर चन्द्रदर्शन	पू.भा. २९/४१ **01** अष्टमी नवमी दिसम्बर	रोहिणी १२/३५ **08** पूर्णिमा दिसम्बर पूर्णिमा पुण्य	गुरूवार		पू.फा. दिन/रात **15** सप्तमी दिसम्बर	ज्येष्ठा २८/०३ **22** चतुर्दशी दिसम्बर
ज्येष्ठा १७/२२ **25** द्वितीया नवम्बर	उ.भा. २९/४३ **02** दशमी दिसम्बर		शुक्रवार	मृगशिर १४/५९ **09** प्रतिपदा दिसम्बर	पू.फा. ०७/३६ **16** अष्टमी दिसम्बर कालाष्टमी	मूल २५/१४ **23** अमावस्या दिसम्बर रा. किसान दिवस देवपितृकार्ये अमावस्या
मूल १५/०१ **26** तृतीया नवम्बर	रेवती ३०/१६ **03** एकादशी दिसम्बर गीता जयंती मोक्षदा एकादशी व्रत		शनिवार	आर्द्रा १७/४० **10** द्वितीया दिसम्बर	उ.फा. ०९/१७ **17** नवमी दिसम्बर	

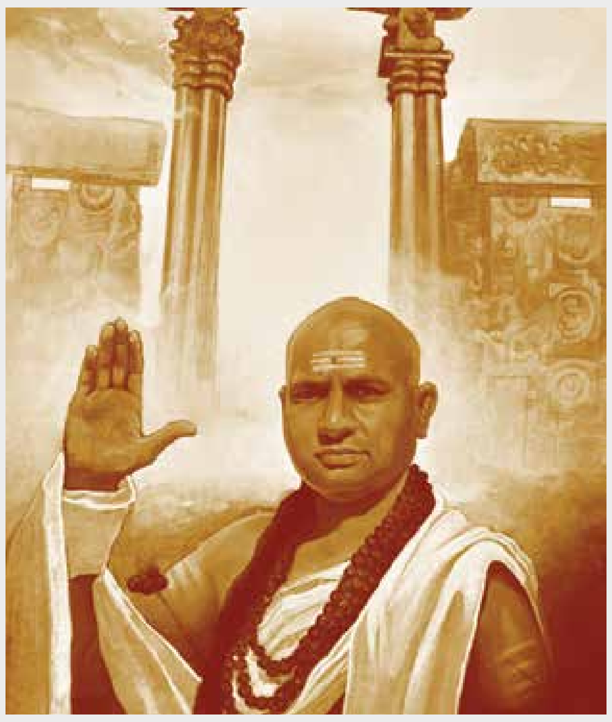

आचार्य चाणक्य

(314 वि.पू., 371 ई.पू.)

भारत में हिमालय से समुद्र पर्यंत सर्वभौम साम्राज्य के उन्नायक, राजनीति के महान प्रवक्ता और प्रयोक्ता आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य को कौटिल्य के नाम से भी जाना जाता रहा है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथ को रचने वाले आचार्य कौटिल्य का जन्म 371 ईस्वी पूर्व तक्षशिला का माना जाता है। चणक नामक आचार्य के पुत्र होने के कारण इन्हें चाणक्य पैतृक नाम प्राप्त हुआ तथा कौटिल्य इनका गोत्र माना गया है। उन्हें एक ऐसा मार्गदर्शक, विचारक व राजनीतिज्ञ निरूपित किया जाता है जिसने मगध के नंद राजाओं द्वारा शासित राज्य सत्ता को नष्ट कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। विशाखदत्त रचित नाटक 'मुद्राराक्षस' इस महान आचार्य के जीवन को बहुत ही अच्छे ढंग से उल्लेखित करता है। चाणक्य को आरंभिक शिक्षा गुरु चणक द्वारा ही दी गयी। संस्कृत ज्ञान तथा वेद-पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन चाणक्य ने उन्हीं के निर्देशन में किया। चाणक्य मेधावी अध्येता थे। अर्थशास्त्र में चाणक्य ने स्वतः ही कथन किया है कि- 'इस ग्रंथ की रचना उन आचार्य ने की जिन्होंने अन्याय और कुशासन से क्रुद्ध होकर नंदों के हाथ में गये शास्त्र, शस्त्र और पृथ्वी का शीघ्रता से उद्धार किया था।' अर्थशास्त्र से समसामयिक राजनीति, अर्थनीति, विधि, समाजनीति और धर्मादि पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इस विषय में तब तक जितने भी ग्रंथ उपलब्ध थे उनमें वास्तविक जीवन का चित्रण करने के कारण यह सबसे अधिक मूल्यवान है। इस शास्त्र के प्रकाश में न केवल धर्म, अर्थ और अनर्थ तथा अवांछनीय का शमन भी होता है।

चाणक्य ने अर्थशास्त्र शब्द का प्रयोग एक व्यापक अर्थ में किया था। इसके अन्तर्गत मूलतः राजनीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कानून आदि का अध्ययन किया जाता था। आचार्य कौटिल्य की दृष्टि में राजनीति शास्त्र एक स्वतंत्र शास्त्र है और दर्शन, वेद तथा कानून आदि उसकी शाखाएँ हैं। सम्पूर्ण समाज की रक्षा, राजनीति या दण्ड व्यवस्था से होती है या रक्षित प्रजा ही अपने-अपने कर्तव्य का पालन कर सकती है। केवल राजनीति शास्त्र जैसे अनूठे विषय की चर्चा करने के कारण ही नहीं बल्कि चंद्रगुप्त मौर्यकालीन भारतीय शासन व्यवस्था की प्रामाणिक जानकारी प्रदान करने के कारण भी कौटिल्य अर्थशास्त्र आज भी प्रासंगिक है। इसमें राजनीति के अतिरिक्त तकनीकी कौशल, रसायन शास्त्र, भूगर्भ-विद्या, वास्तुविधान, जलमार्गों का निर्माण एवं नियंत्रण, कृषि, भाषा परक चिंतन, युग धर्म, धर्म स्थीयाधिकरण, विनयाधिकरण, संघवृत्ताधिकरण, तंगयुक्तयाधिकरण सहित अनेक विषयों का समाधान है।

चाणक्य का संपूर्ण जीवन यह सिद्ध करता है कि व्यक्ति अपने गुणों से ऊपर उठता है, ऊँचे स्थान पर बैठने से नहीं। चंद्रगुप्त मौर्य के माध्यम से एक सुदृढ़ शासन की स्थापना करके एक श्रेष्ठ राष्ट्र का उदाहरण प्रस्तुत करने वाले चाणक्य की शिक्षाएँ आज भी समाज तथा तथा देश के लिए प्रासंगिक हैं।

श्री विक्रम सं. २०७९ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १७

तारीख २४ नवम्बर से ८ दिसम्बर सन् २०२२ ईस्वी तक
दक्षिणायण, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु
(यहां पर सभी समय भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में दिया गया है)

ता. नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	करण	घटी पल	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घ. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ मि.	सूर्य स्पष्ट प्रातः५/३० बजे का	
२४	१	गु.	२५ ३७	अनुराधा	१९ ३५	अतिगण्ड	१३ २२	किंस्तुघ्न	२० १३	६ ५७	१७ ३८	वृश्चिक	०७/०७/२९/३९	बुध ज्येष्ठा पर १३/४० शुक्र ज्येष्ठ पर २६/५६ सर्वा ०६/५७ से १९/३५
२५	२	शु.	२२ ३६	ज्येष्ठा	१७ २२	सुकर्मा धृति	४ २७ ५५ ०९	बालव	१२ ५५	६ ५७	१७ ३८	धुन १७/२२	०७/०८/३०/१९	चंद्रदर्शन शुक्र का बाल्यत्व समाप्त २२/१७
२६	३	श.	१९ ३१	मूल	१५ ०१	शूल	४५ ४४	तैतिल	०५ १५	६ ५८	१७ ३८	धनु	०७/०९/३१/००	भद्रा ३०/०० से जमादिउल अव्वल मास ५ मुस.
२७	४	र.	१६ २९	पूर्वाषाढ़ा	१२ ४१	गण्ड	३६ ३३	विष्टि	२३ ४६	६ ५९	१७ ३८	मकर १८/०८	०७/१०/३१/४३	भद्रा १६/२९ तक सर्वा १२/४१ से ३०/५९ तक
२८	५	चं.	१३ ३८	उत्तराषाढ़ा	१० ३१	वृद्धि	२७ ५०	बालव	१६ ३७	६ ५९	१७ ३८	मकर	०७/११/३२/२७	श्री राम जानकी विवाहोत्सव सर्वा १०/३१ से ३१/०० तक गुरु तेग बहादुर पुण्य
२९	६	मं.	११ ०६	श्रवण	०८ ३८	ध्रुव	१९ ४६	तैतिल	१० १४	७ ००	१७ ३८	कुभ १९/५३	०७/१२/३३/१२	चम्पाष्ठी मित्र सप्तमी पंचक प्रा. १९/५३ स्कंद गुह षष्ठी
३०	७	बु.	०८ ५७	धनिष्ठा शतभिषा	० २१ ५७ ५३	व्याघात	१२ ३२	वणिज	०४ ५१	७ ०१	१७ ३८	कुंभ	०७/१३/३३/५९	भद्रा ०८/५७ से २०/०७ तक नरसी मेहता जयंती
१	८	गु.	०७ १८	पूर्वाभाद्र	२९ ४१	हर्षण	०६ १६	बव	०० ४२	७ ०२	१७ ३८	मीन २३/४८	०७/१४/३४/४६	दिसम्बर मास १२ ता. ३१ प्रा. जैन दिवाकर चौथमलजी पुण्य जैन (B) मौन एकादशी
०	८	गु.	३० १२	०	० ०	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	०	० ० ० ०	नवमी तिथि क्षय (A)२९/४३ से ३१/०३ तक
२	९	शु.	२९ ३७	उत्तराभाद्र	२९ ४३	वज्र सिद्धि	१ २ ५६ ५७	तैतिल	२७ १२	७ ०२	१७ ३८	मीन	०७/१५/३५/३५	सूर्य ज्येष्ठा पर ३०/५५ बुध उदय प. १४/५३ बुध मूल धनु पर ३०/४७ सर्वा अमृत (A)
३	१०	श.	२९ ३४	रेवती	३० १६	व्यतीपात	५३ ४९	वणिज	२६ २३	७ ०३	१७ ३८	मेष ३०/१६	०७/१६/३६/२६	भद्रा १७/३६ से २९/३४ तक मोक्षदा ११ व्रत स्मा. पंचक समाप्त ३०/१६ गीता जं. (B)
४	११	र.	२९ ५९	अश्विनी	- -	वरीयान	५१ ३६	बव	२६ ४८	७ ०४	१७ ३८	मेष	०७/१७/३७/१७	मोक्षदा ११ व्रत वै.निम्बा नौ सेना दि. मंगल रोहिणी पर १९/१९ सर्वा ०७/०४ से ३१/०४ तक
५	१२	चं.	३० ५०	अश्विनी	०७ १६	परिध	५० १३	कौलव	२८ २१	७ ०४	१७ ३८	मेष	०७/१८/३८/०९	सोम प्रदोष व्रत शुक्र मूल धनु पर १७/५६
६	१३	मं.	- -	भरणी	०८ ४१	शिव	४९ ३४	गर	३० ५५	७ ०५	१७ ३८	वृषभ १५/०८	०७/१९/३९/०३	पिशाच मोचन श्राद्ध सर्वा ०८/४१ से (C) दिवस सर्वा ३१/०६ तक
७	१४	बु.	०८ ०५	कृतिका	१० २८	सिद्धि	४९ ३५	वणिज	०२ २७	७ ०६	१७ ३८	वृषभ	०७/२०/३९/५७	भद्रा ०८/०५ से २०/५२ तक पूर्णिमा व्रत श्रीदत्त महाप्रभु जं. सशस्त्र सेना झण्डा (C)
८	१५	गु.	०९ ४०	रोहिणी	१२ ३५	साध्य	५० १३	बव	०६ २४	७ ०६	१७ ३९	मिथुन २५/४७	०७/२१/४०/५३	पुर्णिमा पुण्य

मार्ग शीर्ष शुकल पक्ष १५ गुरुवार

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
७	१	१	८	११	८	९	०	६
२१	११	२२	०७	०४	०३	२६	१७	१७
४०	४४	००	२५	५७	०६	०९	१८	१८
५३	३७	४२	५४	५४	४८	१२	००	००
६०	७२१	२३	८८	०३	७५	०४	०३	०३
५७	३५	००	४८	००	१८	२४	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
ज्येष्ठ २	रोहिणी ३	रोहिणी ४	मूल ३	उत्तराभा. १	मूल १	धनिष्ठा १	भरणी २	स्वाति ४

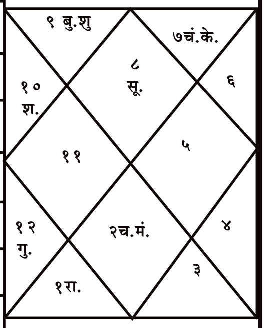

श्री विक्रम सं. २०७९ पौष कृष्ण पक्ष १८

तारीख ९ दिसम्बर से २३ दिसम्बर सन् २०२२ ईस्वी तक
दक्षिणायण, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु
(यहां पर सभी समय भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में दिया गया है)

ता. दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	करण	घटी पल	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घ. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ मि.	सूर्य स्पष्ट प्रातः५/३० बजे का	
९	१	शु.	११ ३५	मृगशिरा	१४ ५९	शुभ	५१ २४	कौलव	११ ०९	६ ०७	१७ ३९	मिथुन	०७/२२/४१/५०	०
१०	२	श.	१३ ४६	आर्द्रा	१७ ४०	सुकर्मा शुक्ल धृति	४ २७ ५३ ४५	गर	१६ ३७	६ ०८	१७ ३९	मिथुन	०७/२३/४२/४७	भद्रा २६/५९ से विश्व मानवाधिकार दि.
११	३	र.	१६ १२	पुनर्वसु	२० ३३	ब्रह्म	५५ ०७	विष्टि	२२ ४०	६ ०८	१७ ३९	कर्क १३/४९	०७/२४/४३/४६	भद्रा १६/१२ तक चतुर्थी व्रत चंद्रोदय २०/२१ सर्वा २०/३३ से रवि पुण्य २०/३३ से ३१/०९तक
१२	४	चं.	१८ ४७	पुष्य	२३ ३३	ऐन्द्र	५७ १८	बालव	२९ ०४	६ ०९	१७ ४०	कर्क	०७/२५/४४/४५	बुध पूर्वाषा. पर ३०/२३ तक
१३	५	मं.	२१ २०	आश्लेषा	२६ ३२	वैधृति	५९ २०	कौलव	०२ १६	६ १०	१७ ४०	सिंह २६/३२	०७/२६/४५/४५	भद्रा २३/४२ से (B) ०७/१२ से १०/१५ तक
१४	६	बु.	२३ ४२	मघा	२९ १७	विष्कुंभ	६० ००	गर	०८ २४	७ १०	१७ ४०	सिंह	०४/२७/४६/४६	भद्रा १२/४१ तक सरदार वल्लभ भाई पटेल पुण्य
१५	७	गु.	२५ ४०	पूर्वाफा	- -	विष्कुंभ	०० ४९	विष्टि	१३ ४७	७ ११	१७ ४१	सिंह	०७/२८/४७/४८	सूर्य मूल धनु ०९/५३ कालाष्टामी बं. पौष मास प्रा. मल मास प्रा. शुक्र पूर्वाषा. पर ०९/०२
१६	८	शु.	२७ ०२	पूर्वाफा.	०७ ३६	प्रीति	०१ २७	बालव	१७ ५५	७ ११	१७ ४१	कन्या १४/०१	०७/२९/४८/५१	(C) उत्तरायणे शिशिर ऋतु प्रा. सर्वा अमृत ०८/३१ से ३०/२२ तक
१७	९	श.	२७ ४०	उत्तराफा	०९ १७	आयुष्मान सौभाग्य	०० ५४ ५९ ००	तैतिल	२० २५	७ १२	१७ ४१	कन्या	०७/००/४८/५४	भद्रा १५/३५ से २७/२९ तक पौषी १० जैन श्री संघ श्री पार्श्वनाथ ज. सर्वा अमृत (B)
१८	१०	र.	२७ २९	हस्त	१० १५	शोभन	५५ २२	वणिज	२० ५७	७ १२	१७ ४२	तुला २२/२१	०८/०१/५०/५८	सफला ११ व्रत स्मात. वै.
१९	११	चं.	२६ २८	चित्रा	१० २६	अतिगण्ड	५० ०८	बव	१९ २५	७ १३	१७ ४२	तुला	०८/०२/५२/०२	सफलता ११ व्रत निम्बा
२०	१२	मं.	२४ ४०	स्वाति	०९ ५०	सुकर्मा	४३ २२	कौलव	१५ ५३	७ १३	१७ ४३	वृश्चिक २६/५०	०८/०२३/५३/०४	भद्रा २२/१२ से प्रदोष व्रत मास शिवरात्रि सायन सूर्य मकर पर २७/१५ रवि (C)
२१	१३	बु.	२२ १२	विशाखा अनुराधा	०८ ३१ ३० ३२	धृति	३५ १५	गर	१० ३१	७ १४	१७ ४३	वृश्चिक	०८/०४/५४/१३	भद्रा ०८/४२ तक रा. पौष मास प्रा. बुध उत्तराषा पर २२/१९ जय प्रभविजय पुण्य त्रि.स्तु जैन
२२	१४	गु.	१९ ११	ज्येष्ठा	२८ ०३	शूल	२६ ०३	विष्टि	०३ ३८	७ १४	१७ ४३	धनु २८/०३	०८/०५/५५/२०	देवपितृकार्ये अमावस्या राष्ट्रीय किसान दिवस
२३	३०	शु.	१५ ४७	मूल	२५ १४	गुण्ड	१६ ०३	नाग	२१ २०	७ १५	१७ ४४	धनु	०८/०६/५६/२६	

पौष कृष्ण पक्ष ३० शुक्रवार

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
८	८	१	८	११	८	९	०	६
०६	००	१६	२६	०६	२१	२७	१६	१६
५६	५४	५२	५७	०२	५५	२३	३०	३०
२६	०९	००	१२	४२	४२	०६	१८	१८
६१	१०७	१६	५१	०५	७५	०५	०३	०३
०७	२३	१२	३६	४८	१२	३०	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
मूल ३	मूल १	रोहिणी ३	उत्तराषा १	उत्तराभा. १	पूर्वाषा. ३	धनिष्ठा २	भरणी १	स्वाति ३

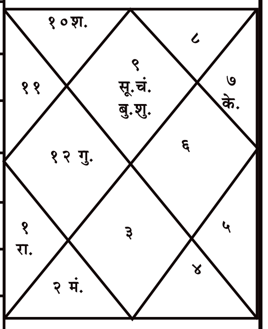

विक्रम पंचांग

वराहमिहिरः देवज्ञः वैज्ञानिकश्चासीत।
गतानुगतिकतायाः स्थाने वैज्ञानिकदृष्टिकोणस्य महत्वं प्रतिपादिलवान।
ग्रहनक्षत्रप्रभावाश्रितं फलित-ज्यौतिषं नाम शास्त्रं तस्दा प्रियपतिपाविषयोऽभवत।
तेन कृता कालगणना प्रामाणिकी अस्ति।

– आचार्य वराहमिहिर

विक्रम सम्वत् 2079 ''राक्षस'' नाम सम्वत्सर

कलि सम्वत् 5123 • सृष्टि आरम्भ 1955885123
राजा – शनि • मंत्री – गुरू

पौष शुक्ल पक्ष — 24 दिसम्बर से 6 जनवरी 2023 तक

माघ कृष्ण पक्ष — 7 जनवरी से 21 जनवरी 2023 तक

पौष शुक्ल पक्ष			वार	माघ कृष्ण पक्ष		
	उ.षा. १९/२५ 25 दिसम्बर द्वितीया तृतीया मदनमोहन मालवीय जयंती अटल बिहारी वाजपेयी जयंती	अश्वि १२/५१ 01 जनवरी दशमी	रविवार		पुष्य ३०/०३ 08 जनवरी द्वितीया	चित्रा १९/०६ 15 जनवरी अष्टमी थल सेना दिवस
	श्रवण १६/४६ 26 दिसम्बर चतुर्थी	भरणी १४/२७ 02 जनवरी एकादशी	सोमवार		पू.फा. दिन/रात 09 जनवरी द्वितीया	स्वाति १९/१७ 16 जनवरी नवमी
	धनिष्ठा १४/३१ 27 दिसम्बर पंचमी	कृतिका १६/२९ 03 जनवरी द्वादशी	मंगलवार		श्लेषा ०८/५९ 10 जनवरी तृतीया श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २०/५६	विशाखा १८/४० 17 जनवरी दशमी
	शत १२/४९ 28 दिसम्बर षष्ठी गुरू गोविन्दसिंह जयंती	रोहिणी १८/५१ 04 जनवरी त्रयोदशी प्रदोष व्रत	बुधवार		मघा ११/४८ 11 जनवरी चतुर्थी	अनुराधा १७/१७ 18 जनवरी एकादशी
	पू.भा. ११/४६ 29 दिसम्बर सप्तमी	मृगशिर २१/२७ 05 जनवरी चतुर्दशी	गुरूवार		पू.फा. १४/२३ 12 जनवरी पंचमी राष्ट्रीय युवा दिवस स्वामी विवेकानन्द जयंती	ज्येष्ठा १५/१४ 19 जनवरी द्वादशी प्रदोष व्रत
	उ.भा. ११/२६ 30 दिसम्बर अष्टमी	आर्द्रा २४/१४ 06 जनवरी पूर्णिमा श्री शांकम्भरी जयंती पूर्णिमा व्रत	शुक्रवार		उ.फा. १६/३३ 13 जनवरी षष्ठी लोहड़ी पर्व	मूल १५/१४ 20 जनवरी त्रयोदशी चतुर्दशी मास शिवरात्रि व्रत
पू.षा. २२/१८ 24 दिसम्बर प्रतिपदा चन्द्रदर्शन	रेवती ११/४९ 31 दिसम्बर नवमी		शनिवार	पुनर्वसु २७/०६ 07 जनवरी प्रतिपदा	हस्त १८/१० 14 जनवरी सप्तमी मकर संक्राती श्री रामानंदाचार्य जयंती	पू.षा. ०५/५१ उ.षा. ५७/५६ 21 जनवरी अमावस्या देवपितृकार्ये मौनी अमावस्या

आचार्य वराहमिहिर

(जन्म : 66 वि.पू., 123 ई.पू.)

मान्यनता अनुसार शीर्ष भारतीय गणितज्ञ एवं खगोलज्ञ आचार्य वराहमिहिर का जन्म 123 ई.पू. तथा 82 वर्ष की उम्र में अर्थात ई.पू. 41 में उन्होंने संसार से विदा ली। जबकि पश्चिम के इतिहासकारों ने भारतीय परम्परा के बारे में भ्रम खड़ा करने की परम्पहरा अनुसार वराहमिहिर का जन्म 505 ई. बताते रहे हैं। वराहमिहिर ने ही अपने पंचसिद्धान्तिका में सबसे पहले बताया कि अयनांश का मान 50.32 सेकण्ड के बराबर है। कापित्थक (उज्जैन) में उनके द्वारा विकसित गणितीय विज्ञान का गुरुकुल सात सौ वर्षों तक अद्वितीय रहा। उन्होंने अपने पिता से परम्परागत गणित एवं ज्योतिष सीखकर इन क्षेत्रों में व्यापक शोध कार्य किया। समय मापक घट यन्त्र, इन्द्रप्रस्थ में लौहस्तम्भ के निर्माण और ईरान में वेधशाला की स्थापना उनके प्रमुख कार्यों की झलक देते हैं। वे सूर्य के उपासक थे उन्होंने लघुजातक, बृहत्संहिता, बृहत्जातक, योगयात्रा और पंचसिद्धन्तिका नामक ग्रन्थों की रचना की। बृहत्संहिता में नक्षत्र-विद्या, वनस्पतिशास्त्र, प्रकृति, इतिहास, भौतिक व भूगोल जैसे विषयों का उल्लेख है। वराहमिहिर विक्रमादित्य के नवरत्नों में शामिल थे। हिन्दू ज्योतिष साहित्य के सबसे बड़े पुरोधा वराहमिहिर ने पंचसिद्धान्तिका नामक ग्रन्थ से पाँच सिद्धांतों की जानकारी दी है जिसमें भारतीय तथा पाश्चात्य ज्योतिष विज्ञान की जानकारी सम्मिलित है। फलित ज्योतिष की जानकारी उनके ग्रन्थों में अधिक है। जन्मकुंडली बनाने की विद्या को जिस होराशास्त्र के नाम से जाना जाता है उनका बृहज्जाकतक ग्रन्थ इसी शास्त्र पर आधारित है। लघुजातक इसी ग्रन्थ का संक्षिप्त रूप है। वराहमिहिर संख्या-सिद्धान्त नामक एक गणित ग्रन्थ के भी रचयिता हैं जिसके बारे में बहुत कम ज्ञात है। इस ग्रन्थ के बारे में पूरी जानकारी नहीं है, क्योंकि इसका एक छोटा अंश ही प्राप्त हो पाया है। प्राप्त ग्रन्थ के बारे में पुराविदों का कथन है कि इसमें उन्नत अंकगणित, त्रिकोणमिति के साथ-साथ कुछ अपेक्षाकृत सरल संकल्पनाओं का भी समावेश है। पृथ्वी की अयन-चलन नाम की ख़ास गति के कारण ऋतुओं का आगमन होता है, इसका भी वराहमिहिर ने ही ज्ञान कराया। गणित द्वारा की गयी नयी गणनाओं के आधार पर उन्होंने पंचांग का निर्माण किया। वराहमिहिर ने ज्या सारणी को और अधिक परिशुद्ध बनाया। उन्होंने शून्य एवं ऋणात्मक संख्याओं के बीजगणितीय गुणों को परिभाषित किया। इस महान् वैज्ञानिक की मृत्यु ई.पू. 41 में हुई। वराहमिहिर की मृत्यु के बाद ज्योतिष गणितज्ञ ब्रह्म गुप्त (ग्रंथ- ब्रह्मस्फुट सिद्धांत, खण्ड खाद्य), लल्ल(लल्ल सिद्धांत), वराहमिहिर के पुत्र पृथुयशा (होराष्ट पंचाशिका) और चतुर्वेद पृथदक स्वामी, भट्टोत्पन्न, श्रीपति, ब्रह्मदेव आदि ने ज्योतिष शास्त्र के ग्रंथों पर टीका ग्रंथ लिखे।

श्री विक्रम सं. २०७९ पौष शुक्ल पक्ष १९

ता. दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	करण	घटी पल	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घ. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ मि.	सूर्य स्पष्ट प्रातः५/३० बजे का	तारीख २४ दिसम्बर से ६ जनवरी सन् २०२३ ईस्वी तक दक्षिणायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु (यहां पर सभी समय भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में दिया गया है)
२४	१	श.	१२ ०९	पूर्वाषाढ़ा	२२ १८	वृद्धि ध्रुव	०५ ३२ ५४ ५१	बव	१२ १५	७ १५	१७ ४४	मकर २७/३४	०८/०७/५७/३४	चंद्रदर्शन
२५	२	र.	०८ २८	उत्तराषाढ़ा	१९ २५	व्याघात	४४ २३	कौलव	०३ ००	७ १६	१७ ४५	मकर	०८/०८/५८/४१	सर्वा ०७/१६ से १९/२५ तक मदनमोहन मालवीय जी. जं. बड़ा दिन यतीन्द्र सूरिश्वर (A)
०	३	र.	२८ ५५	.	० ०	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	०	० ० ० ०	तृतीया तिथि क्षय (A) पुण्य जमादिउल आखिर मास ६ मूस.
२६	४	चं.	२५ ४२	श्रवण	१६ ४६	हर्षण	३४ ३३	वणिज	२० ०५	७ १६	१७ ४६	कुंभ २७/३८	०८/०९/५९/४९	भद्रा १५/१८ से २५/४२ तक पंचक प्रा. २७/३८ शुक्र उत्तराषा. पर २४/१२ (B)
२७	५	मं.	२२ ५८	धनिष्ठा	१४ ३१	वज्र	२५ ३६	बव	१२ ३८	७ १७	१७ ४६	कुंभ	०८/११/००/५८	बुध मकर पर २९/०१ (B) सर्वा ०७/१६ से १६/४६ तक
२८	६	बु.	२० ४९	शतभिषा	१२ ४९	सिद्धि	१७ ४६	कौलव	०६ ३२	७ १७	१७ ४७	मीन ३०/०२	०८/१२/०२/०६	(C) पर १६/०२ श्री गुरु गोविन्दसिंह ज. गुरु राजेन्द्र सूरिश्वर जन्म व पुण्य
२९	७	गु.	१९ २२	पूर्वाभाद्र	११ ४६	व्यतीपात	११ १५	गर	०२ ०२	७ १७	१७ ४७	मीन	०८/१३/०३/१५	भद्रा १९/२२ से ३१/०७ तक सूर्य पूर्वाषा पर १२/०४ बुध वक्री १५/०२ शुक्र मकर (C)
३०	८	शु.	१८ ३९	उत्तराभाद्र	११ २६	वरीयान	०६ १०	बव	२८ २३	७ १८	१७ ४८	मीन	०८/१४/०४/२४	बुध धनु पर २२/०८ सर्वा अमृत ११/२६ से ३१/१८ तक
३१	९	श.	१८ ३८	रेवती	११ ४९	परिघ	०२ ३२	कौलव	२८ २०	७ १८	१७ ४८	मेष २१/४९	०८/१५/०५/३४	पंचक समाप्त ११/४९ (D) २०२३ प्रा. आचार्य जिनानंद सागर पुण्य खर गच्छ जैन
१	१०	र.	१९ १७	अश्विनी	१२ ५१	शिव सिद्धि	० १४ ५९ ०८	गर	२९ ५६	७ १८	१७ ४९	मेष	०८/१६/०६/४३	बुध अस्त प. ११/३९ सर्वा ०७/१८ से १२/५१ तक जनवरी मास १ ता. ३१ सन (D)
२	११	चं.	२० २८	भरणी	१४ २७	साध्य	५८ ५६	वणिज	०१ २५	७ १९	१७ ५०	वृषभ २०/५८	०८/१७/०७/५३	भद्रा ०७/५३ से २०/२८ तक पुत्रदा ११ व्रत सभी का
३	१२	मं.	२२ ०७	कृतिका	१६ २९	शुभ	५९ २९	बव	०४ ५७	७ १९	१७ ५०	वृषभ	०८/१८/०९/०३	सर्वा ०७/१९ से १६/२९ तक
४	१३	बु.	२४ ०४	रोहिणी	१८ ५१	शुक्ल	६० ००	कौलव	०९ २६	७ १९	१७ ५१	वृषभ	०८/१९/१०/१२	प्रदोष व्रत बुध पूर्वाषा. पर १५/५९ सर्वा ०७/१९ से ३१/१९ तक
५	१४	गु.	२६ १६	मृगशिरा	२१ २७	शुक्ल	०० ३६	गर	१४ ३८	७ १९	१७ ५२	मिथुन ०८/०९	०८/२०/११/२१	भद्रा २६/१६ से मरूधर केसरी मिश्रीमल पु. स्था. जेन
६	१५	शु.	२८ ३८	आर्द्रा	२४ १४	ब्रह्म	०२ ०६	विष्टि	२० १९	७ २०	१७ ५२	मिथुन	०८/२१/१२/३०	भद्रा १५/२७ तक पूर्णिमा व्रत श्री शांकभरी ज. माघ स्नान प्रा. शुक्र श्रवण पर १५/४२

पौष शुक्ल पक्ष १५
शुक्रवार

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
८	२	१	८	११	९	९	०	६
२१	१०	१४	२४	०७	०९	२८	१५	१५
१२	४१	१५	४८	३९	२८	४५	४५	४५
३०	०७	४८	१२	१२	०६	१२	४७	४७
६१	७१६	०५	७८	०८	७५	०६	०३	०३
०९	१४	०६	३६	०६	०६	१८	११	११
मा	मा	व	व	मा	मा	मा	व	व
पूर्वाषा ३	आर्द्रा २	रोहिणी २	पूर्वाषा. ४	उत्तराभा. २	उत्तराषा४	धनिष्ठा २	भरणी १	स्वाति ३

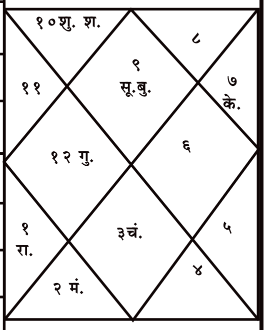

श्री विक्रम सं. २०७९ माघ कृष्ण पक्ष २०

ता. जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	करण	घटी पल	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घ. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ मि.	सूर्य स्पष्ट प्रातः५/३० बजे का	तारीख ७ जनवरी से २१ जनवरी सन् २०२३ ईस्वी तक दक्षिणायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु (यहां पर सभी समय भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में दिया गया है)
७	१	श.	३१ ०६	पुनर्वसु	२२ १८	ऐन्द्र	२६ २४	बालव	२६ २१	७ २०	१७ ५३	कर्क २०/२३	०८/२२/१३/३९	०
८	२	र.	- -	पुष्य	१९ २५	वैधृति	२६ २५	तैतिल	३२ ३६	७ २०	१७ ५४	कर्क	०८/२३/१४/४८	सर्वा ०७/२० से ३०/०३ तक रवि पुष्य ०७/२० से ३०/०३ तक
९	२	चं.	०९ ३८	आश्लेषा	० ०	विष्कुंभ	२६ २६	गर	०५ ४६	७ २०	१७ ५५	सिंह०८/५९	०८/२४/१५/५६	भद्रा २२/५३ से
१०	३	मं.	१२ ०९	आश्लेषा	१६ ४६	प्रीति	२६ २८	विष्टि	१२ ०१	७ २०	१७ ५५	सिंह	०८/२५/१७/०४	भद्रा १२/०९ तक तिल चतुर्थी व्रत चंद्रोदय २०/५६ सर्वा ०७/२० से ०८/५९ तक
११	४	बु.	१४ ३१	मघा	१४ ३१	आयुष्मान	२६ ३०	बालव	१७ ५६	७ २०	१७ ५६	कन्या२०/५५	०८/२६/१८/१२	सूर्य उत्तराषाढ़ा पर १४/०३
१२	५	गु.	१६ ३६	पूर्वाफा	१२ ४९	सौभाग्य	२६ ३१	तैतिल	२३ १०	७ २०	१७ ५७	कन्या	०८/२७/१९/२०	मंगल मार्गी २६/२७ स्वामी विवेकानंद ज. राष्ट्रीय युवा दिवस
१३	६	शु.	१८ १६	उत्तराफा	११ ४६	शोभन	२६ ३३	वणिज	२७ १८	७ २०	१७ ५७	तुला३०/३८	०८/२८/२०/२८	भद्रा १८/१६ से ३०/४८ तक लोहड़ी पर्व पंजाब बुध उदय पू.० १८/३१
१४	७	श.	१९ २०	हस्त	११ २६	अतिगण्ड	२६ ३५	बाव	२९ ५९	७ २०	१७ ५८	तुला	०८/२९/२१/३५	सूर्य मकर पर २०/३५ बं. माघ मास प्रा. श्री रामानंदाचार्य ज.
१५	८	र.	१९ ४१	चित्रा	११ ४९	सुकर्मा	२६ ३७	बालव	०० २५	७ २०	१७ ५९	तुला	०९/००/२२/४२	थल सेना दिवस
१६	९	चं.	१९ १५	स्वाति	१२ ५१	धृति	२६ ३९	तैतिल	०० १९	७ २०	१८ ००	वृश्चिक१२/४९	०९/०१/२३/४८	भद्रा ३०/३७ से
१७	१०	मं.	१७ ५९	विशाखा	१४ २७	शूल गण्ड	०२ ५९ ५६ ३१	विष्टि	२६ ३८	७ २०	१८ ००	वृश्चिक	०९/०२/२४/५४	भद्रा १७/५९ तक शुक्र धनिष्ठा पर ०७/४१ शनि कुंभ पर १७/५९
१८	११	बु.	१५ ५८	अनुराधा	१६ २९	वृद्धि	२६ ४३	बसलच	२१ ३४	७ २०	१८ ०१	वृश्चिक	०९/०३/२४/५९	षट्तिला ११ व्रत सभी का, बुध मार्गी १८/४२ सर्वा अमृत ०७/२० से १७/१७ तक
१९	१२	गु.	१३ १५	ज्येष्ठ	१८ ५१	ध्रुव	२६ ४५	तैतिल	१४ ४८	७ २०	१८ ०२	धनु९/४४	०९/०४/२७/०४	प्रदोष व्रत
२०	१३	शु.	०९ ५९	मूल.	२१ २७	व्याघात	२६ ४७	वणिज	०६ ३९	७ २०	१८ ०३	धनु	०९/०५/२८/०९	भद्रा ०९/५९ से २०/०९ तक मास शिवरात्रि सायन सूर्य कुंभ पर १३/५७ मेरू त्रयोदशी जैन
०	१४	शु.	३० १८	०	२४ १४	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	०	० ० ० ०	चतुर्दशी तिथि क्षय (A) प्रयोग राज स्नान मेला सर्वा ३०/३० से ३१/१९६ तक
२१	३०	श.	२६ २४	पूर्वाषा उत्तराषा	०९ ४० ३० ३०	हर्षण	२६ ४९	चतुष्पद	२२ ३३	७ २०	१८ ०३	मकर१४/५३	०९/०६/२९१२	देवपितृकार्ये मौनी अमावस्या माघ मास प्रा. सूर्य अभिजित पर ०९/५० (A)

माघ कृष्ण पक्ष ३०
शनिवार

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
९	८	१	८	११	९	१०	०	६
०६	२४	१४	१४	०९	२८	००	१४	१४
२१	००	२१	२१	५५	१२	२३	५८	५८
१२	१४	४२	१८	०६	४८	३६	०६	०६
६१	१२१	०६	२१	१०	७४	०६	०३	०३
०३	२०	१८	५४	०६	४८	५४	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उत्तराषा ३	पूर्वाषा ४	रोहिणी २	पूर्वाषा १	उत्तराभा. २	धनिष्ठा २	धनिष्ठा ३	भरणी १	स्वाति ३

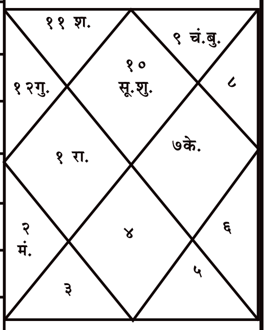

समस्य द्विकरणी।
प्रमाणं तृतीयेन वर्धयेत्तच्च चतुर्थेनात्मचतुस्त्रिंशोनेन सविशेषः।

-वररुचि

विक्रम पंचांग

माघ शुक्ल पक्ष
22 जनवरी से 5 फरवरी 2023 तक

विक्रम सम्वत् 2079 ''राक्षस'' नाम सम्वत्सर

कलि सम्वत् 5123 • सृष्टि आरम्भ 1955885123
राजा – शनि • मंत्री – गुरू

फाल्गुन कृष्ण पक्ष
6 फरवरी से 20 फरवरी 2023 तक

			वार			
श्रवण २७/२२ 22 प्रतिपदा जनवरी गुप्तनवरात्र विधान प्रा.	भरणी २०/२५ 29 अष्टमी जनवरी देवनारायण जयंती भीष्माष्टमी श्री माधवाचार्य जयंती	पुष्य १२/२२ 05 पूर्णिमा फरवरी पूर्णिमा व्रत गुरू रविदास जयंती	रविवार		स्वाति २६/२६ 12 षष्ठी फरवरी लोहड़ी पर्व	श्रवण १४/४४ 19 चतुर्दशी फरवरी
धनिष्ठा २४/२९ 23 द्वितीया जनवरी चन्द्रदर्शन नेताजी सुभाष चंद्र जयंती	कृतिका २२/१८ 30 नवमी जनवरी		सोमवार	श्लेषा १५/०१ 06 प्रतिपदा फरवरी	विशाखा २६/३५ 13 सप्तमी फरवरी	धनिष्ठा ११/४७ 20 अमावस्या फरवरी सोमवती अमावस्या देवपितृकार्ये मौनी अमावस्या
शत २२/०३ 24 तृतीया जनवरी तिल चौथ वरद विनायक चौथ गौरी	रोहिणी २४/४१ 31 दशमी जनवरी		मंगलवार	मघा १७/४२ 07 द्वितीया फरवरी	अनुराधा २६/०० 14 अष्टमी फरवरी सीताष्टमी	
पू.भा. २०/११ 25 चतुर्थी जनवरी बसंत पंचमी सरस्वती जयंती	मृगशिर २७/२४ 01 एकादशी फरवरी		बुधवार	पू.फा. २०/१२ 08 तृतीया फरवरी	ज्येष्ठा २४/४४ 15 नवमी दशमी फरवरी दशमी तिथि क्षय	
उ.भा. १९/०३ 26 पंचमी जनवरी गणतंत्र दिवस संत नामदेव जयंती	आर्द्रा ३०/१९ 02 द्वादशी फरवरी		गुरूवार	उ.फा. २२/२४ 09 चतुर्थी फरवरी श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २१/२७	मूल २२/५० 16 एकादशी फरवरी विजया एकादशी	
रेवती १८/४३ 27 षष्ठी जनवरी	पुनर्वसु दिन/रात 03 त्रयोदशी फरवरी प्रदोष व्रत गोरखनाथ जयंती		शुक्रवार	हस्त २४/१५ 10 चतुर्थी फरवरी	पू.षा. २०/२६ 17 द्वादशी फरवरी	
अश्वि १९/११ 28 सप्तमी जनवरी	पुनर्वसु ०९/१६ 04 चतुर्दशी फरवरी श्री शांकम्भरी जयंती पूर्णिमा व्रत		शनिवार	चित्रा २६/२६ 11 पंचमी फरवरी	उ.षा. १७/४० 18 त्रयोदशी फरवरी शनि प्रदोष व्रत मास शिवरात्रि व्रत	

वररुचि

वररुचि वि' मादित्य के नवरत्नों में से एक थे। पाणिनि के बाद, कालिदास पूर्व महाकाव्य-परम्परा में लिखने वाले वररुचि का नाम लिया जाता है। वररुचि ने पत्रकौमुदी नामक काव्य की रचना की। पत्रकौमुदी काव्य के आरंभ में उन्होंने लिखा है कि वि' मादित्य के आदेश से ही वररुचि ने पत्रकौमुदी काव्य की रचना की। इन्होंने विद्यासुंदर नामक एक अन्य काव्य भी लिखा। इसकी रचना भी उन्होंने विक्रमादित्य के आदेश से की थी। प्रबंध चिंतामणि में वररुचि को विक्रमादित्य की पुत्री का गुरु कहा गया है। वररुचि को वि' मादित्य के धर्माधिकारी पुरोहित भी माना जाता है। वे व्याकरण के ज्ञाता थे। उनकी विलक्षणता अन्य विद्वानों के द्वारा प्रतिपादित है। काव्यमीमांसा के अनुसार वररुचि ने पाटलिपुत्र में शास्त्रकार परीक्षा उत्तीर्ण की थी। कथासरित्सागर के अनुसार वररुचि का दूसरा नाम कात्यायन था। इनका जन्म कौशाम्बी के ब्राह्मण कुल में हुआ था। जब ये पाँच वर्ष के थे तभी इनके पिता की मृत्यु हो गयी थी। ये आरंभ से ही तीक्ष्ण बुद्धि के थे। एक बार सुनी बात ये उसी समय ज्यों-की-त्यों कह देते थे। एक समय व्याडि और इन्द्रदत्त नामक विद्वान इनके यहाँ आये। व्याडि ने प्रातिशाख्य का पाठ किया। इन्होंने इसे वैसे का वैसा ही दुहरा दिया। वैयाकरण व्याडि इनसे बहुत प्रभावित हुए और इन्हें पाटलिपुत्र ले गए। वहाँ इन्होंने शिक्षा प्राप्त की तथा शास्त्रकार परीक्षा उत्तीर्ण की।

संस्कृत वाङ्मय के इतिहास में वररुचि के नाम से कई ग्रन्थों के नाम मिलते हैं और कुछ सूक्ति-संग्रहों, जैसे- सुभाषितावली, शार्ङगधरपद्धति और सदुक्तिकर्णामृत आदि में भी अनेक पद्यों के रचयिता के रूप में उद्धृत हैं। पाणिनीय व्याकरण पर वार्तिक लिखने वाले कत्यायन को तथा प्राकृत-प्रकाश नाम के प्राकृत-व्याकरण के रचयिता को भी वररुचि नाम से जाना जाता है। यहाँ तक, पालि भाषा का कच्चायन व्याकरण भी कात्यायन द्वारा निर्मित होने से वररुचि से जुड़ जाता है। तारानाथ ने अपने भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास में 'ब्राह्मण-वररुचि' या आचार्य-वररुचि को उद्धृत किया है। कथासरित्सागर (कहानियों की धाराओं का सागर) भारतीय किंवदंतियों, परियों की कहानियों और लोक कथाओं का एक प्रसिद्ध 11 वीं शताब्दी का संग्रह है। कहानियों के इस महान संग्रह के पहले चार अध्यायों में वररुचि की कहानी को बहुत विस्तार से उल्लेखित किया गया है। प्राचीन भारत में, व्याकरण सभी विज्ञानों में सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण था। जब किसी ने पहली बार व्याकरण का अध्ययन किया था, तो वह किसी अन्य विज्ञान को सीखने के लिए जा सकता था। आचार्य वररुचि प्राचीन व्याकरण के एक महत्वपूर्ण स्तंभ माने जाते हैं।

श्री विक्रम सं. २०७९ माघ शुक्ल पक्ष २१

तारीख २२ जनवरी से ५ फरवरी सन् २०२३ ईस्वी तक
दक्षिणायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु
(यहां पर सभी समय भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में दिया गया है)

ता. जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	करण	घटी पल	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घ. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ मि.	सूर्य स्पष्ट प्रातः५/३० बजे का	
२२	१	र.	२२ ३०	श्रवण	२७ २२	व्रज सिद्धि	०६ ५६ ५५ ५४	किंस्तुघ्न	२६ ५२	७ १९	१८ ०४	मकर	०९/०७/३०/१५	गुप्त नवरात्रि विधान प्रा. शुक्र कुंभ पर १५/५३ (A) तृतीया रज्जब मास ७ मुस
२३	२	चं.	१८ ४८	धनिष्ठ	२४ २९	व्यतीपात	४५ २५	बालव	२६ ५४	७ १९	१८ ०५	कुंभ १३/५६	०९/०८/३१/१८	चंद्रदर्शन बाबा रामदेव दूज पंचक प्रा. १३/५६ नेताजी सुभाष जं. (C) से १८/४३ तक
२४	३	मं.	१५ २८	शतभिषा	२२ ०३	वरीयान	३५ ५४	गर	२६ ५७	७ १९	१८ ०६	कुंभ	०९/०९/३२/२०	भद्रा २६/०४ से सूर्य श्रवण पर १६/२३ तिल चौथ वरद विनायक चौथ गौरी (A)
२५	४	बु.	१२ ४०	पूर्वाभाद्र	२० ११	पघि	२७ ३४	विष्टि	२६ ५९	७ १९	१८ ०६	मीन १४/३९	०९/१०/३३/२१	भद्रा १२/४० तक बसंत पंचमी सरस्वती जं. श्री राधेश्याम सुन्दर पंचमी वृंदावन (B)
२६	५	गु.	१० ३३	उत्तराभाद्र	१९ ०३	शिव	२० ३९	बालव	२७ ०२	७ १९	१८ ०७	मीन	०९/११/३४/२१	संत नामदेव ज. गणतंत्र दि. सर्वा १९/०३ से (B) श्री पंचमी अभिजित निवृत्त सूर्य १३/२५
२७	६	शु.	०९ १४	रेवती	१८ ४३	सिद्धि	१५ १९	तैतिल	२७ ०४	७ १८	१८ ०८	मेष १८/४३	०९/१२/३५/२०	पंचक समाप्त १८/४३ शुक्र शतभिषा पर २४/१७ सर्वा ३१/१८ तक अमृत ०७/१८ (C)
२८	७	श.	०८ ४६	अश्विनी	१९ ११	साध्य	११ ३८	वणिज	२७ ०७	७ १८	१८ ०९	मेष	०९/१३/३९/१९	भद्रा ०८/४६ से २०/५७ तक श्री नर्मदा जं. अचला रथ आरोग्य सप्तमी श्री (D)
२९	८	र.	०९ ०८	भरणी	२० २५	शुभ	०९ ३३	बव	२७ ०९	७ १८	१८ ०९	वृषभ २६/५३	०९/१४/३७/१६	(D) देवनारायण ज. भीष्माष्टमी श्री माधवाचार्य जं.
३०	९	चं.	१० १४	कृतिका	२२ १८	शुक्ल	०८ ५१	कौलव	२७ १२	७ १७	१८ १०	वृषभ	०९/१५/३८/१३	गांधी पुण्य तिथि शनि अस्त प. २६/५८ सर्वा २२/१८ से ३१/१७ तक
३१	१०	मं.	११ ५६	रोहिणी	२४ ४१	ब्रह्म	०९ १७	गर	२७ १५	७ १७	१८ ११	वृषभ	०९/१६/३८/०९	भद्रा २५ से (E) फरवरी मास २ ता. २८ प्रा. सर्वा ०७/१६ से २७/२४ तक
१	११	बु.	१४ ०४	मृगशिरा	२७ २४	ऐन्द्र	१० ३३	विष्टि	२७ १८	७ १६	१८ १२	मिथुन १४/०३	०९/१७/४०/०४	भद्रा १४/०४ तक जया ११ व्रत सभी का वेणेश्वर मेला डूंगरपुर राज. भीषम एकादशी (E)
२	१२	गु.	१६ २८	आर्द्रा	३० १९	वैधृति	१२ २१	बालव	२७ २१	७ १६	१८ १२	मिथुन	०९/१८/४०/५७	सर्वा ३०/१९ से (F) ललिता ज. माघ स्नान पूर्ण सर्वा रविपुष्य ०७/१५ से १२/२२ तक
३	१३	शु.	१८ ५९	पुनर्वसु	- -	विष्कुंभ	१४ २४	तैतिल	२७ २४	७ १६	१८ १३	कर्क २६/३२	०९/१९/४१/५०	प्रदोष व्रत गुरु गोरखनाथ ज. सर्वा ३१/१५ तक
४	१४	श.	२१ ३०	पुनर्वसु	०९ १६	प्रीति	१६ ३१	गर	२७ २७	७ १५	१८ १४	कर्क	०९/२०/४२/४२	भद्रा २१/३० से रामचरण राम स्नेही जन्म स्वामी कर पात्री जी पुण्य बुध उत्ताराषा पर १४/५३
५	१५	र.	२३ ५८	पुष्य	१२ २२	आयुष्मान	१८ ३२	विष्टि	२७ ३०	७ १५	१८ १४	कर्क	०९/२१/४३/३२	भद्रा १०/४४ तक पूर्णिमा व्रत गुरु रविदास ज. माघ कवि ज. माहीनदी स्नान श्री (F)

माघ शुक्ल पक्ष १५
रविवार

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
९	३	१	८	११	१०	१०	०	६
२१	१३	१७	२७	१२	१६	०२	१४	१४
४३	२०	०१	२४	३८	५२	०९	१०	१०
३२	४१	१८	००	३०	४२	०६	२४	२४
६०	७१४	१५	७४	११	७४	०७	०३	०३
४९	३९	०६	००	४२	२४	०६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
श्रवण ४	पुष्य ४	रोहिणी ३	उत्तराषा १	उत्तराभा. ३	शतभिषा ४	धनिष्ठा ३	भरणी १	स्वाति ३

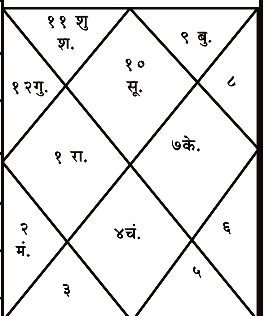

श्री विक्रम सं. २०७९ फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

तारीख ६ फरवरी से २० फरवरी सन् २०२३ ईस्वी तक
दक्षिणायण, दक्षिण गोल, शिशिर-बसंत ऋतु
(यहां पर सभी समय भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में दिया गया है)

ता. फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	करण	घटी पल	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घ. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ मि.	सूर्य स्पष्ट प्रातः५/३० बजे का	
६	१	चं.	२६ १७	आश्लेषा	१५ ०१	सौभाग्य	२० २१	बालव	१४ ४३	७ १४	१८ १५	सिंह १५/०१	०९/२२/४४/२२	सूर्य धनिष्ठा पर १९/३४
७	२	मं.	२८ १७	मघा	१७ ४२	शोभन	२१ ५४	तैतिल	२० २१	७ १४	१८ १६	सिंह	०९/२३/४५/१०	बुध मकर पर ०७/२८ शुक्र पूर्वाभा. पर १७/५५
८	३	बु.	३० २३	पूर्वाफा	२० १२	अतिगण्ड	२३ ०४	वणिज	२५ २९	७ १३	१८ १७	कन्या २६/४५	०९/२४/४५/५७	चतुर्थी व्रत चंद्रोदय२१/२७
९	४	गु.	- -	उत्तराफा	२२ २४	सुकर्मा	२३ ४३	बव	२९ ५५	७ १२	१८ १७	कन्या	०९/२५/४६/४३	(B)१२/५४ सायन सूर्य मीन पर २८/०२ बसंत ऋतु प्रा. सर्वा १७/४० से ३१/०६ तक
१०	४	शु.	०७ ५८	हस्त	२४ १५	धृति	२३ ४१	बालव	०१ ५६	७ १२	१८ १८	कन्या	०९/२६/४७/२७	सर्वा २५/३८ से ३१/११ तक
११	५	श.	०९ ०८	चित्रा	२५ ३८	शूल	२२ ४७	तैतिल	०४ ५२	७ ११	१८ १९	तुला१२/५७	०९/२७/४८/११	भद्रा ०९/४६ से २१/४६ तक (A) सर्वा २६/३५ से ३१/०११ तक
१२	६	र.	०९ ४६	स्वाति	२६ २६	गण्ड	२० ४९	वणिज	०६ २८	७ ११	१८ १९	तुला	०९/२८/४८/५३	सूर्य कुंभ पर ०९/३८ बं. फाल्गुन मास प्रा. श्रीनाथजी पाटोत्सव नाथद्वारा राज. (A)
१३	७	चं.	०९ ४६	विशाखा	२६ ३५	वृद्धि	१७ ३७	बव	०६ ३०	७ १०	१८ २०	वृश्चिक२०/३३	०९/२९/४९/३३	सीताष्टमी बुध श्रवण पर १६/२३
१४	८	मं.	०९ ०५	अनुराधा	२६ ००	ध्रुव	१३ ०४	कौलव	०४ ४९	७ ०९	१८ २०	वृश्चिक	१०/००/५०/१२	भद्रा १८/३८ से २९/३४ तक समर्थ रामदास नवमी शुक्र मीन पर २०/०१
१५	९	बु.	०७ ४१	ज्येष्ठा	२४ ४४	व्याघात हर्षण	०७ ०७ ५९ ५०	गर	०१ २२	७ ०९	१८ २१	धनु २४/४४	१०/०१/५०/५०	दशमी तिथि क्षय
०	१०	बु.	२९ ३४	०	० ०	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	०	० ० ० ०	विजया ११ व्रत स्मा वैष्णव
१६	११	गु.	२६ ४९	मूल	२२ ५०	वज्र	५१ ०६	बव	२२ ३८	७ ०८	१८ २२	धनु	१०/०२/५१/२७	विजया ११ व्रत स्मा निम्बा (C) राहु अश्विनी पर २३/४०
१७	१२	शु.	२३ ३५	पूर्वाषाढा	२० २६	सिद्धि	४१ २६	कौलव	१५ ११	७ ०७	१८ २२	मकर २५/४५	१०/०३/५२/०१	भद्रा २०/०१ से ३०/१० तक शनि प्रदोष व्रत महाशिवरात्रि व्रत शुक्र उत्तराभा. पर (B)
१८	१३	श.	२० ०१	उत्तराषाढ़ा	१७ ४०	व्यतीपात	३१ ०८	गर	०६ ४३	७ ०७	१८ २३	मकर	१०/०४/५२/३५	सूर्य शतभिषा पर २४/०६ स्वामी दयानंद बोधोत्सव पंचक प्रा. २५/१३
१९	१४	र.	१६ १९	श्रवण	१४ ४४	वरीयान	२० ३२	शकुनि	२३ ०२	७ ०६	१८ २४	कुंभ २५/१६	१०/०५/५३/०७	देवपितृकार्ये अमावस्या शिवखप्पर पूजा रा. फाल्गुन मास प्रा. सोमवती अमावस्या (C)
२०	३०	चं.	१२ ३७	धनिष्ठा	११ ४७	परिध शिव	०९ ५५ ५९ ३९	नाग	१३ ५०	७ ०५	१८ २४	कुंभ	१०/०६/५३/३७	

फाल्गुन कृष्ण पक्ष ३०
सोमवार

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
१०	१०	१	९	११	११	१०	०	६
०६	०२	२१	१८	१५	०५	०३	१३	१३
५३	४२	३३	११	४३	२५	५७	२२	२२
३७	२१	०६	००	००	००	३६	४२	४२
६०	१०६	२१	९१	१२	४३	०७	०३	०३
२९	२८	१८	४८	५४	४८	१२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
शतभिषा १	धनिष्ठा ३	रोहिणी ४	श्रवण ३	उत्तराभा ४	उत्तराभा ४	धनिष्ठा ४	भरणी १	स्वाति ३

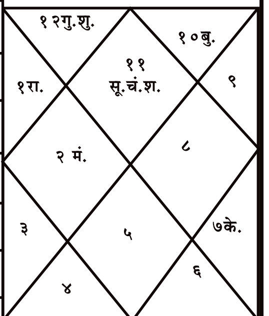

रसाचार्यः कविर्व्यािडः शब्दब्रह्मैकवाङ्मुनिः।
दाक्षीपुत्रवचोव्याख्यापटुर्मीमांसाग्रणिः ।

—आचार्य व्याडि

विक्रम पंचांग

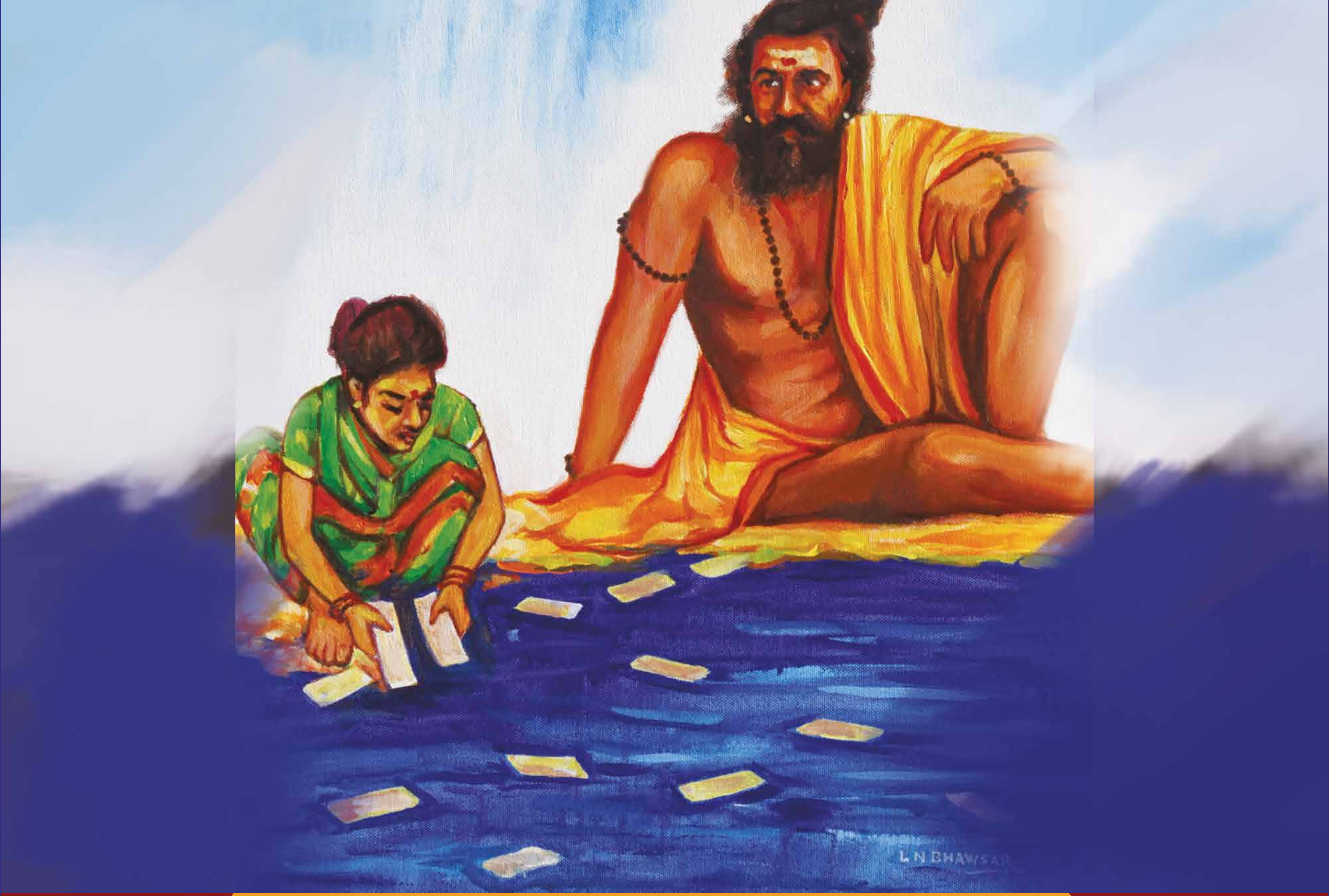

फाल्गुन शुक्ल पक्ष
20 फरवरी से 7 मार्च 2023 तक

विक्रम सम्वत् 2079 ''राक्षस'' नाम सम्वत्सर
कलि सम्वत् 5123 • सृष्टि आरम्भ 1955885123
राजा - शनि • मंत्री - गुरू

फाल्गुन कृष्ण पक्ष
8 मार्च से 21 मार्च 2023 तक

	फाल्गुन शुक्ल पक्ष			वार	फाल्गुन कृष्ण पक्ष		
		कृतिका २९/१८ 26 सप्तमी जनवरी होली अष्टह्निका विधान प्रा.	श्लेषा २१/३० 05 त्रयोदशी मार्च	रविवार		स्वाति ०८/०० 12 पंचमी मार्च रंगपंचमी	धनिष्ठा २२/०४ 19 द्वादशी त्रयोदशी मार्च प्रदोष व्रत
		रोहिणी दिन/रात 27 अष्टमी फरवरी	मघा २४/०३ 06 चतुर्दशी मार्च होलिका दहन	सोमवार		विशाखा ०८/२३ 13 षष्ठी मार्च	शत १९/४१ 20 चतुर्दशी मार्च मास शिवरात्रि व्रत
	शत ०९/०१ पू.भा. ३०/३९ 21 प्रतिपदा द्वितीया फरवरी चन्द्रदर्शन द्वितीया तिथि का क्षय	रोहिणी ०७/१८ 28 नवमी फरवरी विज्ञान दिवस	पू.फा. २६/१९ 07 पूर्णिमा मार्च पूर्णिमा व्रत, घुलेण्डी चैतन्य महाप्रभु जयंती	मंगलवार		अनुराधा ०८/१६ 14 सप्तमी मार्च शीतला सप्तमी	पू.भा. १७/२९ 20 अमावस्या मार्च भौमवती अमावस्या देवपितृकार्ये मौनी अमावस्या
	उ.भा. २८/५२ 22 तृतीया फरवरी तिल चौथ वरद विनायक चौथ गौरी	मृगशिर ०९/५१ 01 दशमी मार्च		बुधवार	उ.फा. २८/१७ 08 प्रतिपदा मार्च विश्व महिला दिवस	ज्येष्ठा ०७/३७ मूल ३०/२८ 15 अष्टमी मार्च	
	रेवती २७/४७ 23 चतुर्थी फरवरी बसंत पंचमी सरस्वती जयंती	आर्द्रा १२/४४ 02 एकादशी मार्च		गुरूवार	हस्त २९/५५ 09 द्वितीया मार्च संत तुकाराम जयंती	पू.षा. २८/४९ 16 नवमी मार्च	
	अश्वि २७/३० 24 पंचमी फरवरी गणतंत्र दिवस संत नामदेव जयंती	पुनर्वसु २५/४४ 03 एकादशी मार्च		शुक्रवार	चित्रा दिन/रात 10 तृतीया मार्च	उ.षा. २६/४७ 17 दशमी मार्च दशामाता व्रत	
	भरणी २८/०० 25 षष्ठी फरवरी	पुष्य १८/४२ 04 द्वादशी मार्च शनि प्रदोष व्रत		शनिवार	चित्रा ०७/१० 11 चतुर्थी मार्च श्री संकष्टी चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २२/०७	श्रवण २४/२९ 18 एकादशी मार्च पापमोचिनी एकादशी	

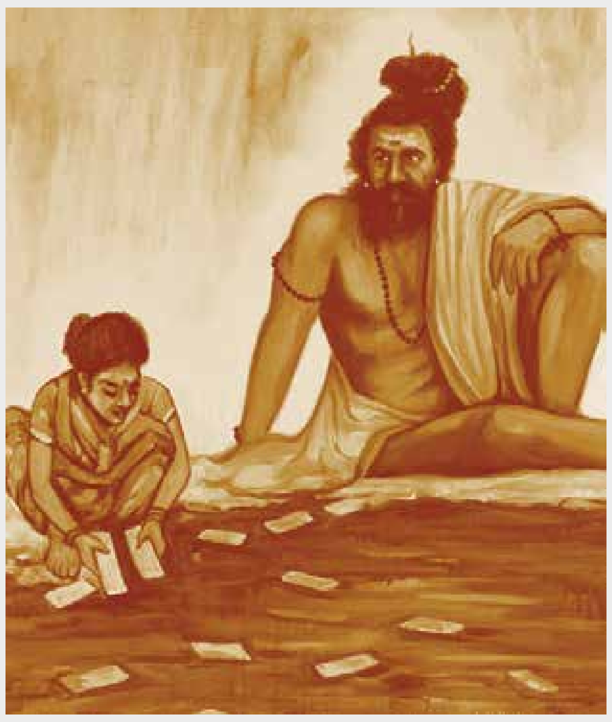

आचार्य व्याडि

(वि' मादित्यड के समकालीन)

राजा विक्रमादित्य के समय उज्जैन नगर में आचार्य व्याडि का भी निवास था। रसायन विद्या में सोना बनाने के प्रति उनका विशेष रुझान था। वे रसायन विद्या की खोज पड़ताल में इतने डूब गये कि उन्होंने अपनी सारी संपत्ति नष्ट कर डाली। अपना सब कुछ गँवा देने के बाद उन्हें इस विद्या से घोर घृणा हो गयी। एक दिन वे शोकमग्न नदी के किनारे बैठे थे उनके हाथ में औषधि ज्ञान का एक ग्रन्थ था जिसका उपयोग वह अपने शोध कार्य के लिए करते थे। निराश होकर वह उस ग्रन्थ के पृष्ठों को फाड़कर नदी के जल में फेंकने लगे। उसी नदी के किनारे व्याडि से कुछ दूरी पर प्रवाह की दिशा में एक महिला बैठी थी उसने इन पृष्ठों को बहता देखकर उनमें से कुछ को जल से बाहर निकाल लिया। व्याडि जब ग्रन्थ के सारे पृष्ठ फाड़कर नदी में फेंक चुके थे, तब वह औरत उनके पास आयी और पृष्ठ फाड़ने का कारण पूछा? व्याडि ने उत्तर दिया कि 'क्योंकि मुझे इस से लाभ नहीं हुआ। मुझे वह नहीं मिला जो मुझे मिलना चाहिए था। मेरे पास प्रचुर धन था पर इस विद्या के कारण मैं उसको गँवा चुका हूँ। सुख प्राप्ति की आशा में कठिन परिश्रम और खोज के बाद अंततः मुझे दुःख और निराशा ही मिली। इसलिए मुझे इस विद्या से ही घृणा हो गयी है।' यह सुनकर वह औरत बोली, 'उसको मत छोड़ो, जिसमें आपने अपना जीवन लगा दिया है। जो सत्य है, उस पर आपको संदेह नहीं करना चाहिए। ऋषियों का ज्ञान मिथ्या नहीं हो सकता। तुम्हारी कामना में जो बाधा है वह संभवतः किसी सूत्र विशेष को ढंग से ना समझ पाने के कारण है? मेरे पास धन है, जिसका मेरे पास कोई उपयोग नहीं है आप धन ले लें और पुनः प्रयास करें सफलता अवश्य मिलेगी।'

वास्तहव में उनसे औषधि शास्त्र का अध्ययन करते हुए एक शब्द को समझने में भूल हो गयी थी। उस शब्द का अर्थ यह था कि तेल और नर रक्त दोनों की इसके लिए आवश्यकता है। वहाँ रक्तमाल लिखा था जिसका अर्थ उन्होंने लाल अमलक समझा। अब वे विविध प्रयोग करने लगे मगर उसका कोई असर ना हुआ। किसी कार्य में एक दिन उनका सिर (खोपडी) जल गया। इसके बाद वे अपने सिर में तेल चुपड़कर रखने लगे। एक दिन वे भट्टी पर, एक औषधि को तेल में मिलाकर गर्म कर रहे थे, तभी उनका सिर (खोपड़ी) किसी नुकीली चीज से टकरा गया और सिर से रक्त बहने लगा। उनके सिर से बहती हुई रक्त की कुछ बूँदे गर्म तेल में जा गिरी। व्याडि तेल में गिरते हुए रक्त को नहीं देख पाये। कुछ देर बाद उन्होंहने उसी रक्त को अपने शरीर पर मल लिया, तेल के मलते ही वे हवा में उड़ने लगे। सम्राट विक्रमादित्य को इस घटना का पता लगा तो वह व्याडि को उड़ता हुआ देखने के लिए महल से बाहर निकल आये। व्याडि ने विक्रम से कहा तुम अपना मुँह खोलो ताकि मैं उसमें थूँक सकूँ, यह सुन विक्रम ने अपना मुँह नहीं खोला और वहाँ से दूर हट गये। व्याडि का थूँक उनके महल की देहरी पर जा गिरा। इसके गिरते ही वह देहरी सोने की बन गयी। इस पूरे प्रसंग का उल्लेख विदेशी यात्री अलबरूनी ने अपनी पुस्तक में किया है।

श्री विक्रम सं. २०७९ फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३

ता. फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	करण	घटी पल	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घ. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ मि.	सूर्य स्पष्ट प्रातः५/३० बजे का	तारीख २१ फरवरी से ७ मार्च सन् २०२३ ईस्वी तक दक्षिणायण, दक्षिण गोल, बसंत ऋतु (यहां पर सभी समय भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में दिया गया है)
२१	१	मं.	०९ ०६	शतभिषा पूर्वाभाद्रपद	०९ ०१ ३० ३९	सिद्धि	५० १३	बव	०५ ०६	७ ०४	१८ २५	मीन २५/१५	१०/०७/५४/०६	चंद्रदर्शन फूलेरा दूज-रामकृष्ण परमहंस जं. सर्वा ३०/३९ से ३१/०३ तक
०	२	मं.	३० ००	०	० ०	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	०	००००	द्वितीय तिथि क्षय
२२	३	बु.	२७ २८	उत्तराभाद्रा	२८ ५२	साध्य	४१ ५८	तैतिल	२४ ११	७ ०३	१८ २५	मीन	१०/०८/५४/३३	शाबान मास ८ मुस (A) सर्वा ०७/०३ से
२३	४	गु.	२५ ३९	रेवती	२७ ४७	शुभ	३५ ०३	वणिज	१८ ४७	७ ०३	१८ २६	मेष २७/४७	१०/०९/५४/५९	भद्रा १४/३४ से २५/३९ तक पंचक समाप्त २७/४७ बुध धनिष्ठा पर १३/१८ (A)
२४	५	शु.	२४ ३७	अश्विनी	२७ ३०	शुक्ल	२९ ४०	बव	१५ १५	७ ०२	१८ २६	मेष	१०/१०/५५/२३	मंगल मृगशिरा पर २६/३९ गुरु रेवती पर १४/३२ सर्वा २७/३० तक
२५	६	श.	२४ २५	भरणी	२८ ००	ब्रह्म	२५ ५३	कौलव	१३ ४४	७ ०१	१८ २७	मेष	१०/११/५५/४५	(C) मेला खाटू श्याम जी प्रा. बुध शतभिषा पर १६/१२ सर्वा १५/४४ तक
२६	७	र.	२५ ०१	कृतिका	२९ १८	ऐन्द्र	२३ ४४	गर	१४ १६	७ ००	१८ २७	वृषभ १०/२०	१०/१२/५६/०६	भद्रा २५/०१ से तक (B) ०६/५९ से ३०/५८ तक होली अष्टाह्निका विधान प्रा.
२७	८	चं.	२६ २२	रोहिणी	- -	वैधृति	२३ ०४	विष्टि	१६ ४४	६ ५९	१८ २८	वृषभ	१०/१३/५६/२५	भद्रा १३/४१ तक श्री दादूदयाल ज.होलाष्टक प्रा. बुध कुंभ पर १६/४५ सर्वा (B)
२८	९	मं.	२८ १८	रोहिणी	०७ १८	विष्कुंभ	२३ ३९	बालव	२० ५३	६ ५८	१८ २९	मिथुन २०/३५	१०/१४/५६/४२	विज्ञान दिवस (E) ०६/५७ से ०९/५१ तक
१	१०	बु.	३० ३९	मृगशिरा	०९ ५१	प्रीति	२५ ११	तैतिल	२६ १७	६ ५७	१८ २९	मिथुन	१०/१५/५६/५८	बुध अस्त पू. २०/२४ शुक्र रेवती पर ०९३२ मार्च मास ३ ता. ३१ प्रा. सर्वा (E)
२	११	गु.	- -	आर्द्रा	१२ ४४	आयुष्मान	२७ १६	वणिज	३२ २८	६ ५७	१८ ३०	मिथुन	१०/१६/५७/१२	भद्रा १९/५६ से सर्वा १२/४४ से
३	११	शु.	०९ १२	पुनर्वसु	१५ ४४	सौभाग्य	२९ ३४	विष्टि	०५ ४२	६ ५६	१८ ३०	कर्क ०९/००	१०/१७/५७/२४	भद्रा ०९/१२ तक आमलकी ११ व्रत सभी का रामस्नेही फूलडोल शाहपुरा मेवाड़ (C)
४	१२	श.	११ ४५	पुष्य	१८ ४२	शोभन	३१ ४५	बालव	१२ ०५	६ ५५	१८ ३१	कर्क	१०/१८/५७/३४	शनि प्रदोष व्रत सूर्य पूर्वा भा. पर ३०/२५
५	१३	र.	१४ ०८	आश्लेषा	२१ ३०	अतिगण्ड	३३ ३५	तैतिल	१८ ०५	६ ५४	१८ ३१	सिंह २१/३०	१०/१९/५७/४२	शनि उदय पश्चिम २०/३५
६	१४	चं.	१६ १६	मघा	२४ ०३	सुकर्मा	३४ ५८	वणिज	२३ २८	६ ५३	१८ ३२	सिंह	१०/२०/५७/४९	भद्रा १६/१६ से २९/१२ तक होलिका दहन प्रदोष में १८/३२ से २०/५६ तक
७	१५	मं.	१८ ०७	पूर्वाफा	२६ १९	धृति	३५ ४७	बव	२८ ०७	६ ५२	१८ ३२	सिंह	१०/२१/५७/५४	पूर्णिमा व्रत चैतन्य महाप्रभु ज. वसंतोत्सव छारंडी करिदिन

फाल्गुन शुक्ल पक्ष १५ मंगलवार

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
१०	४	१	१०	११	११	१०	०	६
२१	१६	२७	१२	१९	२३	०५	१२	१२
५७	०४	२४	५१	०२	४६	४५	३५	३५
५४	३५	००	२४	५४	५४	१८	०१	०१
६०	७३२	२५	१०७	१३	४२	०७	०३	०३
०३	२०	३०	००	४८	५७	०६	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
पूर्वाभा० १	पूर्वाफा. १	मृगशिरा २	शतभिषा २	रेवती १	रेवती ३	धनिष्ठा ४	अश्विनी ४	स्वाति २

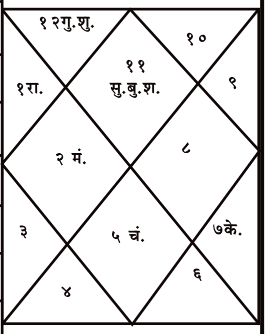

श्री विक्रम सं. २०७९ चैत्र कृष्ण पक्ष २४

ता. मार्च	तिथि	वार	समाप्ति घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति घ. मि.	करण	घटी पल	सूर्योदय घ. मि.	सूर्योस्त घ. मि.	चन्द्रराशि प्रवेश घ मि.	सूर्य स्पष्ट प्रातः५/३० बजे का	तारीख ८ मार्च से २० मार्च सन् २०२३ ईस्वी तक दक्षिणायण, दक्षिण गोल, बसंत ऋतु (यहां पर सभी समय भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में दिया गया है)
८	१	बु.	१९ ३९	उत्तराफा	२८ १७	शुल	३५ ५९	बालव	०० ०४	६ ५१	१८ ३२	कन्या ०८/४९	१०/२२/५७/५७	विश्व महिला दि. होली मेला राधाम खेड़ापा जोधपुर सर्वा २८/१७ से ३०/५० तक (A)
९	२	गु.	२० ५०	हस्त	२९ ५५	गण्ड	३५ ३४	तैतिल	०३ ३०	६ ५०	१८ ३३	कन्या	१०/२३/५७/५८	संत तुकाराम जं. (A) पिंगल संवत्स प्रारं ३०/१८ (B) जैन बं. चैत्र मास प्रा.
१०	३	शु.	२१ ३९	चित्रा	- -	वृद्धि	३४ २६	वणिज	०६ ०४	६ ४९	१८ ३३	तुला १८/३४	१०/२४/५७/५७	भद्रा ०९/१४ से २१/३९ तक बुध पूर्वा भा.पर २८/११
११	४	श.	२२ ०४	चित्रा	०७ १०	ध्रुव	३२ ३०	बव	०७ ३८	६ ४८	१८ ३४	तुला	१०/२५/५७/५४	चतुर्थी व्रत चंद्रोदय २२/०७ सर्वा ०७/१० से ३०/४७ तक
१२	५	र.	२२ ०१	स्वाति	०८ ००	व्याघात	२९ ४३	कौलव	०८ ०७	६ ४७	१८ ३४	वृश्चिक २६/१८	१०/२६/५७/५०	श्री रंगपंचमी मंगल मिथुन पर २९/०१ शुक्र अश्विनी मेष पर ०८/२७
१३	६	चं.	२१ २८	विशाखा	०८ २३	हर्षण	२५ ५७	गर	०७ २५	६ ४६	१८ ३५	वृश्चिक	१०/२७/५७/४३	भद्रा २१/२८ से एकनाथ षष्ठी सर्वा ०८/२३ से ३०/४५ तक
१४	७	मं.	२० २३	अनुराधा	०८ १६	वज्र	२१ ११	विष्टि	०५ २४	६ ४५	१८ ३५	वृश्चिक	१०/२८/५७/३५	भद्रा ०८/५५ तक सूर्य मीन पर ३०/३३ शीतला सप्तमी शनि शतभिषा पर २५/३४
१५	८	बु.	१८ ४६	ज्येष्ठा मूल	०७ ३७ ३० २८	सिद्धि	१५ २२	बालव	०२ ०५	६ ४४	१८ ३६	धनु ०७/३७	१०/२९/५७/२४	शीतलाष्टमी बासोड़ा केसरियाजी मेला मेवाड़ा ऋषभदेव जन्म दीक्षा वर्षीतप प्रा. (B)
१६	९	गु.	१६ ४०	पूर्वाषाढा	२८ ४९	व्यतीपात	०८ ३२	गर	२४ ५२	६ ४३	१८ ३६	धनु	११/००/५७/१२	भद्रा २७/२४ से बुध मीन पर १०/४७ (C) सर्वा २६/४७ से
१७	१०	शु.	१४ ०७	उत्तराषाढ़ा	२६ ४७	वरीयान परिध	० ४७ ५२ ०८	विष्टि	१८ ३३	६ ४२	१८ ३६	मकर १०/१८	११/०१/५६/५७	भद्रा १४/०७ तक दशामाता व्रत पंचक प्रा. १०/१८ बुध उतरा भा. पर २७/४१ (C)
१८	११	श.	११ १५	श्रवण	२४ २९	शिव	४२ ५९	बालव	११ २४	६ ४१	१८ ३७	मकर	११/०२/५६/४१	सूर्य उतरा भा. पर १४/२२ पाप मोचिनी ११ व्रत सभी का सर्वा २४/२९ तक
१९	१२	र.	०८ ०८	धनिष्ठा	२२ ०४	सिद्धि	३३ ३७	तैतिल	०३ ४०	६ ४०	१८ ३७	कुंभ ११/१७	११/०३/५६/२३	भद्रा २८/५६ से प्रदोष व्रत रंग तेरस वारूणी योग २२/०४ से २८/५६ तक पंचक प्रा. ११/१७
०	१३	र.	२८ ५६	०	० ०	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	०	०	त्रयोदशी तिथि क्षय (D) १७/२९ से ३०/३७ तक
२०	१४	चं.	२५ ४९	शतभिषा	१९ ४१	साध्य	२४ १६	विष्टि	२१ ४८	६ ३९	१८ ३८	कुंभ	११/०४/५६/०३	भद्रा १५/२२ तक मास शिवरात्रि सायन सूर्य मेष पर २६/५२ रवि उत्तर गोल प्रारंभ
२१	३०	मं.	२२ ५७	पूर्वाभाद्र	१७ २९	शुभ	१५ १४	चतुष्पद	१४ २२	६ ३८	१८ ३८	मीन १२/०३	११/०५/५५/४०	देवपितृकार्ये अमावस्या भौमवती अमावस्या चांद्र संवत्सर २०७९ सम्पूर्ण सर्वा (D)

चैत्र कृष्ण पक्ष ३० मंगलवार

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
११	१०	२	११	११	०	१०	०	६
०५	२६	०३	०१६	२२	१०	०७	११	११
५५	०२	४०	२७	१८	४२	२१	५०	५०
४०	३८	४२	००	४८	२४	४८	३०	३०
५९	८७५	२८	१२०	१४	७२	०६	०३	०३
३६	२०	२४	३०	१२	००	४२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उत्तराभा. १	पूर्वाभा. २	मृगशिरा २	उत्तराभा २	रेवती २	अश्विनी ३	शतभिषा १	अश्विनी ४	स्वाति २

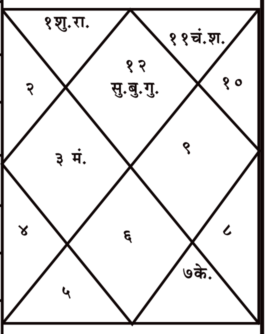

निर्मथ्य तद्वेदाम्बुधिं भरद्वाजो महामुनिः ।
नवनीतं समुद्धृत्य यंत्रसर्वस्वरूपकम्।।
प्रायच्छत् सर्वकोकानामीपिस्तार्थफलप्रदम्।।
नानाविमानवैतित्र्यरचनाक्रमबोधकम्।
अष्टाध्यायैर्विभजितंशताधिकरणैयुर्तम्।।
सूत्रैः पञ्चशतैर्युक्तं व्योमयानप्रधानकम्।
वैमानिकाधिकरणमुक्तं भगवता स्वयम्।।

–महर्षि भारद्वाज

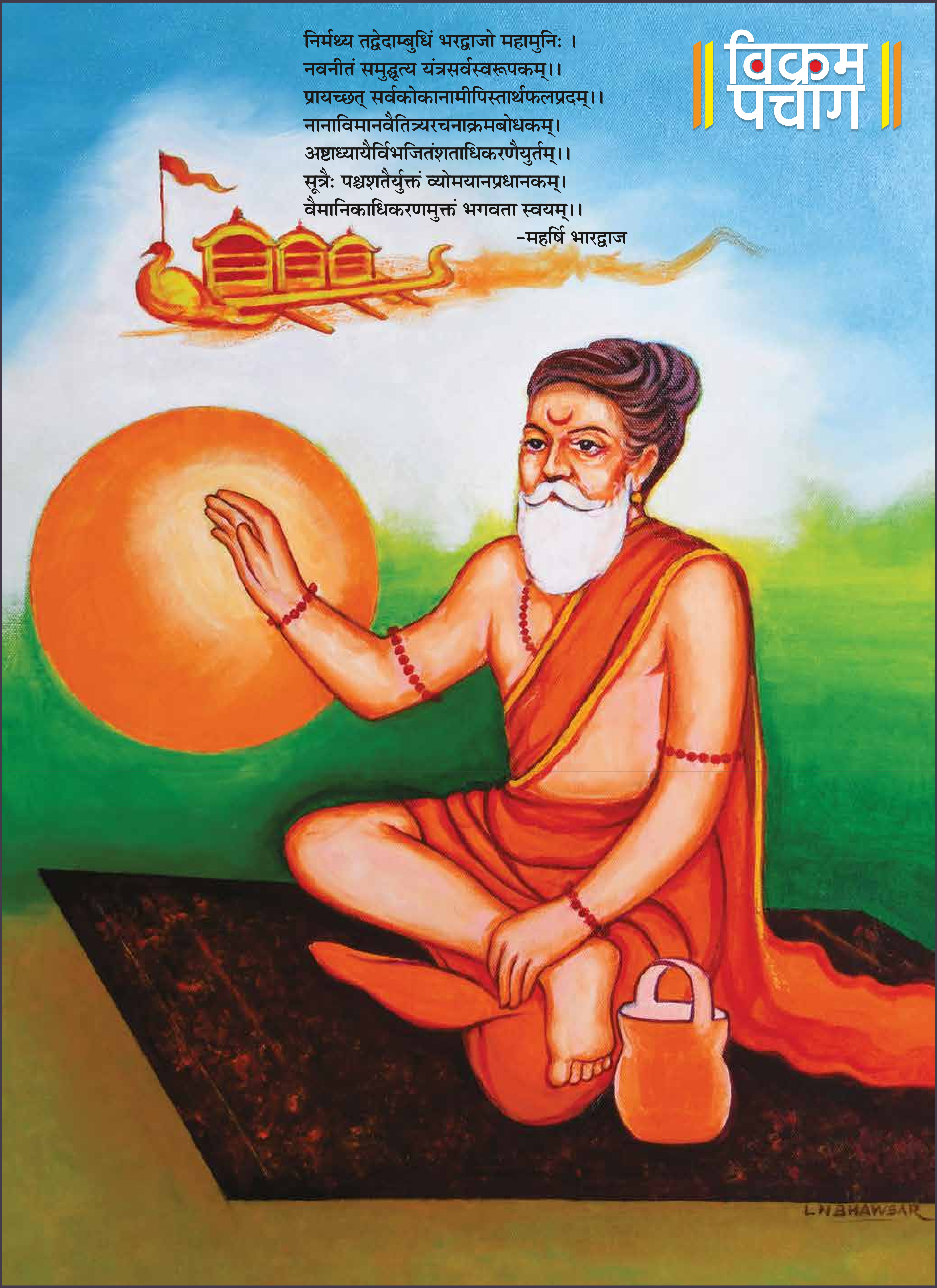

महर्षि भारद्वाज

(9300 वि.पू.)

पाणिनि के पूर्ववर्ती वैयाकरण व अनेक शास्त्रों के रचनाकार महर्षि भारद्वाज। वैदिक ग्रन्थों एवं प्राचीन साहित्य में वायुवेग से उड़ने वाले अनेक विमानों का उल्लेख मिलता है। विमान निर्माण और इसके प्रयोग को लेकर रामायणकालीन महान भारतीय आचार्य महर्षि भारद्वाज ने विमानिका शास्त्र नामक ग्रन्थ रचा था। इसमें कुल 8 अध्याय और 3 हजार श्लोक हैं। 1875 ईस्वीं में दक्षिण भारत के एक देवालय में इस ग्रंथ की एक प्रति प्राप्त हुई थी। इसमें 97 अन्य विमानाचार्यों तथा 20 ऐसी कृतियों का वर्णन है जो विमानों के आकार-प्रकार के विषय में विस्तृत जानकारी देते हैं। ग्रंथ में विभिन्न प्रकार के विमान बनाने की विधियाँ है। विमान और उसके कलपुर्जे तथा ईंधन के प्रयोग तथा निर्माण की विधियों का भी सचित्र वर्णन किया गया है। उन्होंने लिखा है- 'विमान के रहस्यों को जानने वाला ही उसे चलाने का अधिकारी है।' इसमें विमान चलाने के बत्तीस रहस्य बताये गये हैं। उनका भली-भाँति ज्ञान रखने वाला ही उसे चलाने का अधिकारी है। विमान बनाना, उसे जमीन से आकाश में ले जाना, खड़ा करना, आगे बढ़ाना टेढ़ी-मेढ़ी गति से चलाना या चक्कर लगाना और विमान के वेग को कम अथवा अधिक करना, इस सबको जाने बिना यान चलाना असम्भव है। महर्षि भारद्वाज ने 'विमान' को इस तरह परिभाषित किया है। वेग-संयत् विमानों को अण्डजानाम् पक्षियों के समान वेग होने के कारण 'विमान' कहते हैं। ऋग्वेद में लगभग 200 बार विमानों के बारे में उल्लेख है। उनमें तिमंजिला, त्रिभुज आकार के तथा तिपहिये विमानों का उल्लेख है जिन्हें अश्विनों (वैज्ञानिकों) ने बनाया था। विमान को संचालित करने के लिए महर्षि भारद्वाज ने इसके लिए तीन प्रकार के ऊर्जा स्रोतों का उल्लेख किया है जो विभिन्न दुर्लभ वनस्पतियों का तेल, पारे की भाप और सौर ऊर्जा के प्रयोग का उल्लेख किया है। युगों के अनुरूप विमानों के प्रकारों की संख्या का उल्लेख भी है। सतयुग में मंत्रिका विमानों के 26 प्रकार थे, त्रेता में तंत्रिका विमानों के 56 प्रकार थे तथा द्वापर में कृतिका (सम्मिलित) विमानों के भी 26 प्रकार थे। रामायण, महाभारत, चारों वेद, युक्तिकरालपातु (12वीं सदी ईस्वी) मायाम्तम्, शतपत् ब्राह्मण, मार्कण्डेय पुराण, विष्णु पुराण, भागवतपुराण, हरिवाम्सा, उत्तमचरित्र, हर्षचरित्र, तमिल पाठ जीविकाचिंतामणि में तथा और भी कई वैदिक ग्रंथों में भी विमानों के विषय में विस्तार से उल्लेख किया गया है। महर्षि भारद्वाज ने यंत्र सर्वस्व नामक ग्रंथ लिखा था, जिसमें अनेक प्रकार के यंत्र को बनाने और चलाने की विधि का वर्णन किया गया है। महर्षि भारद्वाज का एक ओर ग्रंथ अंशुबोधनी भी मिलता है जिसमें ब्रह्माण्ड विज्ञान (कास्मोलॉजी) का वर्णन है। महर्षि भारद्वाज ने भविष्य की उड़ान प्रौद्योगिकी का अनुमान किया है। महर्षि भारद्वाज व्याकरण, आयुर्वेद संहिता, धनुर्वेद, राजनीतिशास्त्र, यंत्रसर्वस्व, अर्थशास्त्र, पुराण, शिक्षा आदि पर अनेक ग्रंथों के रचयिता हैं। वायुपुराण के अनुसार उन्होंने एक पुस्तक आयुर्वेद संहिता भी लिखी थी।

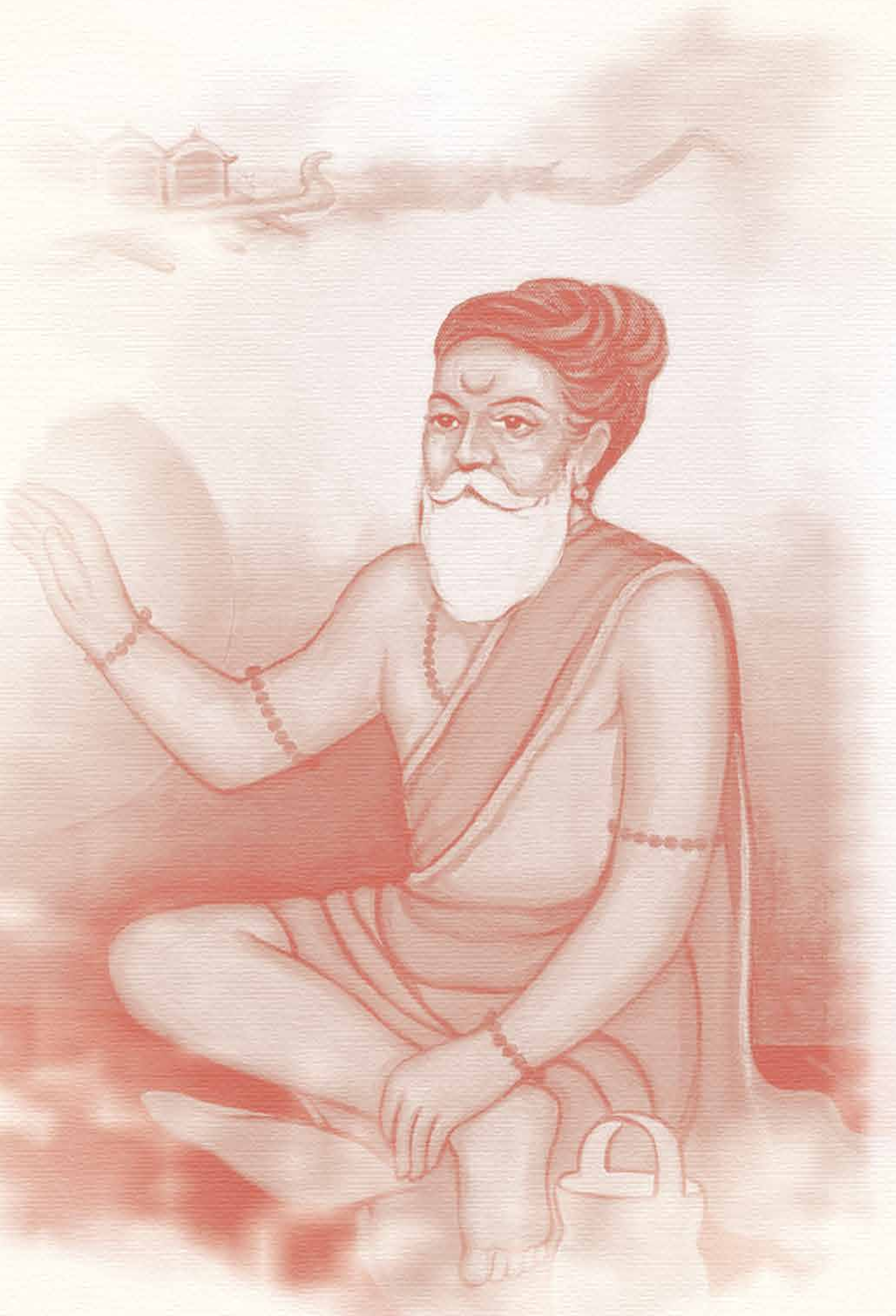

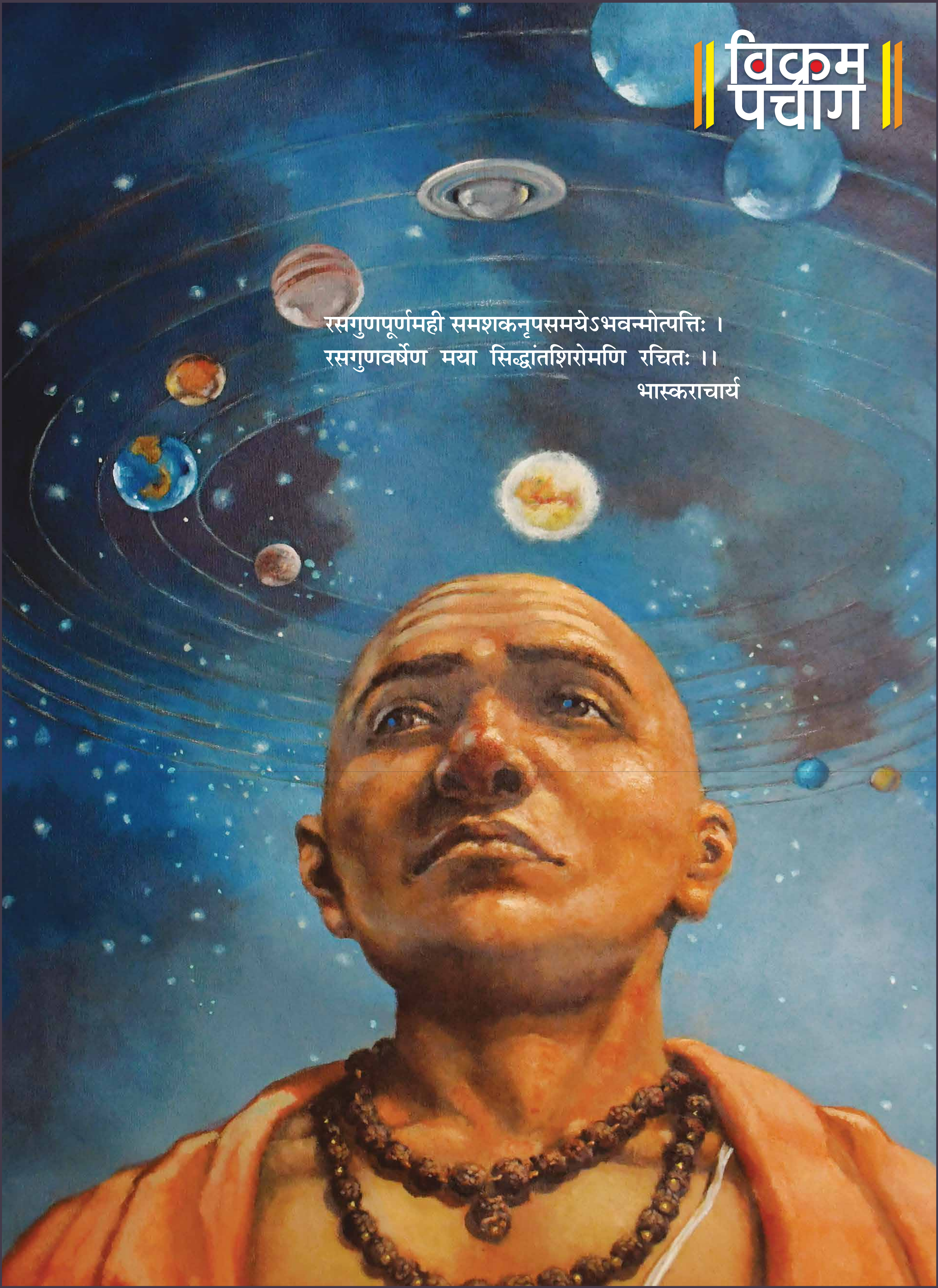
विक्रम पंचांग
रसगुणपूर्णमही समशकनृपसमयेऽभवन्मोत्पत्तिः ।
रसगुणवर्षेण मया सिद्धांतशिरोमणि रचितः ।।
भास्कराचार्य

भास्कराचार्य

(1171 वि.सं., 1114 ई.)

कर्नाटक के देशष्ठ ऋग्वेदी ब्राह्मण परिवार में 1114 ई. में जन्मे भास्कराचार्य ने अपने पिता महेश्वर से गणित, खगोल विज्ञान तथा ज्योतिष की शिक्षा प्राप्त की थी। शुरुआती शिक्षा ग्रहण करने के बाद वह इसी कार्य में अग्रसर रहे। अपने पिता के नक्शेकदम पर चलते हुए वह भी एक प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलविद् बन गये और उज्जैन में खगोलीय वेधशाला के प्रमुख के रूप में विख्यात भारतीय गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त का वंशानुगत उत्तराधिकारी माना गया। उज्जैन की यह वेधशाला (जंतर-मंतर) उस काल में भारत की सबसे बड़ी वेधशाला थी। भास्कराचार्य ने अपनी उम्र के 36 वें वर्ष में सिद्धांत शिरोमणि नामक गणितीय ग्रन्थ की रचना की। इसमें उन्होंने गणित की बहुत सारी शाखाओं का आधारभूत ज्ञान व सूत्रों का प्रतिपादन किया है। इसके बाद उन्होंने करण कुतूहल लिखा। भास्कराचार्य का प्रमुख कार्य ग्रंथ सिद्धान्त शिरोमणि था, जिसे आगे चार भागों में विभाजित किया गया था, जिनमें से प्रत्येक अंकगणित, बीजगणित, कलन, त्रिकोणमिति और खगोल विज्ञान पर विविध विषयों से सम्बन्धित था। इन्होंने गणित तथा ज्योतिषशास्त्र पर सिद्धान्तर शिरोमणि, करण कुतूहल, वासनाकाष्यप, बीजगणित, सर्वतो भद्र ग्रंथों की भी रचना की है। उन्हें कैलकुलस के क्षेत्र में अग्रणी माना जाता है क्योंकि यह संभव है कि वे अंतर गुणांक और अंतर कैलकुलस की कल्पना करने वाले पहले व्यक्ति थे। भास्कराचार्य ने संभवतः अपनी पुत्री लीलावती के नाम पर ही गणित की एक पुस्तक का नाम लीलावती रखा था जिसमें उन्होंने गणित की शाखा अंकगणित को समझाया है। मुख्यतः इसमें परिभाषाएँ, अंक गणितीय सूत्र, ब्याज गणना, ज्यामिति आरोहण, तलीय ज्यामिति, ठोस ज्यामिति, अनिश्चित समीकरणों के हल निकालना, व कई तरह के सिद्धांत इत्यादि को सम्मिलित किया गया है। उन्होंने कई खगोलीय मात्राओं को सटीक रूप से परिभाषित किया था। जिसमें वर्ष की लंबाई भी शामिल थी। एक उत्कृष्ट गणितज्ञ होने के साथ ही उन्होंने अंतर गणनाओं के सिद्धांतों की महत्वपूर्ण खोज की। यह माना जाता है कि भास्कराचार्य अंतर गुणांक और अंतर गणना की कल्पना करने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने दशमलव संख्या प्रणाली के पूर्ण और व्यवस्थित उपयोग के साथ पहला काम लिखा और अन्य गणितीय तकनीकों और ग्रहों की स्थिति, संयोजन, ग्रहण, ब्रह्मांड विज्ञान, और भूगोल के अपने खगोलीय टिप्पणियों पर भी बड़े पैमाने पर लिखा। इसके अलावा, उन्होंने अपने पूर्ववर्ती ब्रह्मगुप्त के काम में कई अंतराल भी भरे। गणित और खगोल विज्ञान में उनके अमूल्य योगदान की मान्यता में, उन्हें मध्यकालीन भारत का सबसे महान गणितज्ञ कहा गया है। भास्कराचार्य ने सातवीं शताब्दी के ब्रह्मगुप्त के खगोल विज्ञान मॉडल को प्रयोग में लेते हुए, सूर्य के चारों ओर पृथ्वी के एक चक्कर लगाने में लगे समय की गणना की। जिसके अनुसार पृथ्वी को एक चक्कर लगाने में 365.2588 दिन लगते हैं। वर्तमान वैज्ञानिकों के अनुसार यह समय 365.2563 दिन है। जिससे यह ज्ञात होता है कि उनकी गणना में सिर्फ 3.5 मिनट का ही अंतर है। जो इस बात को दर्शाता है कि उनका गणितीय का ज्ञान बहुत जबरदस्त था। खगोल विज्ञान में उन्होंने सूर्य उदय समीकरण, चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण, चंद्र वर्धमान, ग्रहों का तारों के साथ संयोजन, ग्रहों का ग्रहों के साथ संयोजन, सूर्य तथा चंद्रमा के पथ इत्यादि की भी गणना की।

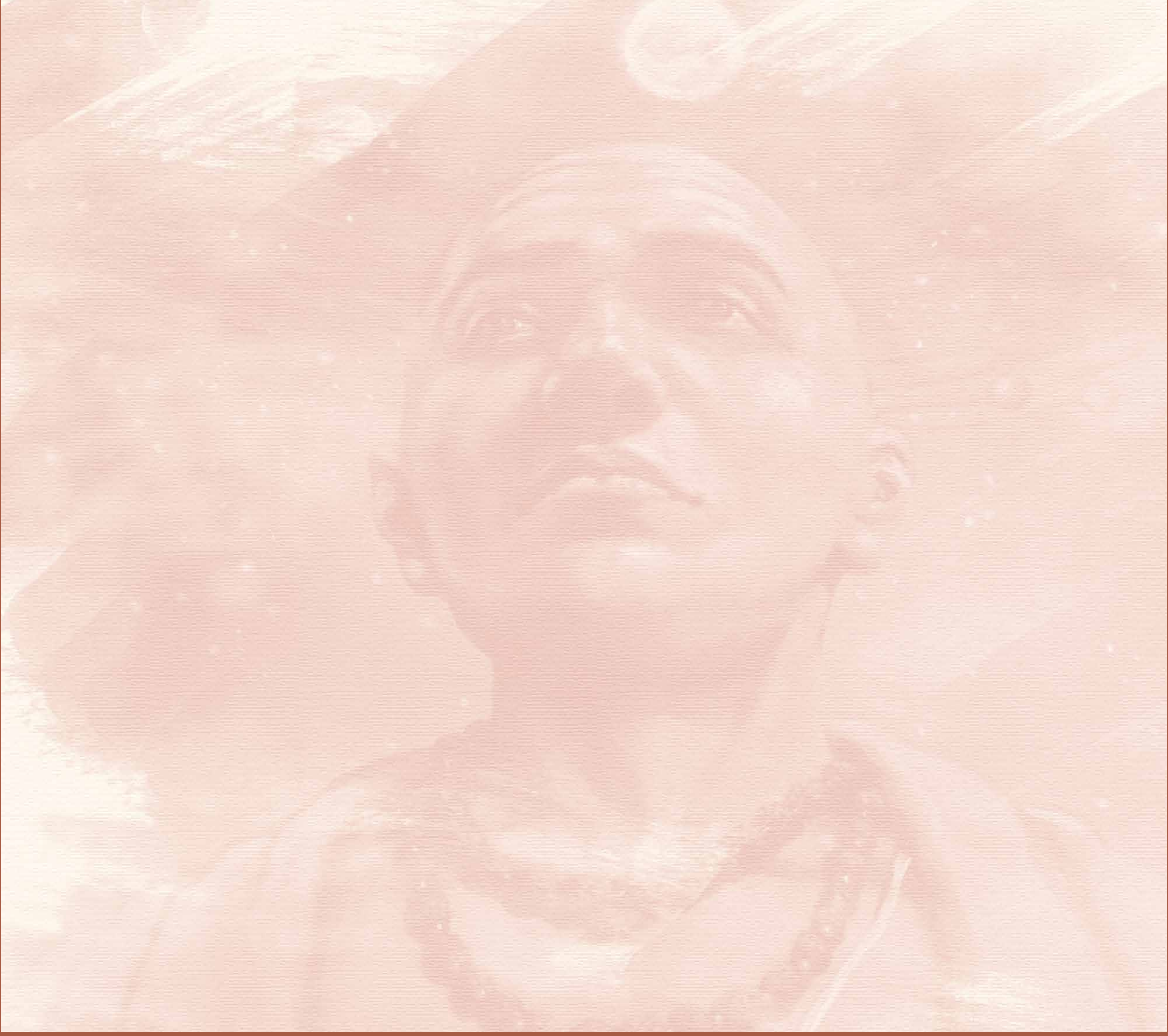

विक्रम पंचांग
यावज्जीवेत सुखं जीवेद ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत,
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ।
-चार्वाक

चार्वाक

चार्वाक दर्शन एक प्राचीन भारतीय भौतिकवादी नास्तिक दर्शन है। यह मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है तथा पारलौकिक सत्ताओं को यह सिद्धांत स्वीकार नहीं करता है। यह दर्शन वेदबाह्य भी कहा जाता है।

चार्वाक, बृहस्पति सूत्र (600 ईसा पूर्व) की शिक्षाओं को ऐतिहासिक माध्यमिक साहित्य से संकलित किया गया है। जैसे कि शास्त्र, सूत्र, और भारतीय महाकाव्य कविता में और गौतम बुद्ध के संवाद और जैन साहित्य से। चार्वाक प्राचीन भारत के एक अनीश्वरवादी और नास्तिक तार्किक थे। ये नास्तिक मत के प्रवर्तक बृहस्पति के शिष्य माने जाते हैं। बृहस्पति को चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र ग्रन्थ में अर्थशास्त्र का एक प्रधान आचार्य माना है। चार्वाक का नाम सुनते ही आपको 'यदा जीवेत सुखं जीवेत, ऋणं कृत्वा, घृतं पिबेत्' (जब तक जीओ सुख से जीओ, उधार लो और घी पीयो।) की याद आयेगी। प्रचलित धारणा यही है कि चार्वाक शब्द की उत्पत्ति 'चारु'+'वाक्' (मीठी बोली बोलने वाले) से हुई है। चार्वाक सिद्धांतों के लिए बौद्ध पिटकों में 'लोकायत' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका मतलब 'दर्शन की वह प्रणाली है जो इस लोक में विश्वास करती है और स्वर्ग, नरक अथवा मुक्ति की अवधारणा में विश्वास नहीं रखती'। चार्वाक ईश्वर और परलोक नहीं मानते। परलोक न मानने के कारण ही इनके दर्शन को लोकायत भी कहते हैं। सर्वदर्शनसंग्रह में चार्वाक के मत से सुख ही इस जीवन का प्रधान लक्ष्य है सुखवाद। चार्वाक केवल प्रत्यक्षवादिता का समर्थन करते हैं, वे अनुमान आदि प्रमाणों को नहीं मानते हैं। उनके मत से पृथ्वी जल तेज और वायु ये चार ही तत्व हैं, जिनसे सब कुछ बना है। उसके मत में आकाश तत्व की स्थिति नहीं है, इन्हीं चारों तत्वों के मेल से यह देह बनी है, इनके विशेष प्रकार के संयोजन मात्र से देह में चैतन्य उत्पन्न हो जाता है, जिसे लोग आत्मा कहते हैं। शरीर जब विनष्ट हो जाता है, तो चैतन्य भी खत्म हो जाता है। देहात्मवाद। इस प्रकार से जीव इन भूतों से उत्पन्न होकर इन्हीं भूतों के नष्ट होते ही समाप्त हो जाता है। आगे पीछे इसका कोई महत्व नहीं है। चार्वाक के अनुसार चार महाभूतों से अतिरिक्त आत्मा नामक कोई अन्य पदार्थ नहीं है। चैतन्य आत्मा का गुण है, चूँकि आत्मा नामक कोई वस्तु है ही नहीं अतः चैतन्य शरीर का ही गुण या धर्म सिद्ध होता है। अर्थात् यह शरीर ही आत्मा है।

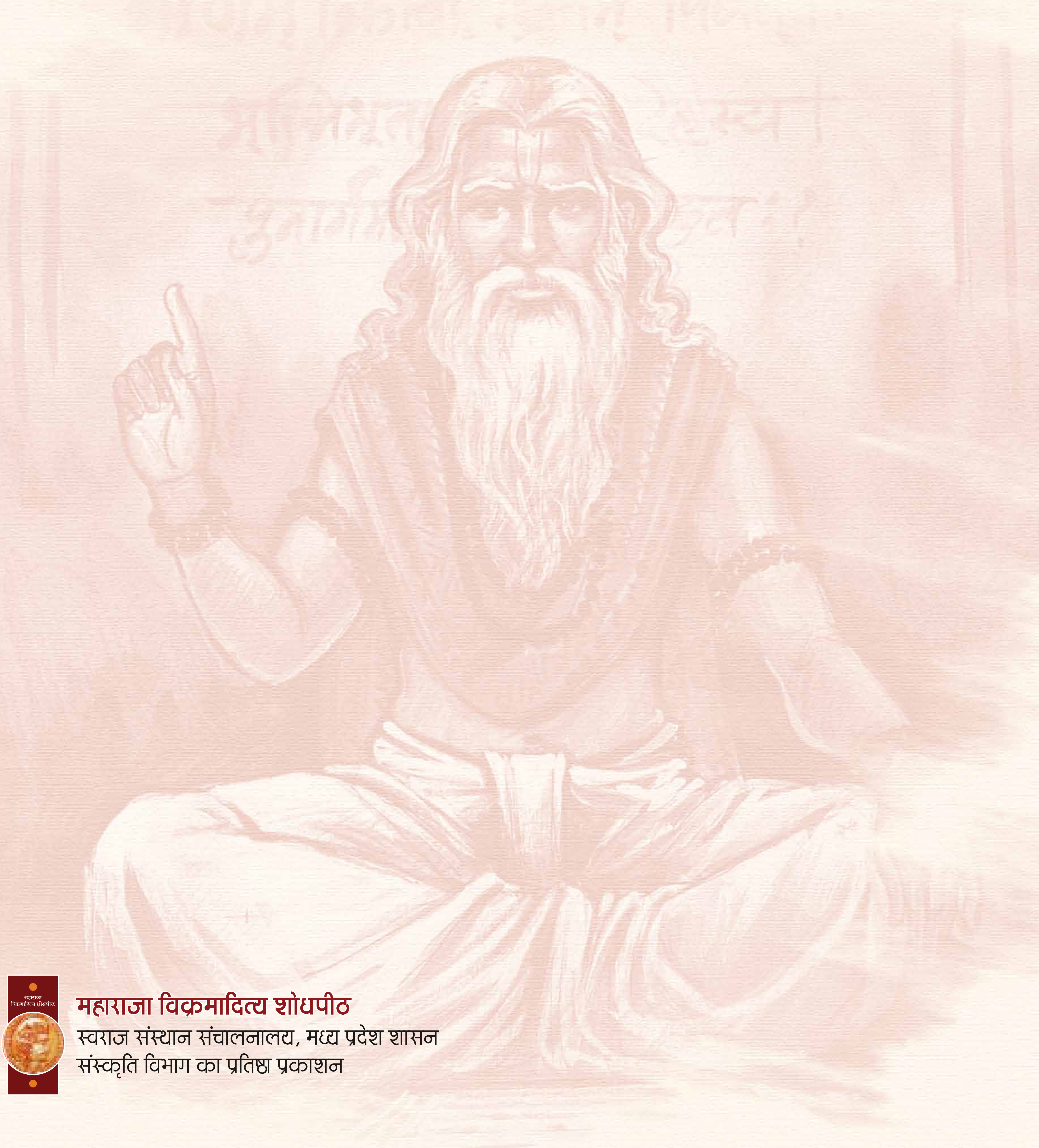

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ
स्वराज संस्थान संचालनालय, मध्य प्रदेश शासन
संस्कृति विभाग का प्रतिष्ठा प्रकाशन